"यह सच है कि मैं अपने प्रेमियों को मुक्त करने के लिये, प्रतिदिन के जीवन की परिस्थितियों का इस्तेमाल करता हूँ, लेकिन मैं उनका इस्तेमाल इस ढँग से करता हूँ जो बुद्धि की समझ के परे है। इसलिये मैं अपनी व्यक्तिगत अथवा विश्वव्यापी योजनाओं की रूपरेखायें तुम्हें बताऊँ, मुझसे तुम्हें ऐसी आशा नहीं करना चाहिये। मुझमें विश्वास रखो, अटल विश्वास रखो। मैं तुम्हारे साथ हमेशा हूँ और तुम्हें, मेरी अपनी गाड़ी, मेरे अपने पुत्र की तरह रास्ता दिखाता हूँ।

"वह सबकुछ, जो तुम करते हो अथवा नहीं करते हो, हमेशा मेरी मर्ज़ी से होता है। तुम मेरे दैवी आर्केस्ट्रा (वाद्ययंत्र बजाने वालों का एक समूह) के एक यन्त्र हो, एक ऐसा यंत्र, जिसकी मुझे ज़रूरत है लेकिन जिसे सुधारना, पूर्ण बनाना ज़रूरी है। मैं तुम्हें कभी भी धोखा नहीं दूँगा, न ही तुम मुझे निराश करोगे। हमेशा की तरह तुम्हें साहसी बने रहना है।"

अवतार मेहेर बाबा

(संदर्भ–लॉर्ड मेहेर, भाग ६, पृष्ठ २१२०, दी टर्निंग ऑफ दी की, पृष्ठ ३१५, लार्ड मेहेर, भाग ६, ७, पृष्ठ २१४१)

रुस्तम फ़लाहाटी ने, जो व्यवसाय से समुद्रीय अभियन्ता (**Marine Engineer**) थे, अवतार मेहेरबाबा की मंडली के साथ रहने और उनके साथ काम करने का अवसर मिलने के कारण, अपनी नौकरी छोड़ दी। वह उनके साथ १९८९ से २००० तक रहे।

इस पुस्तक में लेखक ने अपने इस अनुभव का वर्णन किया है कि उन्होंने मंडली के संदेशों का अपने जीवन में किस प्रकार प्रयोग किया और इससे उन्हें बाबा की याद को अपने दैनिक जीवन का एक सम्पूर्ण और महत्वपूर्ण हिस्सा बनाने में किस प्रकार सहायता मिली।

असली ख़ज़ाना – II

रुस्तम फ़लाहाटी कृत अंग्रेज़ी पुस्तक
"The Real Treasure-II"
का अनुवाद

मेहेराबाद में रहकर काम करने वाले (Resident) एक बाबा प्रेमी का अवतार मेहेरबाबा की मंडली के साथ बिताया गया जीवन



अनुवादः

डा. (श्रीमती) मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ

अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन

असली खज़ाना–II

रुस्तम फ़लाहाटी कृत अंग्रेज़ी पुस्तक

“The Real Treasure-II”
का अनुवाद

मेहेराबाद में रहकर काम करने वाले
(Resident) एक बाबा प्रेमी का अवतार
मेहेरबाबा की मंडली के साथ बिताया गया जीवन

अनुवाद
डा. (श्रीमती) मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ
एम.एससी. पीएच.डी.

सितम्बर–२००८

प्रकाशक :
अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन
१६८–ए, बिशप रॉकी स्ट्रीट,
फ़ैजाबाद रोड, लखनऊ
फ़ोन : ०५२२–२३२७४७७
०५२२–२३५०२१४, ०११–४६०७५६२१
मोबाइल : ०६८७१६०८६१५, ६४१५०८०२१७

मुद्रक
शिवम् आर्ट्स, २११ पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ
फोन : ०५२२–२७८२३४८, २७८२१७२

समर्पण

मैं इस पुस्तक को प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की मंडली को समर्पित करता हूँ जिसे मैं विश्व का आठवाँ आश्चर्य मानता हूँ। केवल अपना यह जीवन ही नहीं बल्कि मैं अपने सारे जन्मों को उनके चरणों की सेवा में सहर्ष अर्पित कर दूँगा।

fo"k; lph

	हृदय के उद्गार	i
१.	आभार	१
२.	भूमिका	२
३.	बाबा अच्छी तरह जानते हैं	१८
४.	यथार्थ शूरवीर	१६
५.	दैवी मर्ज़ी और स्वतंत्र मर्ज़ी	२१
६.	आध्यात्मिक स्वास्थ्य	२३
७.	उनका होना	२५
८.	यह तुम्हें ईश्वर तक ले जायेगा	२७
६.	धार्मिक संस्कार और शास्त्रविधियाँ	२८
१०.	बाबा को चाहने का साहस करना	३१
११.	अपनी कमज़ोरियों में बाबा को आमंत्रित करो	३२
१२.	छोटी–छोटी बातों पर ध्यान न दो	३४
१३.	लक्ष्य को मत भूलो	३५
१४.	मिथ्या की शक्ति	३७
१५.	कोई आसक्ति मत रखो	४१
१६.	छोटे अवतरण	४६
१७.	शुद्ध प्रेम	४८
१८.	प्रयत्न करो	५०
१६.	बंदर जैसा मन	५२
२०.	वैसे हृदय	५५
२१.	हृदय विकसित होंगे	५६

२२.	सच्ची नम्रता	५८
२३.	बाबा की इच्छा	६१
२४.	सही और ग़लत के परे जाओ	६२
२५.	खून के आँसू	६४
२६.	सिर्फ़ उनकी आज्ञा का पालन करो	६६
२७.	मिथ्या के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र हो जाओ	६८
२८.	दैवी उन्मत्तता	७०
२९.	जब बाबा बोलते हैं	७२
३०.	प्रार्थना करने का ढंग	७५
३१.	तड़प पैदा करो	७७
३२.	उनके नाम की शक्ति	८१
३३.	उसका नाम रूपान्तरित कर देता है	८३
३४.	उपसंहार	८५

• • •

हृदय के उद्गार

मैं सर्वप्रथम रुस्तम फ़लाहाटी की आभारी हूँ जिन्होंने अपनी पुस्तक “The Real Treasure-II” के अनुवाद के लिये मुझे अनुमति दी। मैं अपने प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे मेरे ख़राब स्वास्थ्य के बावज़ूद, इस अनुवाद को करने की शक्ति प्रदान की और मैंने ऐसा अनुभव किया कि यह अनुवाद मेरे प्रियतम मेहेरबाबा ने ही किया है।

मैं अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन की आभारी हूँ जिसने इस पुस्तक के प्रकाशन को संभव किया। आशा है यह पुस्तक हमारे दैनिक जीवन की समस्याओं का आध्यात्मिक रूप से समाधान करने में, पाठकों का मार्गदर्शन करेगी।

लखनऊ — *मेहेर ज्योति*
1 *सितम्बर,* 2008 — *डा. (श्रीमती) मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ*
“जिज्ञासा”, बी-2448, *इन्दिरा नगर*
लखनऊ-226016

vkHkkj

मैं प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की मंडली के प्रति, इस पुस्तक को पूरा करने में मेरी निरंतर सहायता करने और प्रियतम बाबा पर अपना ध्यान केन्द्रित करने में मेरी सहायता करने के लिये, कृतज्ञ हूँ। बाबा के लिये किये गये मेरे काम में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने में मेरी सहायता करने और मेरा मार्गदर्शन करने के लिये, मैं चेयरमैन भाऊ कलचुरी को विशेष रूप से हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मैं अपनी पत्नी मेहेर को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ जिसने इस पुस्तक को लिखने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्योंकि मैं अपने पीठ के दर्द के कारण बैठने और लिखने में भी असमर्थ था, इसलिये मैं इन कहानियों को बोलता था जिन्हें वह लिखती जाती थी। मैं स्टीव क्लाइन का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को वर्तमान रूप और आकार देने में, अपनी इच्छा से, अपना समय और सहायता दी। मैं अपने मित्र, समीर दिलजन, का भी आभारी हूँ जिन्होंने "असली खज़ाना" की अगली कड़ी के रूप में इस पुस्तक को लिखने के लिये मुझे केवल उत्साहित ही नहीं किया बल्कि मेरे गिरते हुये स्वास्थ्य के दौरान, अपनी प्रेमपूर्ण बातों की सहायता से (फ़ोन द्वारा) मेरा हौसला और आत्मविश्वास भी बढ़ाया। मैं कमप्यूटर का काम और ग़ल्तियों को सुधारने में मदद करने के लिये, सैम पटेल, साइरस और सौम्या खम्बाटा का भी आभारी हूँ। इस पुस्तक के प्रकाशन और कमप्यूटर के कार्य के लिये मैं जी. बर्नार्ड रॉड्रिगो को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ। मैं क्रैग रग को उसकी निरंतर सहायता और बाबा के प्रेम में अपने सभी भाइयों और बहनों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मेरी प्रेमपूर्ण सहायता की।

हर एक व्यक्ति को अपना हार्दिक धन्यवाद देने के बाद, मैं अपना हृदय उस एक, हमारे प्रियतम अवतार मेहेरबाबा को अर्पित करता हूँ जो सबमें मौज़ूद हैं। मेरा हृदय और आत्मा, प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की, जो एकमात्र यथार्थ हैं और जो उन तक पहुँचने के मेरे मार्ग में सहायता करने के लिये, मेरे जीवन में विभिन्न रूपों में प्रकट हुये, सनातन काल से कृतज्ञ और ऋणी हैं।

प्रकार सहायता की ? मैंने जो कुछ सीखा है क्या मैं वास्तव में उसका अभ्यास करता हूँ ? अगर मैं अभ्यास करता हूँ तो क्या इससे लाभ होता है ? इसने मेरे जीवन को किस तरह से बदला है ? आदि, आदि।

मैं अब उस कार्य को प्रारंभ करता हूँ जो मुझे मेरे मित्रों ने सौंपा है लेकिन इसमें मुझे बहुत कष्ट हो रहा है। अपने अथवा अपने अनुभव के बारे में बात करने की अपेक्षा मैं विभिन्न विषयों पर मंडली के द्वारा कही गई बातों के बारे में बताना अधिक पसंद करूँगा। मैं ऐसा अनुभव नहीं करता कि दूसरों को देने के लिये मेरे पास कोई ऊँचा ज्ञान है। इसके विपरीत, मैं शुरू में ही बता देना चाहता हूँ कि हम सब एक ही नाव में हैं। अज्ञान की नाव, जिसके कप्तान मेहेरबाबा हैं और वह प्रकाश की ओर इस नाव को खेकर ले जा रहे हैं। मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ, वह सत्य नहीं है बल्कि केवल मेरे द्वारा समझा गया ज्ञान है। अगर किसी पाठक को इससे सहायता मिलती है, तो ठीक है।

आपको अपना अनुभव बताने के लिये मुझे कुछ बीते समय में जाना पड़ेगा। मंडली के साथ रहने के अपने सभी कष्टों, परीक्षाओं और कठिनाइयों के बावजूद १९८९–२००० के बीच का समय अभी भी आनंदपूर्ण था। मंडली द्वारा मेरे अहं पर की गई चोट अब मुझे हथौड़े की चोट की तरह अनुभव नहीं होती थी क्योंकि मैं यह समझ गया था कि मंडली जन क्या और क्यों कर रहे थे। जब मंडलीजन किसी काम के लिए मुझे डाँटते थे जो मैंने नहीं किया था, मैं अक्सर हँसने लगता था। कई बार, मेरे ऊपर किये गये दोषारोपण को सुने बिना ही, मैं उस परिस्थिति का सारा आरोप अपने ऊपर लेकर, उनसे कहता था, ''मैं हमेशा ग़लत था'' चाहे विषय कोई भी हो।

एक दिन मैंने भाऊजी से कहा, ''मंडली से सीखा गया सबसे बड़ा सबक़ यह है कि मैं (अहं, ego) हमेशा ग़लत हूँ। अपने आपको सही सिद्ध करने में किसी भी व्यक्ति का बहुत अधिक समय और ऊर्जा बरबाद हो जाती है। अगर कोई व्यक्ति यह अनुभव करता है कि वह सही है तो उसकी बहस का कोई अन्त नहीं होता। अपने आपको ग़लत मान लेने से

Hkfedk

असली खज़ाना के प्रकाशन के बाद, मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कुछ लोग सोचते थे कि इसमें मैंने मण्डली की आलोचना की है। मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं थी। इसके विपरीत, मैंने इसे जैसा का तैसा यानी कि यथार्थ रूप में, इसलिये लिखा क्योंकि मैं बाबा के निकट आने में मंडली ने मेरी जो मदद की उसके लिये मैं अपने आपको उनका बहुत अधिक ऋणी महसूस करता था। जिस समय मुझे उनकी सहायता मिली, मैं हमेशा इससे भ्रमित, यहाँ तक कि निराश भी हो जाता था और मैंने पूरी ईमानदारी से इसका (मदद का) हूबहू उसी ढँग से शब्दों में वर्णन किया जिस तरह इसने मुझे उस समय प्रभावित किया। लेकिन अगर कोई व्यक्ति इस पुस्तक को पढ़ने के बाद यह निष्कर्ष निकालता है कि मैं मंडली की आलोचना कर रहा हूँ तो उसने मेरे आशय को समझने में बहुत बड़ी भूल की है।

इसे समझाने का सबसे आसान तरीका यह है कि मंडली को इस बात की चिन्ता नहीं थी कि वे जो कर रहे थे, मैं उसे समझता था या नहीं, उन्हें अपने सीमित, अहं की सीमाओं को जीतने और सामना करने में मेरी सहायता करने की चिन्ता थी। इसे करने के लिये वे कुछ ऐसे तरीकों का इस्तेमाल करते थे जिन्हें मन आसानी से स्वीकार नहीं करता था। इस समय मुझे अपने गुरु के संबंध में कहा गया, सद्‌गुरु जफ़र का यह कथन याद आता है, ''मैं यहाँ सत्य की खोज में आया था और मैंने यहाँ सम्पूर्ण रूप से पागलपन पाया, लेकिन अगर मैं किसी और जगह गया होता तो मुझे यह (सत्य) नहीं मिला होता।''

मैं मंडली के प्रति उनके पागलपन के लिये सदैव आभारी रहूँगा जो उन्होंने मेरे प्रति दिखाया।

''असली ख़ज़ाना'' पढ़ने वालों की दूसरी प्रतिक्रिया मेरे मित्रों की यह प्रार्थना थी कि मैं मंडली के साथ रहने से मुझे प्राप्त होने वाली अंतर्दृष्टि (insight) के बारे में कुछ लिखूँ। उनके साथ रहने के अनुभव ने मेरी किस

सभी बहस का अन्त हो जाता है और इससे समय और ऊर्जा की बचत होती है।''

जैसे–जैसे समय बीतता गया, मैंने पाया कि भाऊजी अब मुझ पर शब्दों के हथौड़े नहीं चलाते थे। किसी समय मैं पागलपन और शब्दों के हथौड़ों की वास्तव में कमी महसूस करता था। मैं भाऊजी से मज़ाक करते हुए पूछता था, ''भाऊजी, क्या आपकी तबीयत ठीक है ?'' भाऊजी आश्चर्य से पूछते थे, ''हाँ मैं ठीक हूँ। तुम क्यों पूछ रहे हो ?'' मैं मज़ाक में कहता था, ''आपने मुझ पर शब्दों के हथौड़े चलाना बंद कर दिया है, इसलिये मुझे आश्चर्य हो रहा था कि क्या आप बीमार हैं ?'' भाऊजी हँसते हुए कहते थे, ''इन्तज़ार करो और देखो ! जल्दी ही तुम्हारे ऊपर एक विशालकाय हथौड़ा गिरने वाला है।''

यह विशालकाय हथौड़ा मेरे ऊपर २००० में गिरा जब मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया। यह धीरे–धीरे नहीं बल्कि अचानक रात भर में हो गया। एक सक्रिय जीवन बिताने के बाद जहाँ मेरा काम ज़्यादातर घर से बाहर होता था, मुझमें इतनी भी ताकत नहीं थी कि मैं बिस्तर से उठ सकूँ। नहाने या रसोई घर में जाने में भी मैं थक जाता था। मैं पूरे दिन सोता रहता था। मैं बात करने में भी थक जाता था। मेरा दिमाग़ भी धुंधला हो गया था और दूसरे लोगों की बातों पर, जो वे मुझसे करते थे, मैं अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता था।

मैं सोचता था कि यह थकावट ठीक हो जायेगी लेकिन जैसे–जैसे समय बीतने लगा और महीनों बाद भी कोई सुधार होने के आसार नज़र न आने पर, मैं चिन्तित होने लगा। मैंने सभी प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों के बड़े बड़े डाक्टरों से सलाह ली। सभी अलग–अलग बातें कहते थे और इससे मेरी केवल चिन्ता ही बढ़ी। कई महीने इलाज करवाने के बाद भी जब कोई सुधार नहीं हुआ, मैं भयभीत हो गया। मेरे स्वास्थ्य में कोई सुधार न होने के अलावा, हर नया इलाज मेरे स्वास्थ्य को और अधिक बिगाड़ देता था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या हो रहा था और इसीलिये मैं निराशा में डूबकर उदास रहने लगा।

लगभग दो साल तक अपनी बीमारी से लड़ने, इसका इलाज करने और अपने पुराने सक्रिय जीवन में वापस लौटने का प्रयत्न करने के बाद, मैं हार गया और मैंने बाबा की मर्ज़ी के अधीन होने का निश्चय किया। मैंने ट्रस्ट के चेयरमैन भाऊजी को पत्र लिखा और उनसे ट्रस्ट आफ़िस में आकर रहने की अनुमति माँगी। मैंने उन्हें बताया कि मेरा स्वास्थ्य कितना ख़राब था और मैं किसी भी तरह से ट्रस्ट के काम में मदद करने के लायक नहीं था। भाऊजी ने बहुत प्रेम के साथ उत्तर दिया, ''तुम यहाँ किसी भी समय आ सकते हो और यहाँ के दरवाज़े तुम्हारे लिये हमेशा खुले हैं। तुमने यहाँ बहुत काम किया है और तुम यहाँ आकर विश्राम कर सकते हो। तुम बाबा को अपने ऊपर अपना काम (His work) करने दो।''

इस समय मेरा स्वास्थ्य इतना खराब हो गया था कि मैं केवल बैसाखियों की सहायता से चल पाता था क्योंकि इस समय मेरे पैरों में कभी इधर, कभी उधर भयंकर दर्द होता था। मुझे आशा थी कि ट्रस्ट आफ़िस में मेरी हालत में कुछ सुधार होगा लेकिन मेरी हालत और अधिक बिगड़ गयी। मैंने बाबा के प्रति अधिकाधिक समर्पित होने का प्रयत्न किया। मैंने इस बीमारी को इस रूप में भी स्वीकार करने की कोशिश की कि बाबा मुझे कुछ शिक्षा देने की कोशिश कर रहे थे लेकिन मैं यह नहीं जानता था कि वह क्या सिखाना चाहते थे। मैंने बाबा से मुझे रास्ता दिखाने की प्रार्थना की और उन्होंने अपने सूक्ष्म तरीकों से मेरा मार्गदर्शन भी किया जिस पर मैंने पहले ध्यान नहीं दिया। जब कई बाबा प्रेमियों ने मेरे पास आकर, मुझे अपने व्यक्तिगत अनुभव बताये जब उन्होंने मेरे ही जैसे कष्ट का अनुभव किया था, तो मुझे आश्चर्य हुआ। इन सभी बाबा प्रेमियों में एक समानता थी कि उनका जीवन और व्यवसाय उच्चकोटि का था। अचानक उनका सब कुछ खो गया यहाँ तक कि उनका हुनर भी। जबकि बीते समय में वह बहुत अधिक योग्य और कुछ भी करने में समर्थ थे, लेकिन अचानक उनके लिये साधारण से साधारण काम करना भी कठिन हो गया। शुरू में बहुत व्याकुल होने और डरने के बाद, उन्होंने एक ऐसे जीवन को स्वीकार कर लिया था जिसमें वे केवल ज़रूरी कामों को करने की कोशिश करते थे और बाबा की याद करते थे। ऐसा करने में सफल होने पर, तुलनात्मक रूप से वे प्रसन्न थे और मेरा मार्गदर्शन करते

हुये मुझे रास्ता बता रहे थे कि अपनी मौजूदा हालत में मुझे क्या करना चाहिए।

मैंने उस समय उनकी सलाह पर ध्यान नहीं दिया। एक दिन, जब मैं मेहेराबाद में अकेला बैठा हुआ, मन में डरते हुये, अपने स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता कर रहा था, मैंने अचानक बाल नातू को अपने बगल में बैठा पाया। उन दिनों बाल का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि उन्हें हमेशा स्वास्थ्य से संबंधित गंभीर समस्यायें रहती थीं। मैंने उनसे पूछा, ''बालाजी, आप कैसे हैं ?'' बाल ने उत्तर दिया, ''मैं आज बहुत अधिक व्यग्रता का अनुभव कर रहा हूँ। वास्तव में, मुझे अचानक घबराहट और डर का दौरा पड़ता है और जब यह दौरा पड़ता है, मैं अपनी मल त्याग की क्रिया पर नियंत्रण नहीं रख पाता हूँ और मुझे बार–बार शौचालय जाना पड़ता है।'' मैंने आश्चर्य से बाल से पूछा, ''मैं जानता हूँ आपका स्वास्थ्य खराब रहता है लेकिन मैं यह बिल्कुल नहीं जानता था कि आपको अचानक घबराहट और डर का दौरा भी पड़ता है।'' बाल ने कहा, ''हाँ, मुझे पिछले चौदह सालों से यह दौरा पड़ता है और इसका इलाज भी हो रहा है।'' इससे मुझे और अधिक आश्चर्य हुआ। मेरी उत्सुकता बढ़ गई और मैंने बाल से पूछा, ''चौदह सालों से आपको अचानक घबराहट और डर के दौरे पड़ते रहे हैं और फिर भी, इस बीमारी के बावजूद आपने इतनी अच्छी किताबें लिखीं ? बाल, आपने यह किस तरह किया ? मुझे थोड़े समय से अचानक घबराहट और डर के दौरे पड़ रहे हैं और जब यह दौरा पड़ता है, मैं बिल्कुल निष्क्रिय हो जाता हूँ अर्थात् कुछ नहीं कर पाता हूँ। मैं कुछ नहीं कर पाता हूँ, यहाँ तक कि छोटे छोटे साधारण काम भी नहीं कर पाता हूँ। अचानक घबराहट और डर के दौरों के बावजूद, आप इतना ज्यादा काम कैसे कर लेते हैं ?''

बाल ने मुझे एक बहुत उपयोगी बात बतायी। ''मुझे दिन में जो भी काम करने होते हैं, मैं उन्हें लिख लेता हूँ। जैसा कि तुम जानते हो, जब अचानक घबराहट और डर का दौरा पड़ता है, मन भयभीत हो जाता है और कुछ भी याद नहीं रहता। इसलिये बाबा की याद करते हुये, मैं अपने लेखों की मदद से, अपने काम को पूरा करने का भरसक प्रयत्न करता हूँ।

बाबा उस काम को पूरा करने में मेरी मदद करते हैं या यह भी कह सकते हैं कि बाबा मेरे लिये उस काम को करते हैं। इस तरह काम होता है।''

बाल नहीं बल्कि मेहेरबाबा मुझे रास्ता दिखा रहे थे। अब मैं समझ गया था कि मुझे आगे क्या करना है। बाल ने मुझे अपनी दिनचर्या बनाने की सलाह दी। दिनचर्या बना लेने से दिन भर किये गये कामों का मन अभ्यस्त हो जाता है और इससे मुझे ज़रूरी कामों को करने में मदद मिलने के साथ साथ अचानक घबराहट और डर के दौरे भी कम हो जायेंगे। मैंने उनकी सलाह के अनुसार काम करना शुरू कर दिया क्योंकि मैं जानता था कि मैं निराशा के आखिरी छोर पर पहुँच गया था और इससे बाहर निकलने का केवल यही एक रास्ता था।

काफी कोशिश और व्याकुलता के बाद, कुछ समय में, मेरी ज़रूरी कामों की दिनचर्या बन गई और मेरे अचानक घबराहट और डर के दौरे भी कम हो गये। मैं अपने रोज के साधारण कार्यों और बाबा पर अपना ध्यान पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह केन्द्रित कर पाता था। हालांकि मेरे मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ था, परन्तु मेरा शारीरिक स्वास्थ्य वैसा ही था और मुझे अपने रोज़ के कामों में सहायता करने के लिए एक सहायक की ज़रूरत थी। इसी समय मैंने मेहेर देसाई से शादी करने का निश्चय किया जो मेरी मित्र थीं और उसने मेरी सहायता करना स्वीकार कर लिया। शादी के बाद, हम लोग दिल्ली आ गये क्योंकि उसका घर वहीं था। मुझे यह भी आशा थी कि इस परिवर्तन से मुझे लाभ होगा। हम एक प्रसिद्ध होम्योपैथिक डाक्टर के पास गये जिसने कई असाधारण रोगों के मरीजों को ठीक कर दिया था। उसने मेरे रोग का पूरा इतिहास सुना और मेरा कोई इलाज़ शुरू करने से पहले उसने कहा, ''मैं तुम्हें सबसे अच्छी दवायें दूँगा लेकिन उनका असर तुम्हारे ऊपर तभी होगा अगर यह ईश्वर की मर्ज़ी होगी।'' तब उसने मुझे निम्नलिखित कहानी सुनाई।

''जैसा कि तुम जानते हो, धन्वन्तरि आयुर्वेदिक दवाओं का जन्मदाता था। उसने वेदों के गहन अध्ययन से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया और लोगों के रोगों का इलाज करने में इसका सफलतापूर्वक उपयोग किया। एक बार उसका अपना पोता बीमार पड़ गया और उसने उसे बहुत सी

दवायें दीं लेकिन उसे किसी दवा से फ़ायदा नहीं हुआ। उसकी बहू की समझ में नहीं आया कि दवाओं का असर क्यों नहीं हो रहा था। उसने धन्वन्तरि पर दोषारोपण किया कि वह जानबूझकर उसके बच्चे का इलाज ठीक से नहीं कर रहा था क्योंकि बहू से उसके संबंध अच्छे नहीं थे। धन्वन्तरि का अपनी बहू से झगड़ा होता रहता था, लेकिन वह अपने पोते को प्यार करता था और उसने उसका इलाज करने में कोई कमी नहीं रखी थी। उसने अपनी बहू को प्रेम से समझाने की कोशिश की लेकिन उसने कुछ नहीं सुना। निराश होकर, धन्वन्तरि ने उससे कहा, 'ठीक है, मैं तुम्हें इसका प्रमाण दूँगा।'

''उसने दवाओं के दो पैकेट बनाये और उससे कहा, 'यह लो। दोनों पैकेटों में एक ही दवा है। अब पास के कुयें में जाओ और अपने साथ दो बाल्टियाँ ले जाओ। पहले, कुयें से एक बाल्टी पानी निकालो। फिर दोनों पैकेट में से एक की दवा कुयें में डाल दो। पन्द्रह मिनट बाद, दूसरी बाल्टी में पानी निकालो। तब दोनों बाल्टियों का पानी और बचा हुआ पैकेट लेकर मेरे पास आओ।'

''बहू ने वैसा ही किया जैसा कहा गया था। लेकिन, जब वह दूसरी बाल्टी में पानी निकालने लगी, उसने देखा कि कुयें का पानी पूरी तरह से जम गया था। उसने घर जाकर, धन्वन्तरि को पूरी घटना बताई। तब उसने बहू को समझाया, 'इस दवा में कुयें के सारे पानी को जमा देने की ताकत है। तुम्हारा बेटा कई दिनों से दस्तों से पीड़ित है और उसके शरीर का नाश हो रहा है। मैंने उसे यह दवा कई बार दी है लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है इसलिये दूसरे पैकेट की दवा तुम उसे अपने हाथ से खिलाओ और स्वयं देखो कि मैं सच कह रहा हूँ या नहीं। दस्तों का हर मरीज़ इस दवा से ठीक हो गया है, लेकिन किसी कारणवश तुम्हारे बेटे पर इसका कोई असर नहीं हो रहा है।' माँ ने दवा दी लेकिन बच्चे को कोई फायदा नहीं हुआ और कुछ दिनों बाद वह मर गया। धन्वन्तरि का दिल टूट गया। अपने दुख में, उसने दवाओं की अपनी सारी किताबों और वेदों को इकट्ठा किया और उन्हें पास की नदी में फेंकने के इरादे से ले गया। उसी समय भगवान कृष्ण उसके पास दौड़ते हुए आये।

''कृष्ण ने पूछा, 'धन्वन्तरि, तुम क्या कर रहे हो ?' धन्वन्तरि ने कहा, 'इन किताबों का सारा ज्ञान बिल्कुल बेकार है। मैं अपने पोते के जीवन को नहीं बचा सका और इसीलिये मैं इन सारी किताबों को नदी में फेंकना चाहता हूँ।'

''कृष्ण ने दयापूर्वक कहा, 'इन पुस्तकों में दिया गया ज्ञान बिल्कुल सही है और तुमने इससे कई लोगों का इलाज सफलतापूर्वक किया है। तुम यह जानते हो।'

''धन्वन्तरि ने दृढ़ता के साथ विरोध किया, 'लेकिन मेरे पोते के इलाज में यह असफल हो गया। उस पर इसका कोई असर नहीं हुआ। अगर यह ज्ञान सही है तो यह कैसे हुआ ?'

''कृष्ण ने उत्तर दिया, 'मैं तुम्हें यह बता सकता हूँ। तुम्हारा पोता मर गया क्योंकि उसके पेट में ये दवायें गई ही नहीं।'

''धन्वन्तरि ने आश्चर्य के साथ कहा, 'ऐसा कैसे हो सकता है? मैंने उसे खुद अपने हाथों से दवा खिलाई थी। अगर दवायें उसके पेट में नहीं गईं तो फिर कहाँ गईं ?'

''एक दयापूर्ण दृष्टि के साथ कृष्ण ने अपना मुँह खोला और धन्वन्तरि से अंदर झांकने को कहा। उसे यह देखकर धक्का लगा कि उसने पोते को जो दवायें खिलाई थीं, वे सब कृष्ण के मुँह में थी। कृष्ण ने प्यार से कहा, 'मैंने दवाओं को उसके पेट में जाने से रोक दिया।'

''रोते हुए धन्वन्तरि ने पूछा, 'आपने ऐसा क्यों किया ?'

''कृष्ण ने कहा, 'मैं क्या करता ? उसका समय पूरा हो गया था। इस जीवन से जुड़े हुये उसके संस्कार खत्म हो गये थे और यह उसके जाने का समय था।'''

डाक्टर ने इस टिप्पणी के साथ अपनी कहानी खत्म की, ''मैं केवल तुम्हारे मुँह में दवाये रख सकता हूँ। इस बात का निर्णय केवल ईश्वर कर सकता है कि वह इन दवाओं को तुम्हारे शारीरिक तंत्र के अंदर जाने दे

या नहीं।'' मेरे लिए स्वयं मेहेरबाबा मुझे यह बता रहे थे कि यह बीमारी मुझे दी गई उनकी देन है और इसका एक विशेष प्रयोजन था जिसका मुझे पता लगाना था।

दिल्ली में छः महीने रहने के बाद, हम अपने परिवार के साथ रहने के लिए मुम्बई आ गये। यद्यपि डा. के इलाज से मुझे फ़ायदा नहीं हुआ, फिर भी डा. की कहानी का मेरे ऊपर गंभीर असर हुआ। मैंने अपना ध्यान इलाज कराने की अपेक्षा, बीमारी को स्वीकार करने में अधिक केन्द्रित किया। मैंने अपने जीवन को अपनी शारीरिक कमज़ोरियों के हिसाब से ढालने की कोशिश शुरू कर दी। मैंने जितनी अधिक कोशिश की, मैंने पाया कि केवल मेरा मन ही शान्त नहीं हुआ बल्कि मेरे स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ। कई दिन मेरे दर्द कम रहता था और मैं बैसाखियों के बिना भी चल सकता था। मैंने अपनी बीमारी को एक दोस्त और शिक्षक के रूप में देखना शुरू कर दिया। बीमारी के साथ दो सालों के संघर्ष ने मुझे नम्र होना सिखा दिया था। बीमारी के पहले, लोगों की कमज़ोरियाँ और अयोग्यता मुझसे सहन नहीं होतीं थीं। अब, बाबा ने मेरे अंदर वे सारी कमज़ोरियाँ और अयोग्यतायें दे दीं थीं जो मैं दूसरों में देखता था। व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा, मैं अब अच्छी तरह समझ गया था कि उन परिस्थितियों में होने का क्या अर्थ था। क्योंकि अब मुझे अपने खराब स्वास्थ्य के बारे में दूसरे लोगों की आलोचनाओं को सहना पड़ता था जिनमें रिश्तेदार, मित्र और यहाँ तक कि बाबा प्रेमी भी थे। मैं इस स्थिति से परेशान नहीं था क्योंकि इसे स्वीकार करने पर; इसने मेरे आन्तरिक विकास में मदद की।

अगले दो साल, मैं मंडली और बाबा के साथ समय बिताने के लिये, जल्दी जल्दी मेहेराबाद जाता रहा। मैं इस बात से बहुत प्रभावित था और मुझे आश्चर्य भी होता था कि घोर पीड़ा और खराब स्वास्थ्य के होने पर भी, मंडली पूरी तरह शान्त और बाबा की मर्ज़ी के अधीन किस तरह रह पाती थी। वास्तव में, उनके शरीरों के टूटने पर भी, उनका चेहरा स्वास्थ्य से और अधिक चमकता हुआ प्रतीत होता था। मैं बाबा से अक्सर प्रार्थना करता था कि वे वही शान्ति और उनकी मर्ज़ी के अधीन होने का गुण प्राप्त

करने में मेरी मदद करें जो मैं मंडली में देखता था। मैं जानता था कि वहाँ तक पहुंचने के लिये मुझे अभी लम्बा रास्ता तय करना था। इसी समय, मैंने बाबा से संबंधित एक सपना देखा।

मैंने देखा कि मैं नाराज़ लोगों की भीड़ से घिरा हुआ हूँ। वहाँ एक हज़ार से अधिक लोग थे। वे लोग मुझसे नाराज़ थे और पीटने ही वाले थे। मैं उन्हें शान्त करने की कोशिश कर रहा था लेकिन वे लोग मेरी बात नहीं सुन रहे थे। निराश होकर, मैंने चिल्लाते हुए बाबा का नाम लेकर पुकारना शुरू कर दिया। लेकिन उस समय बाबा को पुकारते हुए भी, मेरे मन में एक विचार आया। अगर बाबा यहाँ भौतिक शरीर में आ जायें, तो भी हज़ारों लोगों से अधिक लोगों की इस भीड़ से वह मुझे कैसे बचा पायेंगे? तुरंत ही, मुझे दूसरा विचार आया, ''तुम्हें इससे क्या मतलब है ? बाबा ने कहा है कि मेरी याद करो, मुझे पुकारो और मैं तुम्हारी मदद करूँगा। इसलिये तुम बिल्कुल वैसे ही क्यों नहीं करते हो ?'' इसलिये मैंने उनका नाम लेकर और ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। अचानक, मैंने अनुभव किया कि कोई मेरी पीठ थपथपा रहा था। मैंने आंखें खोलीं और बाबा को देखा। भीड़ गायब हो गई। बाबा मुझे जगाने के लिये थपथपा रहे थे (यह अभी भी स्वप्न में है)। मैनें बाबा की ओर देखकर कहा, ''बाबा, मुझे जगाने के लिये धन्यवाद। यह कितना डरावना सपना था। वे लोग मुझे पीट पीट कर मार डालते।'' अचानक, मुझे समझ में आया कि मैं अभी भी मायावी सपना देख रहा था। इसलिये मैंने बाबा की ओर मुड़कर उनसे पूछा, ''बाबा, मैं अभी भी यह मायावी स्वप्न देख रहा हूँ। मैं अभी भी आपसे अलग हूँ। आप मुझे इस मायावी स्वप्न से भी कब जगायेंगे ? इस स्वप्न से जागने के लिये मुझे क्या करना होगा ?''

बाबा मुस्कराये और दया भरी दृष्टि से देखते हुए कहा, ''यह बहुत आसान है। जिस तरह तुमने मुझे स्वप्न में पुकारा, उसी तरह पुकारो और मैं तुम्हें इस मायावी स्वप्न से भी जगा दूँगा।''

इसके साथ ही मेरा सपना टूट गया। मैं जाग गया और मेरी समझ में आ गया कि इस स्वप्न के माध्यम से बाबा ने मुझे एक महत्त्वपूर्ण संदेश

दिया था। मैं समझ गया कि मुझे पूरे दिन बाबा की याद करने और उनका नाम लेने के लिये और अधिक प्रयत्न करना होगा। अपनी ओर से भरसक कोशिश करने के बावजूद, मैं इसमें सफल नहीं हो रहा था।

जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ, अपनी बीमारी के पहले दो सालों में मैं इसका इलाज कराने और अपने पिछले सक्रिय जीवन को पाने के लिये संघर्ष कर रहा था और इसमें मेरा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दिन पर दिन बिगड़ता गया। अगले दो सालों में, मैं अपनी बीमारी को स्वीकार करके, बाबा की मर्ज़ी के अधीन हो गया और मेरे जीवन में, स्वास्थ्य में, पहले की अपेक्षा कुछ सुधार हुआ। निःसंदेह, इस समय मेरा इलाज चलता रहा। परन्तु, मेरी बीमारी के पाँचवें साल में, मेरा स्वास्थ्य फिर से बिगड़ने लगा। मेरा पाचन तंत्र बुरी तरह बिगड़ गया और मेरे पेट में भयंकर दर्द होने लगा। शुरू में, कुछ दिनों में एक बार दर्द होता था लेकिन फिर धीरे धीरे हालत बिगड़ती गयी और मुझे रोज़ पेट दर्द का दौरा पड़ने लगा। इन दौरों के दौरान मैं, गर्भाशय में बच्चे की तरह, दर्द से दोहरा हो जाता था और जब तक दर्द कम नहीं हो जाता था, मैं इसी हालत में रहता था। डाक्टर कुछ नहीं कर पा रहे थे। धीरे धीरे दर्द और अधिक बढ़ गया। लगभग छः महीने तक यह दर्द सहने के बाद, मेरी सहनशक्ति समाप्त हो गई और मैं निराश हो गया। मेरे मन को गहरा धक्का लगा। मैं इस दर्द को और अधिक नहीं सह सका और मुझे लगा कि रोज़ होने वाले इस दर्द से मैं पागल हो जाऊँगा। दर्द के दौरे दिन और रात में किसी भी समय पड़ जाते थे, इसलिये मैं निरन्तर व्याकुल रहता था।

एक रात, जैसे ही मुझे दौरा पड़ा, मैं बिस्तर में लेटा हुआ बाबा को पुकारता रहा। हालांकि, मैंने पहले भी दूसरे अवसरों पर बाबा को पुकारा था, लेकिन कुछ कारणवश इस बार यह पहले से भिन्न था। हो सकता है मैंने हृदय से पुकारा हो, क्योंकि बाबा ने मुझे उत्तर दिया। मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं और मन में सोचने लगा कि मैं बाबा के साथ खड़ा हुआ, उनसे पूछ रहा हूँ, ''बाबा, मैंने अपनी नौकरी, अपना परिवार सब कुछ छोड़ दिया ताकि मैं मेहेराबाद में रहकर यथाशक्ति आपकी सेवा कर सकूँ। मैं आपके पास पहुँचने की कोशिश कर रहा था और फिर भी, आपकी इच्छा

और मर्ज़ी से, इस कष्ट ने मुझे इतना असहाय बना दिया कि मुझे मेहेराबाद छोड़ना पड़ा। मैंने आपके कार्य में अपना जीवन समर्पित कर दिया था, इसलिये इस कष्ट का कोई औचित्य मेरी समझ में नहीं आ रहा है। मैं यह सब समझ पाने में असमर्थ हूँ।''

बाबा के स्पष्ट उत्तर से मुझे आश्चर्य हुआ। बाबा ने प्रश्न करते हुये, उत्तर दिया, ''रुस्तम, मुझे बताओ इससे पहले, अन्दर से बदलने के लिये तुमने कब कोशिश की थी ? क्रोध, सहनशीलता की कमी, रुखाई और दूसरे बुरे गुण, जो तुममें थे और तुम जिनसे छुटकारा पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, तुमने उन्हें कम होता हुआ कब महसूस किया था ?''

मैंने रोते हुये उत्तर दिया, ''अपने कष्ट के बाद, बाबा।'' यह सत्य था और यह मेरी समझ में आ गया। लेकिन मेरे अंदर अभी भी कुछ संदेह था इसलिये मैंने आग्रह किया, ''लेकिन बाबा, क्या दर्द का इतना अधिक तीव्र होना ज़रूरी है कि मैं उसे सह न सकूँ ?''

प्रश्न के रूप में, बाबा ने पुनः दयापूर्वक उत्तर दिया, ''रुस्तम, मुझे बताओ, अपने कष्ट के दौरान, तुमने किस समय आन्तरिक परिवर्तन होता हुआ अनुभव किया ?'' अब, मेरी आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। मैंने उत्तर दिया, ''बाबा जब मैं तीव्र दर्द में था। जब मैं पूर्णरूप से असहाय था, उस समय आन्तरिक परिवर्तन होना शुरू हुआ।

बाबा ने आगे बढ़कर, मुझे आलिंगन में ले लिया और कहा, ''तो अब तुम समझ गये हो कि यह कष्ट क्यों ज़रूरी है ?'' मैंने कहा, ''हाँ, बाबा, लेकिन कृपया मेरे साथ रहिये क्योंकि मैं यह सब अकेले नहीं सह सकता।'' मैंने बाबा के आलिंगन का और अधिक कसाव अनुभव किया और इस प्रकार उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि वह इस कष्ट के दौरान मेरे साथ होंगे। मुझे बस उन्हें पुकारते रहना था। किसी अनजान कारणवश मेरा दर्द बिल्कुल गायब हो गया और मैं रात भर शान्तिपूर्वक सोया। मैंने बाबा की उपस्थिति महसूस की जैसे कि वह मेरी देखभाल कर रहे थे।

अगले दो दिन, मेरे पेट में बिल्कुल दर्द नहीं हुआ जो बहुत ही असाधारण बात थी। पिछले छः महीने से मेरे पेट में रोज़ दर्द होता था।

तीसरे दिन मेरे पेट में फिर से दर्द हुआ लेकिन यह पहले से कम था। इस समय मैंने एक नया इलाज शुरू किया और धीरे धीरे मेरा पेट दर्द हफ़्ते में एक बार और फिर पंद्रह दिन में एक बार होने लगा और इससे मुझे अधिक परेशानी नहीं होती थी। मैंने बाबा को धन्यवाद दिया कि उन्होंने सिर्फ़ मेरा दर्द ही कम नहीं किया बल्कि यह समझने में भी मेरी मदद की कि क्या हो रहा था। यह मई २००५ की बात है।

जून में, मेरे स्वास्थ्य से संबंधित इससे भी बड़ी मुसीबत आई। जब मैं नीचे झुककर कुछ उठा रहा था, मेरी पीठ में भयंकर दर्द हुआ। मैं कह नहीं सकता कि यह झुकते समय हुई किसी चोट के कारण था अथवा मेरी पाचन क्रिया की गड़बड़ी के कारण मेरे शरीर के वज़न में होने वाली बहुत अधिक कमी के कारण कोई क्षति हो जाने से था। मेरे, रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से में, भयंकर दर्द था। मैं अपना बायाँ पैर ज़मीन पर नहीं रख सकता था। मुझे कुछ दिनों तक पूरी तरह आराम करने के लिये कहा गया। डाक्टरों ने सोचा कि मांसपेशियों से संबंधित कोई समस्या थी और कुछ दिनों में ठीक हो जायेगी। लेकिन जब कई हफ़्ते तक कोई आराम नहीं हुआ और दर्द, जो अब मेरा निरंतर साथी बन चुका था, बिल्कुल भी कम नहीं हुआ, मुझे एक्स–रे और एम.आर.आई. कराने की सलाह दी गई।

डाक्टरों ने मुझे बताया कि इसका इलाज लम्बे समय तक होगा और इस इलाज से वे मेरी रीढ़ की हड्डी में आगे क्षति होने से रोक सकते थे लेकिन मेरे पूरी तरह सामान्य होने की आशा बहुत कम थी। हम केवल दर्द के कम होने की आशा कर सकते थे। जैसे जैसे हफ़्तों के बाद महीने बीतते गये, मेरी दशा में नाममात्र का सुधार हुआ और मैं बड़ी मुश्किल से बैसाखियों के सहारे, किसी तरह शौचालय तक अपने आपको खींचकर ले जाता था। मैं फिर से बाबा को पुकारने और उनसे शिकायतें करने लगा और उनसे मेरी मदद व मार्गदर्शन करने की प्रार्थना करने लगा। मेरी समझ में नहीं आता था कि मैं अपना शेष जीवन एक कमरे में सीमित होकर और वह भी ज़्यादातर समय बिस्तर पर लेटे लेटे; किस प्रकार बिताऊँगा। मैं जानता था कि अगर इस समय बाबा ने मेरी मदद नहीं की तो मैं पागल हो जाऊँगा।

एक दिन, जब मैं बिस्तर पर लेटा हुआ बाबा से शिकायत कर रहा था, मैंने अपने हृदय में, मुझसे बात करते हुये, उनकी उपस्थिति को बहुत गहराई से अनुभव किया। उन्होंने पूछा, ''रुस्तम, क्या कभी तुमने योगियों के बारे में सुना है जो सालों छोटी गुफाओं में रहकर, अपना समय एकान्त में बिताते हैं ? वह चाहें तो अपनी इच्छानुसार खा, पी सकते हैं और इधर उधर घूम सकते हैं। फिर भी, ईश्वरत्व को प्राप्त करने के लिए, वह इन सबको छोड़कर, ध्यान करते हुए जीवन बिताना पसन्द करते हैं। इन सब तपस्याओं और त्याग के बावजूद, वे मुझसे मिल नहीं पाते हैं। तुम उन भाग्यशाली लोगों में हो जो मेरे आलिंगन को प्राप्त करते हैं और फिर भी, मुझे धन्यवाद देने के बजाय, तुम खाने पीने और इधर उधर चलने में असमर्थ होने की शिकायत कर रहे हो, जबकि एक योगी मेरे लिये यह सब अपनी मर्ज़ी से त्याग देता है।''

जब बाबा यह कह रहे थे मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे क्योंकि मैं जानता था कि मैं कितना कमज़ोर प्रेमी था। मैंने रोते हुए कहा, ''बाबा, कृपा करके मुझे रास्ता दिखाइये। मुझे गहरी शारीरिक पीड़ा है और इससे मैं भ्रमित होकर कुछ समझ नहीं पाता हूँ। दर्द, आपकी याद में विघ्न डालता है और मैं किसी चीज़ पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता हूँ।''

बाबा ने प्रेम से कहा, ''जब तुम दर्द और कष्ट के दौरान मेरी याद करोगे, तभी यह कम होगा। इसके अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। मेरी याद ही कुंजी है, क्योंकि यह तुम्हें केवल इस शारीरिक कष्ट से ही छुटकारा नहीं दिलायेगी, बल्कि तुम्हें जगाकर, इस मिथ्या, मायावी कष्ट से भी मुक्त करेगी। क्या तुम यह नहीं समझ पा रहे हो कि तुम्हें मेरी याद निरंतर करने और सब कुछ मेरी मर्ज़ी के ऊपर छोड़ने की कोशिश गंभीरतापूर्वक करनी चाहिये ? अगर तुम मेरी याद निरंतर करने और योगी के समान बनने में सफल नहीं होते हो तो कम से कम दिन का थोड़ा समय मेरी याद में व्यतीत करो। इस परिस्थिति में शिकायत करने के बजाय, वर्तमान समय में किसी भी कार्य के लिये शारीरिक रूप से असमर्थ होने को पूरा दिन मेरी याद में बिताने के एक अवसर के रूप में लो। जिस तरह संभव हो, मेरी याद करो और मैं तुम्हारी मदद करूँगा।'' बातचीत

समाप्त हो गई और पिछले महीनों की परेशानियों और भ्रम के बाद, मेरा मन अचानक शान्त हो गया। मैं समझ गया कि इस समय मुझे, जितने समय मैं जागता हूँ, हर क्षण और विचार को बाबा की याद से भर देने का गंभीरता से प्रयत्न करना होगा। इसके अलावा, मैं और कुछ कर भी नहीं सकता था।

मैंने कुछ दिनों तक यह करने की भरपूर कोशिश की लेकिन असफल रहा; लेकिन फिर मंडली द्वारा सुनाई गई वे सारी कहानियाँ, जिसमें उन्होंने बताया था कि बाबा की याद को किस प्रकार अपने जीवन का एक हिस्सा बनाया जाये, धीरे धीरे मुझे याद आने लगीं। मुझे याद आया कि मंसारी हमें उत्साहित करते हुए कहती थीं, ''बाबा का चेहरा आँखों के सामने लाने की कोशिश करो, उनके साथ पहाड़ी पर ऊपर नीचे जाने की कल्पना करो, उनके साथ खेलने की कल्पना करो। अपने विचारों में उनका आलिंगन करो। बाबा के साथ उनके दौरों पर जाने की कल्पना करो। कल्पना करो कि वह मस्तों की तरह तुम्हें नहला रहे हैं, खाना खिला रहे हैं और तुम्हारी देखभाल कर रहे हैं।''

मैंने यह करना शुरू किया और ऐसा करने के पहले ही दिन, मेरा पूरा दिन, आश्चर्यजनक रूप से, आनंद में बीता। समय इतनी जल्दी बीत गया कि मुझे पता ही नहीं चला। हालांकि मेरा दर्द कम नहीं हुआ था लेकिन मेरे द्वारा मानसिक रूप से की गई बाबा की याद के दौरान मैंने दर्द पर ध्यान नहीं दिया। रात के समय मुझे गंभीर कष्ट होता था जिससे मैं अक्सर जाग जाता था और मैं बेचैनी के कारण जागता रहता था। ऐसे ही एक अवसर पर मुझे याद आया कि ऐसे क्षणों में भी बाबा की याद करने के लिये एरच हमें किस तरह उत्साहित करते थे। एरच ने हमें बताया था कि बसरा की सन्त राबिया अपने प्रभु से किस तरह प्रार्थना करती थी कि वह उसकी सारी नींद ले लें ताकि वह निरंतर उनकी याद कर सके। इसलिये हर बार गहरी पीड़ा से नींद खुलने पर, मैं मन ही मन बाबा को कल्पना में देखते हुये उनका नाम जपना शुरू कर देता था और ये क्षण भी मेरे लिये आनंदपूर्ण हो गये।

मनसारी ने एक बार हमें बताया था, ''हर व्यक्ति का दिमाग हर समय बात करता रहता है। इससे बाबा के साथ बातें क्यों नहीं करते ? अपनी बातचीत में उनको शामिल करो और उनकी निरंतर याद करने का यह तुम्हारा तरीका होगा।'' मैंने इसका अभ्यास भी शुरू कर दिया और मुझे आश्चर्य हुआ जब मेरा हृदय आनंद से भर गया। कुछ ही हफ़्तों पहले मैं बहुत अधिक निराशा का अनुभव कर रहा था और समय बीतता नहीं था लेकिन अब मैं अपने अंदर प्रसन्नता को भरता हुआ अनुभव करता था और समय कैसे बीत जाता था, मुझे ध्यान ही नहीं रहता था।

शारीरिक रूप से मेरे लिये कुछ भी नहीं बदला था। दर्द और अक्षमतायें पहले की तरह ही गहन थीं और मुझे अक्सर आश्चर्य होता था कि मेरे हृदय में भरने वाले इस आनंद का स्त्रोत कहाँ था। यह अजीब लगता होगा और शायद कुछ पाठकों को इस बात पर विश्वास नहीं होगा कि कोई व्यक्ति इतनी अधिक पीड़ा में भी, इतने अधिक आनंद का अनुभव कर सकता है। मैं ईमानदारी के साथ इतना ही कह सकता हूँ कि मैं बाबा की याद करने का अभ्यास गंभीरतापूर्वक कर रहा था और उसी के अनुसार मैं आन्तरिक आनन्द का अनुभव कर रहा था और, बाबा की कृपा से, मैं अभी भी उस आनन्द का अनुभव करता रहता हूँ।

मुझे विश्वास है कि हर बाबा प्रेमी बाबा की याद करने के मार्ग पर चलने का प्रयत्न गंभीरतापूर्वक कर सकता है और इस आन्तरिक आनंद का अनुभव कर सकता है जो बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होता।

अभी हाल ही में, एक मित्र ने मुझसे पूछा, ''अगर तुम्हें बाबा से कुछ माँगना है तो क्या तुम अच्छा स्वास्थ्य माँगोगे।'' मैंने कहा, ''नहीं, मैं अच्छा स्वास्थ्य नहीं माँगूँगा। मेरे मन में उससे भी बड़ी कोई चीज़ है।''

''वह चीज़ क्या हो सकती है ?'' मित्र ने पूछा।

मैंने कहा, ''उनकी निरंतर याद करने की भेंट माँगूँगा। इस तरह की याद जो प्रेम से भरे हृदय से की जाती है। अगर तुम्हारे पास यह प्रेम से भरी निरंतर याद है तो तुम हर स्थिति में प्रसन्न रहोगे। तुम्हारे जीवन की हर स्थिति उसकी मर्ज़ी से है और उसकी मर्ज़ी तुम्हें प्रसन्नता देती है।

इससे अधिक कोई व्यक्ति और क्या माँग सकता है ? उनकी इस भेंट के साथ तुम खेल को करीब करीब जीत लेते हो। फिर अच्छा स्वास्थ्य क्यों माँगा जाय ? हर व्यक्ति को एक दिन मरना है और खराब स्वास्थ्य तुम्हें ले जाने का मृत्यु के लिए एक बहाना है। फिर क्यों न अंतिम लक्ष्य, ईश्वर को माँगा जाय ?''

मनी अक्सर कहा करती थीं, ''तुम बाबा से कुछ भी माँगो और तुम्हें मिलेगा। लेकिन कोई ऐसी चीज़ क्यों नहीं माँगते, जिसे पाने के बाद, तुम्हें फिर कभी कोई और चीज़ माँगनी न पड़े ?''

मैं मंडली द्वारा सुनाई गई ये कहानियाँ आपको सुनाना चाहता हूँ जिनसे मुझे बाबा की याद को अपने जीवन का एक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भाग बनाने में सहायता मिली है। एरच अक्सर कहते थे, ''सबसे पहले उन्हें याद करो। उनकी याद में स्थापित होने के बाद, दिन भर तुम जो चाहो कर सकते हो।''

ckck vPNh rjg tkurs gS

कई अवसरों पर, बाबा के सम्पर्क में लम्बे समय तक रहने वाले बाबा प्रेमियों की, जिनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने बाबा के भौतिक शरीर के दर्शन किये थे, अत्यंत व्याकुल करने वाली आपत्तियों के द्वारा परीक्षा ली जाती थी। कुछ दुर्घटनायें इतनी अधिक भयंकर होती थीं कि उन लोगों से, जो दुर्घटनाग्रस्त होते थे, सहानुभूति होती थी। कुछ लोग इन्हें साहस से स्वीकार करते थे जब कि कुछ भ्रमित हो जाते थे हालांकि बाबा के प्रति उनका प्रेम और विश्वास अडिग रहता था। एक अवसर पर, एरच के पास एक बाबा प्रेमी दम्पत्ति अपने बच्चे के साथ बैठा हुआ था। बच्चा बहुत सुन्दर और प्यारा था लेकिन बुरी तरह विकलांग था। दम्पत्ति को बाबा के दर्शन का सौभाग्य मिला था। हमेशा की तरह, एरच ने परिवार के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य के बारे में पूछा और अन्त में, बच्चे की ओर इशारा करते हुए पूछा कि बच्चे के स्वास्थ्य में कितना सुधार हो रहा था। दम्पत्ति ने एरच को बताया कि उनकी अन्तिम मेहेराज़ाद की यात्रा के पश्चात्,

बच्चे की हालत में क्या क्या सुधार हुआ था। परीक्षायें और कष्ट बहुत से थे और जब वे यह सब बता रहे थे, उनके हृदयों की पीड़ा का अनुभव किया जा सकता था। हम सब चुपचाप सुन रहे थे।

सब कुछ बताने के बाद, पति ने एरच से पूछा, ''बाबा को अपना सब कुछ समर्पित करने, इतने सालों से सिर्फ़ उनके लिये जीने के बाद, मेरी समझ में यह कभी नहीं आया कि बाबा ने मेरे बच्चे को इतना अधिक कष्ट क्यों दिया है ?''

एरच बहुत देर तक चुप रहे। ऐसा लगता था कि वह मौन के द्वारा उस दम्पत्ति के दर्द को महसूस कर रहे थे। फिर उन्होंने दम्पत्ति की ओर मुड़कर, ज़ोर देते हुए कहा, ''इस बात पर विश्वास करो कि जब उन्होंने कष्ट देने का निश्चय किया तो इसमें उस आत्मा की सबसे अधिक भलाई के विचार के अलावा और कोई कारण नहीं था। इस विषय में अपने मन में कोई सन्देह न करो। उस आत्मा की सबसे अधिक भलाई के अलावा उनके (बाबा) मन में और कुछ नहीं है।''

एरच की बात सुनकर हम लोग शान्त बैठे रहे। यह बात उन्होंने जिस शक्ति और प्रभुत्व के साथ कही, वह इतना अधिक अभिभूत करने वाला था कि उस विषय पर और कुछ कहने की ज़रूरत ही नहीं रही।

;FkkFkZ 'kjohj

महीने में एक बार, महिला मंडली बाबा को हार पहनाने के लिए मेहेराबाद आती थी। तीर्थयात्री समाधि में एकत्र होकर, उनके आने की प्रतीक्षा करते थे। वहाँ आने पर, वे समाधि के अंदर जाकर बाबा को हार पहनाती थीं। बाबा की समाधि पर हार चढ़ाने के बाद, वे मेहेरा की समाधि पर जाकर वहाँ भी हार चढ़ाती थीं। जब महिला मंडली, मेहेरा की समाधि पर एक के बाद दूसरा, तीसरा हार चढ़ाती थी, वे इस हार को पकड़ने के लिये, जब यह ''अवतार मेहेरबाबा की जय'' बोलते हुए समाधि पर चढ़ाया जाता था, तीर्थयात्रियों को उत्साहित करती थीं और इस तरह तीर्थयात्री भी हार चढ़ाने में भाग लेते थे। अक्सर मनी किसी

ख़ास तीर्थयात्री को, जो भीड़ के कारण पीछे रह जाता था, आगे आकर हार चढ़ाने में मदद करने के लिये बुलाती थीं। इस मामले में मनी की नज़र बहुत तेज़ थी और अगर वह किसी व्यक्ति को शर्म के कारण पीछे रह गया देखतीं थीं, वह उसे आगे बुला कर हार चढ़ाने में भाग लेने के लिए कहती थीं।

एक अवसर पर, मेहेरा की समाधि पर जब कई हार चढ़ा दिये गये तो मनी रुक गईं और एक बूढ़ी औरत को पुकारा। गठिया और खराब स्वास्थ्य के कारण वह मुश्किल से चल पाती थी। उसकी बेटी उसे सहारा देकर आगे ले आई। जब औरत पास आ गई, मनी ने हार चढ़ाना रुकवा दिया और वहाँ पर मौजूद प्रेमियों को बताया, ''तुममें से कोई नहीं जानता है कि यह औरत कौन है। यह बाबा के क़ीमती रत्नों में से एक है। बाबा को अपना सर्वस्व समर्पित करने के बाद, यह अपने पूरे परिवार के साथ, यहाँ, मेहेराबाद पहाड़ी पर हमारे साथ रहती थी। यह धनी परिवार की और सुख–सुविधा की आदी थी। इसने यह सब कुछ प्रसन्नता पूर्वक छोड़ दिया और बिना कोई शिकायत किये, हमारे साथ कई सालों तक एक साधारण जीवन व्यतीत किया।

''जब यह यहाँ से गई, बहुत से कष्टों और कठिनाइयों के द्वारा बाबा के प्रति इसके प्रेम व विश्वास की परीक्षा हुई लेकिन फिर भी बाबा के प्रति इसका प्रेम बढ़ता गया। इसका पति पंगु (चलने से लाचार) हो गया और एक दुर्घटना में इसका बेटा और बहू मर गये। बाबा के बारे में निन्दापूर्ण आलोचना करते हुये, इसके रिश्तेदार और दोस्त इसे ताने देते हुये पूछते थे, 'तुम्हारा बाबा कहाँ है? वह अब तुम्हारी रक्षा क्यों नहीं करता ? इतने सालों तक तुमने आँखें बन्द करके किसी पर विश्वास किया और उसने तुम्हारे परिवार को दुर्घटना से नहीं बचाया।' यह हमेशा उत्तर देती थी, 'अगर तुमने बाबा के बारे में एक शब्द और कहा तो मैं तुम्हें उठाकर बाहर फेंक दूँगी।' बाबा के प्रति इसका प्रेम और विश्वास ऐसा था कि सारी विपत्तियों के बावजूद, यह बढ़ता रहा। इसको देखो बाबा के प्रेम में इसके चेहरे पर कैसी चमक है। ये लोग असली शूरवीर हैं। अपने दिल के टुकड़े टुकड़े होने के बावजूद ये बाबा को नहीं छोड़ते हैं, बल्कि उनसे प्रेम करते रहते हैं।''

उपर्युक्त घटना मुझे रूमी के एक कथन की याद दिलाती है, ''वह तुम्हारी एक इच्छा को ख़त्म करके, दूसरी इच्छा देता है, आशा की किरण को ख़त्म कर देता है ताकि तुम उस पर (ईश्वर) निर्भर रहने की याद रखो। असफलताओं के द्वारा ही प्रेमी अपने प्रति प्रियतम के प्रेम को समझ पाते हैं। हृदय के अंदर के साम्राज्य की कुंजी असफलता है। तुम्हें प्रार्थना करना चाहिये, ''मैं अपने जीवन में जो कुछ घटता हुआ देखना चाहता हूँ उसे ख़त्म कर दो, मेरी इच्छाओं का तिरस्कार करो। मुझे मिश्री की तरह खा लो। यह बसन्त ऋतु है और मेरे पंख नहीं हैं।''

noh eth vkj Lor= eth

दैवी मर्ज़ी और स्वतंत्र मर्ज़ी के बारे में मनी ने निम्नलिखित बताया था।

''यह रेलगाड़ी की यात्रा की तरह है। एक बार यात्रा शुरू हो जाने पर, तुम्हारे पास जो सामान है, तुम उसी पर निर्भर करते हो। यह सामान तुम्हारे संस्कार की तरह है। दैवी मर्ज़ी यात्रा के मार्ग की तरह है। तुम यात्रा के मार्ग को बदल नहीं सकते। रेलगाड़ी एक निश्चित मार्ग से अपने लक्ष्य तक जाती है। तुम रेलगाड़ी में जो कुछ कर सकते हो, तुम्हारी स्वतंत्र मर्ज़ी उसी तक सीमित है। तुम खिड़की से बाहर देख सकते हो, ताश खेल सकते हो, अपने साथी यात्रियों से बात कर सकते हो, सो सकते हो या फिर किताब पढ़ सकते हो। रेलगाड़ी में अपनी इच्छानुसार करने के लिए बहुत से काम है। रेलगाड़ी में तुम जो भी करते हो उससे तुम्हारे अंदर यह विचार आ सकता है कि तुम अपनी यात्रा का मार्ग बदल सकते हो, लेकिन वास्तव में ऐसा होता नहीं है। तुम्हारा जीवन, इसका आदि और अन्त, तुम्हारी जीवन यात्रा का मार्ग, दैवी मर्ज़ी द्वारा निर्धारित किया जाता है। इस निर्धारित मार्ग में तुम क्या करते हो, यह तुम्हारी स्वतंत्र मर्ज़ी है। तुम अपने जीवन की घटनाओं को किस प्रकार स्वीकार करते हो, वे लोग, जिनसे तुम मिलते हो, उनसे किस तरह व्यवहार करते हो, यह तुम्हारी स्वतंत्र मर्ज़ी है। यह तुम्हारी स्वतंत्र मर्ज़ी है जो तुम्हारी अगली यात्रा और इसमें ले जाने वाले सामान का निर्णय करेगी।

"इस तरह मुख्य घटनाओं को घटित होने से रोकने में कोई कुछ नहीं कर सकता है, भले ही वे दुर्घटनायें हों या सफलता। तुम्हारे पिछले जीवन के कार्यों अथवा संस्कारों के आधार पर वे पहले ही निर्धारित की जा चुकी हैं। फिर भी, तुम एक काम कर सकते हो–बाबा की याद से जीवन के हर क्षण को भरते हुये, इन घटनाओं को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करो। अगर तुम सफलतापूर्वक ऐसा करते हो तो तुम्हारे जीवन में होने वाली बुरी घटनाओं के प्रभाव को बाबा की याद सिर्फ़ कम ही नहीं करेगी बल्कि इस यात्रा को हमेशा के लिए समाप्त कर देगी। यह तुम्हें सभी यात्राओं के अन्तिम लक्ष्य तक ले जायेगी जिसके बाद तुम्हारे लिए कोई यात्रा नहीं होगी।"

एक दूसरे अवसर पर जब एक बाबा प्रेमी ने भाऊजी से दैवी मर्ज़ी और स्वतंत्र मर्ज़ी के बीच अंतर पूछा, उन्होंने उत्तर दिया, "एक व्यक्ति ने हज़रत मोहम्मद से प्रश्न पूछा, 'हज़रत मोहम्मद, मुझे बताइये कि, मेरे सारे कार्य दैवी मर्ज़ी के कारण हैं अथवा मेरी स्वतंत्र मर्ज़ी के कारण ?' जब उस व्यक्ति ने यह प्रश्न पूछा, हज़रत अपने शिष्यों के साथ बातें कर रहे थे। वह जानते थे कि उस मनुष्य का इरादा उन्हें धोखे से अपने जाल में फँसाना था। उन्होंने उस व्यक्ति से, जो बैठा हुआ था, खड़े होने के लिए कहा। फिर हज़रत मोहम्मद उस व्यक्ति की उपेक्षा करते हुये अपने शिष्यों से बात करने लगे। कुछ समय बाद, वह व्यक्ति बेचैन हो गया। उसने हज़रत मोहम्मद से फिर वही प्रश्न पूछते हुये कहा कि अगर उन्हें इसका उत्तर मालूम है तो वह बतायें वरना उसे खड़ा न रखें। हज़रत ने उस मनुष्य की ओर देखते हुए कहा, 'हाँ, मैं तुम्हें उत्तर दूँगा लेकिन पहले तुम अपना एक पैर ऊपर उठाकर खड़े हो जाओ।'

"उस व्यक्ति ने वही किया और एक पैर पर खड़ा हो गया। हज़रत ने पुनः अपने शिष्यों से बात करना शुरू कर दिया और उस व्यक्ति की पूरी तरह उपेक्षा करने लगे जैसे कि वह उसे बिल्कुल भूल गये थे। कुछ समय बाद, वह व्यक्ति परेशान नज़र आने लगा और उसने गुस्से से हज़रत से पूछा, 'मुझे एक पैर पर खड़ा रखने के बजाय, अगर आपको मालूम है, तो आप मेरे प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं देते ?' हज़रत ने उस मनुष्य की ओर

देखते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने जा रहा हूँ, लेकिन पहले तुम मेरी बात मानो और अपना दूसरा पैर भी ऊपर उठाकर खड़े हो जाओ।' यह सुनकर, वह व्यक्ति बहुत अधिक गुस्सा हो गया। 'कोई व्यक्ति दोनों पैर उठाकर कैसे खड़ा हो सकता है ? मेरे प्रश्न का उत्तर देने के बजाय आप मुझसे बेवकूफ़ी के काम करने को कह रहे हैं। क्या आपके पास मेरे प्रश्न का उत्तर है ?'

"हज़रत ने कहा, 'हाँ, तुमने जो अपना पहला पैर ऊपर उठाया, वह तुम्हारी स्वतंत्र मर्ज़ी है। तुम जिस सीमा तक अपना पैर चारों ओर घुमा सकते हो, वह तुम्हारी स्वतंत्र मर्ज़ी है। तुम्हारा दूसरा पैर दैवी मर्ज़ी को दर्शाता है जो तुम्हारी स्वतंत्र मर्ज़ी की मदद करता है। जिस तरह तुम दूसरा पैर उठाकर खड़े नहीं हो सकते, उसी तरह तुम दैवी मर्ज़ी को नहीं बदल सकते और तुम्हारी जो स्वतंत्र मर्ज़ी है, वह पूरी तरह से दैवी मर्ज़ी पर निर्भर है।'"

vk/;kfRed LokLF;

जब मैं मेहेराज़ाद में रहता था, एरच हमेशा मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछते रहते थे। कई वर्षो तक मैं जी मिचलाना, उल्टी होना और बदहज़मी से पीड़ित रहा और एरच हमेशा मेरे स्वास्थ्य के प्रति अपनी चिंता ज़ाहिर करते थे।

एक बार हम लोग मेहेराज़ाद जाने वाली सड़क पर सुबह घूम रहे थे जब एरच ने मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछा। फिर उन्होंने कहा, "अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। तीन बातों का तुम हमेशा ध्यान रखो– तुम्हारा शारीरिक स्वास्थ्य, तुम्हारा मानसिक स्वास्थ्य और तुम्हारा आध्यात्मिक स्वास्थ्य। अपने शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिये व्यायाम करो, ताकत की चीज़ें खाओ, पिओ और दवायें लो। अपने मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छे और सकारात्मक विचार रखो, अच्छे वचन और अच्छे कार्यों को करो।"

इसके आगे एरच ने कुछ नहीं कहा। मैं नहीं जानता कि वह आध्यात्मिक स्वास्थ्य के बारे में कुछ कहने के लिये सोच रहे थे या वह यह देखने के लिये जानबूझकर रुक गये थे कि मैं सावधान होकर सुन रहा था अथवा नहीं और मैं सबसे अधिक ज़रूरी विषय, आध्यात्मिक स्वास्थ्य के बारे में कुछ पूछूँगा या नहीं। जब एरच चुप रहे, मैंने उनसे पूछा, ''आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए क्या करना चाहिये ? क्या अच्छे विचार, अच्छे वचन और अच्छे कर्मों से मानसिक स्वास्थ्य के साथ साथ आध्यात्मिक स्वास्थ्य में भी लाभ नहीं होगा ?'' जैसा कि एरच का स्वभाव था, उन्होंने बहुत धीरे धीरे कहा, ''नहीं, आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिये तुम्हें अच्छे और बुरे की सीमा के परे जाना होगा। तुम्हें केवल 'ईश्वर' के विचार, 'ईश्वर' के वचनों और 'ईश्वर' के कार्यों को ही अपने मन में रखना चाहिये। अधिकांश समय हम अच्छे और बुरे के विरोधी विचारों में ही व्यतीत करते हैं, जो किसी संस्था या संस्थान को चलाने के लिए आवश्यक हो सकता है। फिर भी, जब तुम अच्छे और बुरे के परे जाकर केवल 'ईश्वर' के विचार ही मन में रखते हो, तब एक समय ऐसा आयेगा जब तुम्हारे शब्द भी केवल 'ईश्वर' के शब्द होंगे और अन्त में तुम्हारे कार्य भी 'ईश्वर' के कार्य होंगे। तुम ईश्वर का कार्य करने के लिए उसका (ईश्वर का) माध्यम बन जाओगे। यह इसी तरह होता है।''

एरच की बात से मैं आश्चर्यचकित था। यद्यपि मैं बौद्धिक रूप से इसे समझ गया, परन्तु अपने प्रतिदिन के जीवन में इसका मैं किस तरह अभ्यास करूँ, यह मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आया। मैंने परेशान होकर एरच से पूछा, ''मैं यह कैसे प्राप्त करूँ ?''

एरच ने कहा, ''उसकी कृपा के लिये प्रार्थना करो। उनसे प्रार्थना करो। उनके चरणों पर गिरो और निरंतर उनकी याद करो। यह सब लगन के साथ करो। केवल इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये अपने हृदय में गहरी तड़प पैदा करो। अपने हृदय में केवल यही एक और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण इच्छा रखो और यह इच्छा तुम्हारी दूसरी सभी इच्छाओं को जलाकर राख कर देगी। जब तुम ऐसा करते हो तब तुम अपने आध्यात्मिक स्वास्थ्य की देखभाल करते हो। जब तुम आध्यात्मिक रूप से

स्वस्थ हो जाते हो, उसकी कृपा तुम्हारे ऊपर अनिवार्य रूप से होती है और तुम ईश्वर हो जाते हो। ऐसा ही होता है।''

mudk gkuk

यद्यपि मैं मंडली के द्वारा सुनाई गई कहानियों के द्वारा दैवी मर्ज़ी और स्वतंत्र मर्ज़ी के बारे में बहुत कुछ सुन चुका था, फिर भी अपने प्रतिदिन के जीवन में उसे कार्यान्वित करने में मुझे कुछ संशय था। मुझे खासतौर से इस बात पर संदेह था कि किसी विशेष कार्य को करने में कोई व्यक्ति कितना प्रयास करे और फिर होने वाली असफलता को बाबा की मर्ज़ी के रूप में स्वीकार करे। इसलिये एक दिन अवसर मिलने पर, मैंने भाऊजी के सामने अपना संदेह रखा। ''भाऊजी, जब कोई व्यक्ति किसी ख़ास लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल हो जाता है, यह आशा की जाती है कि अगली बार वह पहले से अधिक प्रयत्न करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगा। वास्तव में ऐसी बहुत सी सच्ची कहानियाँ हैं जिसमें लोगों ने कई बार असफल होने पर भी, बार बार प्रयत्न किये और अन्त में सफल हुये। फिर भी, बहुत सी कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें लोगों ने बार बार प्रयत्न करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं की। हम यह कैसे समझें कि हम प्रयत्न करना कब छोड़ें और कब असफलता को दैवी मर्ज़ी समझकर स्वीकार करें। अपनी स्वतंत्र मर्ज़ी से किये गये कितने प्रयत्नों के बाद, हमें प्रयास नहीं करना चाहिये और उस स्थिति को दैवी मर्ज़ी के रूप में स्वीकार करना चाहिये ?''

जब मैंने भाऊजी से प्रश्न पूछा, वह चल रहे थे। उन्होंने रुककर, मेरा हाथ पकड़कर गंभीरतापूर्वक कहा, ''दैवी मर्जी और स्वतंत्र मर्ज़ी के बारे में मैंने या किसी अन्य व्यक्ति ने जो कुछ तुम्हें बताया है, वह सब कुछ भूल जाओ। और अब मैं तुम्हें जो कुछ बता रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनो। जो लोग उनके (बाबा के) हो गये हैं, उनके लिये स्वतंत्र मर्ज़ी जैसी कोई चीज़ नहीं है। इसलिये पूर्ण रूप से उनके होने की कोशिश करो। जब तुम उनके हो जाते हो, तुम उनकी इच्छा और उनकी मर्ज़ी के अनुसार कार्य

करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते। तुम्हारे द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य, अब तुम्हारा न होकर, उनका कार्य होता है। तुम दैवी कार्य में उनका हथियार बन जाते हो। ऐसे व्यक्ति के लिये केवल दैवी मर्ज़ी का अस्तित्व होता है। इसे भूलना नहीं। यह बात याद रखना।''

एक दूसरे अवसर पर मैंने एरच से एक प्रश्न पूछा जिसके उत्तर में उन्होंने इसी विषय पर बात की। ट्रस्ट में अपने प्रतिदिन के कार्य में, कई अवसर ऐसे आये हैं जब मेरी समझ में नहीं आता था कि किसी विशेष परिस्थिति में क्या करना उचित है। कई विकल्प सामने होने पर, मैं यह निश्चित नहीं कर पाता था कि किस विकल्प को अपनाने में बाबा प्रसन्न होंगे। इसलिये, एक दिन ट्रस्ट आफ़िस में, मैंने एरच के सामने अपनी समस्या बताई। मैंने उनसे पूछा, ''कई विकल्पों के सामने होने पर, हमें यह पूर्ण विश्वास किस तरह से हो कि जो विकल्प हमने चुना है, वह सही है और बाबा उससे प्रसन्न होंगे ?''

एरच ने उ त्तर दिया, ''सही और ग़लत के बारे में चिन्ता न करो। उनके हो जाओ और सही और ग़लत की देखभाल वह खुद ही कर लेंगे। जब तुम उनके हो जाते हो, तुम्हारे कार्य, तुम्हारे सीमित अहं द्वारा संचालित नहीं होते है। बल्कि उनका प्रेरणा स्रोत ईश्वर होता है। इसलिये सही और ग़लत के बारे में चिन्ता क्यों करते हो ? तुम्हारी मुख्य चिन्ता यह होनी चाहिये कि उनकी निरंतर याद किस तरह करो और उनके हो जाओ। अगर तुम इस काम में सफल होते हो, तो तुम्हें किसी और बात की चिन्ता नहीं करनी होगी। इसलिये व्यर्थ की बातें सोचकर अपने मन में भ्रम मत पैदा करो। इसके बजाय बाबा के बारे में सोचो, क्योंकि यह सारे भ्रम को समाप्त कर देगा। इस बात का ध्यान रखो कि चाहे तुम कोई काम करो या आरम्भ करो, तुम्हारे सारे प्रयत्नों का लक्ष्य निरंतर उनकी याद करना हो। उनके लिये यह करने की याद रखो। यह सब करने से तुम्हें उनका होने में मदद मिलेगी और जब तुम उनके हो जाओगे, सब कुछ अपनी जगह पर ठीक हो जायेगा।''

इससे मुझे प्रियतम बाबा का यह कथन याद आया, ''अगर तुम्हें चिन्ता करनी ही है, तो इस बात की चिन्ता करो कि मेरी निरंतर याद किस

तरह की जाये। यह बात चिन्ता करने योग्य है क्योंकि यह सभी चिन्ताओं को ख़त्म कर देगी।''

;g rEg b'oj rd y tk;xk

मंडली के साथ रहते हुए, मैंने यह ध्यान दिया कि हालांकि वे उन सभी प्रेमियों को, जो बाबा के उपदेशों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे, उत्साहित करते थे फिर भी उन लोगों को, जो स्वार्थपूर्ण या गलत ढँग से जीवन बिताना चाहते थे, मंडली जन कभी भी रोकते या निरुत्साहित नहीं करते थे। वास्तव में, ऐसा लगता था कि मंडली जन उन्हें भी उत्साहित करते थे। मनसारी से घनिष्ठ होने के कारण, मैंने मनसारी से इस बात का जिक्र किया। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि यह सब क्यों हो रहा था। इसको समझने में मेरी मदद करने के लिए मनसारी ने निम्नलिखित कहानी सुनाई।

''एक गाँव के बाहर एक सन्त रहता था जिसके दर्शन के लिये लोगों का समूह इकट्ठा हुआ करता था। जिस कमरे में सन्त रहता था उसमें एक मूर्ति थी जिसकी वह पूजा किया करता था। जो लोग उसके दर्शन के लिए आते थे, वे उसके साथ बैठकर भजन गाया करते थे। जो लोग सन्त के पास आते थे, उन सबको वह रोज़ के अपने कामों को करते हुये, निरंतर ईश्वर की याद करने के लिये उत्साहित किया करता था। ऐसा करने का सबसे आसान तरीका, ईश्वर की याद में भजन गाना या किसी धुन को गुनगुनाते रहना था। इस तरह ईश्वर की याद रोचक हो जाती थी। उसके भजन और उपदेशों के ख़त्म हो जाने के बाद, जाने के पहले सभी लोग एक एक करके संत के पास आते थे और वह सबको आशीर्वाद देता हुआ कहता था, 'मेरे बच्चे, तुम यह करते जाओ, इसे ज़्यादा से ज़्यादा करो क्योंकि एक दिन यह तुम्हें ईश्वर तक ले जायेगा।'

''सन्त का यह रोज़ का नियम था। एक दिन गाँव वालों के साथ साथ एक चोर भी सन्त के पास बैठा था। उसने सोने के गहने देखे जिनसे

मूर्ति को सजाया गया था। उसने उन्हें चुराने का निश्चय किया। सब लोगों के चले जाने और सन्त के अपने कमरे में सो जाने के बाद, वह चोर जो वहाँ छिप गया था, बाहर आया और उसने सारे गहने उतारकर एक थैले में रख लिये। जैसे ही वह चलने लगा, उसने सन्त की आवाज़ सुनी जो उसे आशीर्वाद दे रहे थे, 'मेरे बच्चे, तुम यह करते जाओ, इसे ज़्यादा से ज़्यादा करो क्योंकि एक दिन यह तुम्हें ईश्वर तक ले जायेगा।'

''सन्त को मूर्ति के बगल में खड़े देखकर, चोर को आश्चर्य हुआ। वह सन्त के आशीर्वाद से और अधिक घबड़ा गया। उसने सन्त से पूछा, 'हे पवित्र आत्मा, मेरी समझ में नहीं आता कि आप मुझे चोरी का काम करते रहने का आशीर्वाद क्यों दे रहे हैं।' सन्त ने दयापूर्वक मुस्कुराते हुये कहा, 'मेरे बच्चे, मैं जानता हूँ कि तुम एक चोर हो और तुमने मूर्ति के सोने के गहने चुरा लिये हैं। मैंने तुम्हें चोरी करते रहने के लिए आशीर्वाद दिया है और इसका कारण बहुत सीधा है। जब तक तुम इस काम को इस हद तक नहीं करते हो कि तुम इससे ऊब जाओ, तुम ईश्वर की ओर नहीं मुड़ोगे। इसलिये जब तक तुम्हारा मन चोरी से पूरी तरह ऊब न जाये, तुम इसे करते रहो और तब तुम स्वाभाविक रूप से इसे छोड़ दोगे और ईश्वर की खोज करोगे। मेरे बच्चे, मैंने इसीलिये तुम्हें आशीर्वाद दिया।'

''चोर ने सन्त के शब्दो में छिपे हुये ज्ञान को समझा और सन्त से क्षमा माँगी। उसने भविष्य में चोरी न करने का वादा भी किया।''

मनसारी ने अन्त में कहा, ''अक्सर किसी ग़लत आदत में इसकी चरम सीमा तक लिप्त रहने के बाद, व्यक्ति इससे ऊब जाता है और अन्ततः इससे उसे उस आदत को छोड़ने में सहायता मिलती है।''

/kkfeZd laLdkj vkj 'kkL=fof/k;k¡

एक तीर्थयात्री ने एरच को अपने डर के बारे में बताते हुये कहा, ''मैंने देखा है कि मेहेराबाद में रहने वाले लोगों और तीर्थयात्रियों द्वारा किये जाने वाले कुछ कार्य अन्ततः धार्मिक संस्कार और शास्त्रविधियाँ (Rites and Rituals) बन सकते हैं। यह बात ऐसी है जिसे मेहेरबाबा कभी पसंद

नहीं करते थे और वह यह नहीं चाहते थे कि उनके प्रेमी यह सब करें। इन कार्यों को मंडली क्यों नहीं रोकती ? वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि मंडली ऐसे कार्यों को बढ़ावा दे रही है।''

एरच ने काफी देर तक चुप रहने के बाद उत्तर दिया, ''बाबा की योजना के अनुसार, उनके पुनः आगमन के लिये, स्थितियों का बिगड़ना ज़रूरी है। उन्होंने हमें बताया है कि जब वह हमारे बीच आते हैं उस समय किस तरह से केवल कुछ ही लोग उन्हें पहचानते और उनके शुद्ध प्रेम के संदेश का अनुसरण करते हैं। उनके जाने के बाद, दुनियाँ के लोग धीरे धीरे उनके पास आने और उनकी पूजा करने लगते हैं। शुरू में यह पूजा दिल से होती है, लेकिन समय के साथ साथ जैसे जैसे लोगों की संख्या बढ़ने लगती है, नये नये नियम बनते हैं और कुछ समय बाद वही नियम परंपरा बन जाते हैं। अन्ततः धार्मिक संस्कारों और शास्त्रविधियों के आवरण में यह एक धर्म बन जाता है।

''प्रत्येक धर्म अन्ततः दलों में बँट जाता है जिसका नेतृत्व अलग अलग लोग करते हैं और शक्ति के लिए आपस में संघर्ष शुरू हो जाता है। बाबा की योजना के अनुसार हर बार ऐसा ही होता है और इसीलिये इस बार भी ऐसा ही होगा। अगर ऐसा नहीं होता है, तो वह फिर से कैसे आयेंगे ? बाबा के शब्दों में, 'युग युगान्तर में जब जब सत्य की ज्योति धीमी हो जाती है, उस समय सत्य, और प्रेम की ज्योति को पुनः प्रज्वलित करने के लिए, मैं फिर से आता हूँ।' उनके अवतरण के लिये स्थितियों का बिगड़ना ज़रूरी है और वह बिगड़ी हुई स्थिति को नवजीवन देने के लिये आते हैं। यह इसी तरह होता है।''

थोड़ी देर रुककर एरच फिर बोले, ''बाबा अपने दैवी कार्य के लिये अपनी मंडली का इस्तेमाल करते हैं। इसलिये यह स्वाभाविक है कि वह मंडली के माध्यम से उन घटनाओं का बीजारोपण करेंगे जिनसे अन्ततः धार्मिक संस्कार, शास्त्र विधियाँ और धर्म का निर्माण होगा और बाद में इसका क्षय होगा। लेकिन अभी तुम इन सब बातों को क्यों सोच रहे हो? यह शुद्ध प्रेम का मौसम है। इसका पूरा लाभ उठाओ। वह हमारे स्तर पर नीचे उतरकर इस संदेश के साथ आये हैं कि अगर हम उनसे प्रेम करते

हैं तो वह हमें ऊपर उठाकर अपने स्तर तक ले जायेंगे और हम उनके साथ मिल जायेंगे। इसलिये उन पर ध्यान केन्द्रित करो। यथाशक्ति उनकी याद ज़्यादा से ज़्यादा करो। इन सब बातों से परेशान न होओ। ये सब बातें बहुत बाद में घटित होंगी जब तीर्थयात्रा शुरू होगी और पूरा विश्व उनके पास आ जायेगा। तुम कुछ लोग, जो उनके पास अभी आये हो, बहुत भाग्यशाली हो। तुम लोग उनसे जैसे चाहो, प्रेम कर सकते हो क्योंकि अभी कोई क़ायदा या कानून नहीं है। इस समय तुम्हारा हृदय जो चाहता है, वह करने की पूरी स्वतंत्रता है। इसीलिये मैं कहता हूँ कि इस अवसर का पूरा लाभ उठाओ क्योंकि यह शुद्ध प्रेम का मौसम है। तीर्थयात्रा बाद में होगी।''

यह समझाने के लिये कि धार्मिक संस्कार और शास्त्रविधियाँ किस प्रकार बनते हैं, एरच ने निम्नलिखित कहानी सुनाई–

''एक पादरी ने बाबा के बारे में पढ़ा और उनके सत्य और प्रेम के संदेश से प्रभावित हुआ। फिर भी बाबा ने धार्मिक संस्कारों और शास्त्रविधियों के बारे में जो कहा था, उसके कारण वह बाबा को पूरी तरह स्वीकार करने में हिचकिचाता था। बाबा चाहते थे कि हम धार्मिक संस्कार और शास्त्र विधियों को छोड़ दें और पादरी की कमाई इसी से थी। बाबा के प्रति उसका प्रेम, अन्ततः उसे समाधि पर लाया और फिर वह मेहेराज़ाद आया। यहाँ के वातावरण ने उसके हृदय को प्रभावित किया और उसने साहस करके मंडली से यह प्रश्न पूछा जो उसे परेशान कर रहा था। उसका प्रश्न था, 'क्या बाबा ने कहा है कि हम सारे धार्मिक संस्कार और शास्त्रविधियाँ छोड़ दें ? यह मेरी नौकरी है और मैं इसे हृदय से प्रेम के साथ करता हूँ। इस पर मंडली ने कहा, 'यह सच है कि बाबा ने ऐसा कहा है लेकिन धार्मिक संस्कार या शास्त्रविधियाँ क्या हैं ? तुम हृदय में प्रेम के साथ जो कुछ भी करते हो वह कभी भी धार्मिक संस्कार या शास्त्र विधि नहीं माना जा सकता है। और कोई भी काम, जो तुम यांत्रिक रूप से करते हो, यहाँ तक कि एक फूल चढ़ाना भी, धार्मिक संस्कार हो सकता है।' यह सुनकर पादरी बहुत खुश हुआ क्योंकि वह अपने कार्य को वास्तव में हृदय में प्रेम के साथ करता था।''

ckck dk pkgus dk lkgl djuk

मनी की मृत्यु के लगभग दो साल पहले, पश्चिमी समाज में समलिंगता के बारे में काफ़ी विवाद पैदा हो गया था। ऐसा प्रतीत होता था कि इस विवाद ने पश्चिमी बाबा प्रेमियों को दो दलों में विभाजित कर दिया था। दोनों दलों के बाबा प्रेमियों की ओर से मंडली के लिये पत्रों की बरसात हो रही थी– एक दल इसके पक्ष में था और दूसरा दल इसके विरोध में था। जैसा कि मेरा स्वभाव था, मैं सभी विवादों से, जिसमें यह भी शामिल था, दूर रहता था। जब कभी मेहेराबाद में रहने वाले प्रेमियों और तीर्थयात्रियों के बीच इस विषय पर कोई चर्चा होती थी, मैं वहाँ से चला जाता था और इसमें भाग नहीं लेता था। यह विवाद लम्बे समय तक चलता रहा क्योंकि इसका हल आसान नहीं था।

हालांकि मैं किसी भी विवाद में न पड़ने की पूरी कोशिश कर रहा था, फिर भी मैंने इस विवादास्पद विषय पर मनी को यह कहते हुये सुना। मनी ट्रस्ट आफ़िस में थीं और मैं किसी काम से उनके पास गया था। जब मैं उनसे काम के विषय में बात कर रहा था, पश्चिम से उनके पास फ़ोन आया। दूसरी ओर से फ़ोन करने वाला व्यक्ति मनी से पूँछ रहा था कि क्या कभी बाबा ने किसी भी समय समलिंगता के प्रति अपनी असहमति जताई थी। मैं वहाँ से आना चाहता था ताकि मनी स्वतंत्रता पूर्वक बात कर लें लेकिन जब मैंने मनी से इशारे से पूछा तो उन्होंने मुझे रुकने के लिये कहा।

उनकी बातचीत की ओर ध्यान न देने की मैंने पूरी कोशिश की। फिर भी, मेरे मन में यह जानने की उत्सुकता हुई कि इस विषय में मनी के क्या विचार होंगे। ऐसा लगता था कि मनी मेरे मन की बात जान गईं क्योंकि जैसे ही उन्होंने टेलीफोन का रिसीवर रखा, उन्होंने सीधे मेरी आँखों में देखते हुए कहा, ''प्रश्न यह नहीं है कि तुम समलैंगिक हो या विपरीत लैंगिक।'' मनी ने फिर ज़ोर देकर कहा, ''अगर तुम बाबा को चाहते हो तो तुम्हें काम वासना के परे जाना होगा। बाबा को पाने से पहले, तुम्हें

अपनी वासनापूर्ण इच्छाओं में लिप्त होने का त्याग करना पड़ेगा। बाबा को पाना इतना आसान नहीं है। मिथ्या अहं को पूरी तरह से समाप्त करना होगा। इसे याद रखो।''

कुछ समय बाद, इस विषय पर वाद विवाद समाप्त हो गया। फिर भी, उन लोगों के लिये, जो बाबा को चाहने का साहस करते हैं, मनी ने यह प्रभावशाली संदेश दिया।

viuh detkfj;k e ckck dk vkef=r djk

बाबा का एक संदेश है, ''जब भी तुम गुस्सा होते हो अथवा तुम्हारे मन में वासनापूर्ण विचार आते हैं, तुरंत बाबा की याद करो। इस प्रकार तुम अवांछित विचारों को, अवांछित कार्यों में परिवर्तित होने से रोक सकते हो।''

कई सालों तक मेहेराबाद में रहने और इस संदेश के अनुसार जीवन व्यतीत करने की पूरी कोशिश करने के बाद, मैं बहुत निराश हो गया क्योंकि मैं केवल उनकी याद करके अपने गुस्से और अन्य विचारों पर काबू नहीं कर पाता था। इसलिये एक दिन, जब एरच खाली थे, मैं उनके पास गया और पूछा, ''एरच, बाबा ने कहा है कि उनकी याद करके हम अपनी इच्छाओं के अनुसार कार्य करने से बच सकते हैं। मैं बराबर कोशिश करने के बावजूद, ज़्यादातर असफल हो जाता हूँ। इच्छा की शक्ति, मुझे इसके अनुसार कार्य करने के लिये मज़बूर कर देती है भले ही मैं उनकी कितनी ही याद करूँ। मैं अपनी इच्छाओं से हार जाता हूँ। क्या मुझे इसके अलावा कुछ और भी करना चाहिए ?''

एरच के सीधे उत्तर से मैं चकित हो गया। उन्होंने कहा, ''जैसे ही तुम अपनी इच्छाओं में लिप्त होना शुरू करो, उनको भी इस कार्य में भाग लेने के लिए आमंत्रित करो।'' मैंने सोचा एरच मज़ाक कर रहे थे, लेकिन

मैंने उन्हें गंभीर देखा। मैं अभी भी निश्चय नहीं कर पा रहा था कि एरच गंभीर थे या नहीं, इसलिये मैंने पूछा, ''क्या आप गंभीर है ?''

''हाँ, अपनी कमज़ोरियों, अपनी इच्छाओं में भाग लेने के लिये, उन्हें आमंत्रित करो।''

मैं अभी भी उनकी बात के सदमे से बाहर नहीं आया था। मैंने कहा, ''ऐसा करना उचित नहीं लगता।''

एरच को आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा, ''लेकिन क्यों ?''

मैंने कहा, ''एक दैवी हस्ती को स्थूल जगत के किसी कार्य में भाग लेने के लिए, जिसे हम जानते हैं कि ग़लत है, आमंत्रित करना ठीक है ? यह मुझे ईश्वर की निंदा करना लगता है।''

कुछ देर चुप रहने के बाद एरच ने कहा, ''अगर एक कमरे में अँधेरा है तो अँधेरा दूर करने के लिए तुम क्या करते हो ?''

मैंने कहा, ''एक प्रकाश के स्रोत, जैसे कि मोमबत्ती, लैम्प या बिजली को कमरे में लाते हैं।''

एरच ने कहा, ''बिल्कुल यही मैं कह रहा हूँ। अपनी इच्छाओं के अँधेरे में दैवी प्रकाश के स्रोत को लाओ और अँधेरा दूर हो जायेगा।''

एरच जो कुछ कह रहे थे, मेरा मन अभी भी उसे स्वीकार नहीं कर रहा था। मैंने फिर कहा, ''एक अनैतिक कार्य में भाग लेने के लिये उन्हें आमंत्रित करूँ ?''

एरच ने कहा, ''याद रखो कि वह हर जगह हर समय मौजूद हैं। ऐसा कोई भी क्षण नहीं है जब वह तुम्हारे साथ या तुम्हारे अंदर मौजूद न हों। जब तुम उन्हें आमंत्रित करते हो, उन्हें तुम्हारे पास आना नहीं पड़ता। वह वहाँ पहले से ही हैं। तुम्हारा निमंत्रण केवल उनकी मौजूदगी के प्रति, जो कि निरंतर तुम्हारे साथ हैं, तुम्हारी सतर्कता को बढ़ाता है। वह कभी अनुपस्थित नहीं होते हैं। उनकी उपस्थिति के प्रति तुम सचेत नहीं होते हो। तुम्हारे जीवन में कभी ऐसा अवसर आया होगा जब तुम किसी पार्टी

में गये होगे। वहाँ बहुत से दोस्त मौजूद होंगे लेकिन किसी दोस्त के साथ या किसी काम में व्यस्त रहने से तुम उनमें से किसी को न तो देखते हो, न ही उनसे मिलते हो। क्या तुम्हें कभी ऐसा अनुभव हुआ है। बाबा को आमंत्रित करना भी इसी तरह है। सही—ग़लत, नैतिक—अनैतिक, इच्छाओं में हम इतने अधिक व्यस्त रहते हैं कि उनकी उपस्थिति की ओर, जो हर समय हमारे साथ निरंतर है, ध्यान नहीं देते। इसलिये प्रतिदिन किये जाने वाले अपने कामों में उनको आमंत्रित करके, इस सतर्कता को पैदा करो। सारे कामों का अर्थ सारे कामों में आमंत्रित करना है। वह पहले से तुम्हारे अन्दर मौजूद हैं। यह तुम्हारे ऊपर निर्भर है कि तुम उनकी उपस्थिति के प्रति सतर्कता को पैदा करो।''

हालांकि मेरे हृदय ने एरच की बात को मान लिया, मेरे मन में संदेह रहा। एरच के शब्दों को कुछ सीमा तक आचरण में लाने में सफल होने से पहले कई सालों के कष्ट के बाद यह संदेह खत्म हुआ।

NkVh&NkVh ckrk ij /;ku u nk

एक बार जब मैं मंडली हाल में था, मनी ने बताया—

''हम लोग, महिला मंडली, जब बाबा के पास आये, बहुत बेवकूफ़ थे। हम लोग छोटी छोटी बातों पर लड़ते थे। अगर किसी ने मेरी सुई लेकर वापस नहीं की तो लड़ाई हो जाती थी अथवा मैंने किसी की कैंची ले ली, तो झगड़ा हो जाता था। हम लोग हमेशा छोटी छोटी बातों पर ही लड़ते थे। यह बड़े दुख की बात थी। हम लोग बड़ी बातों पर कभी नहीं लड़ते थे। बाबा, ईश—पुरुष, अवतार अपनी उपस्थिति में रहने का हमें दुर्लभ अवसर देते हुये हमारे साथ, हमारे बीच में थे और फिर भी, छोटी—छोटी चीज़ें, जिनसे हम आकर्षित थे और जिन्हें हम छोड़ नहीं सकते थे, हमें यह भूल जाने के लिये मज़बूर कर देती थीं कि हमें इस अवसर का, जो उन्होंने हमें उनकी उपस्थिति में डूब जाने, हर समय उनकी उपस्थिति में रहने का दिया है, भरपूर लाभ लेना चाहिये।

''ऐसे अवसरों पर, उनके साथ होते हुये थी, हम उनके साथ नहीं होते थे और इस तरह उनकी उपस्थिति में रहने का फ़ायदा नहीं उठाते थे। बीती बातों को सोचने पर लगता है—काश, हमारी लड़ाइयाँ और ईर्ष्या बड़ी बड़ी बातों पर होतीं। हम 'बाबा से ज़्यादा प्रेम करने, उनकी आज्ञाओं का अक्षरशः पालन करने', अथवा 'और अधिक नम्र होने' के बारे में कभी नहीं लड़ते थे। ये विषय लड़ने लायक हैं। मैं युवाओं को, जो उनके प्रेम के प्रति आकर्षित होते हैं, यही ग़लती करते हुये देखती हूँ। सही और ग़लत, मेरा और तुम्हारा, इन छोटी—छोटी बातों पर लड़ने में अपना समय और शक्ति बरबाद न करो। इन सब पर ध्यान न दो। तुम्हें यह जो क़ीमती अवसर मिला है, उससे लाभ उठाने में अपने समय का प्रयोग करो। उनकी उपस्थिति को अपने हृदय में समा लो ताकि उनकी उपस्थिति तुम्हारा जीवन बन जाये। हम लोग अक्सर एक छोटे बच्चे की तरह व्यवहार करते हैं जो एक नकली हार पकड़ लेता है और असली हार देने पर भी उसे नहीं छोड़ता। नकली आभूषण को छोड़कर, असली आभूषण को पकड़ना सीखो।''

जब भी मैं अपने आपको, ''मैं सही हूँ, तुम ग़लत हो,'' की स्थिति में फँसा हुआ पाता हूँ, या फिर अपने आपको काम में बहुत अधिक व्यस्त पाता हूँ, मुझे हमेशा मनी की बात याद आती है।

y{; dk er Hkyk

एरच हमें अक्सर मार्ग से भटकाने वाले आकर्षणों के प्रति सावधान करते थे और बताते थे कि इनके आकर्षण में फँसकर हमारा ध्यान किस तरह दूर चला जाता है। मेहेराबाद में लम्बे समय से रहने वाले एक प्रेमी और एरच के बीच निम्नलिखित घटना हुई। घटना के समय, बैंक अथवा वित्त संबंधी संस्थानों में जमा किये गये धन पर ब्याज की दर १८% की कानूनी सीमा से अधिक नहीं हो सकती थी। फिर भी, लोग अधिक ब्याज के लिये, कभी कभी ३६—५०% तक, निजी संस्थानों में अपना धन जमा करते थे। इस प्रेमी के सामने किसी व्यक्ति ने कानूनी सीमा से बहुत

अधिक ब्याज देने का प्रस्ताव रखा। वह मेरे पास आकर, इस बारे में मेरी सलाह पूछने लगा। अपनी आदत के अनुसार, मैंने उसे एरच के पास जाने को कहा लेकिन मैं भी यह जानने के लिए उत्सुक था कि एरच इस बारे में क्या कहते हैं। वह प्रेमी एरच के पास जाकर इस बारे में उनकी सलाह माँगने लगा। एरच ने बहुत परेशान होकर गुस्से से कहा, "जाओ और जो तुम्हारे मन में आये, करो। तुम मुझसे इस बारे में क्यों पूछते हो ? ऐसा लगता है कि तुम यह करना चाहते हो और मैं जो भी कहूँगा, उस पर तुम ध्यान नहीं दोगे। इसलिये तुम जो चाहो, करो और मुझसे इस बारे में बात मत करो। तुम अपनी मर्ज़ी के अनुसार काम करने के लिए स्वतंत्र हो।"

एरच की प्रतिक्रिया से वह प्रेमी और मैं आश्चर्यचकित हो गये। प्रेमी ने एरच से प्रार्थना की कि वह वास्तव में नहीं जानता था कि वह क्या करे और उसने फिर से एरच की सलाह माँगी। एरच ने बहुत देर तक प्रेमी की ओर देखने के बाद अविश्वास से सर हिलाया और अन्त में, ज़ोर देकर कहा, "तुम यहाँ जिस उद्देश्य से आये हो, उसे कभी मत भूलो। तुम्हारा सामना बहुत से भटकाने वाले आकर्षणों से होगा और इनमें फँसकर तुम यहाँ रहने के अपने उद्देश्य को भूल जाओगे। किसी न किसी कारण से छोटे आकर्षणों में फँसने के बाद, तुम दूसरे बड़े आकर्षणों में फँस जाओगे। यह आकर्षण बीज की तरह हैं, जिन्हें तुम पानी से सींचोगे तो वह बढ़कर पूरा पेड़ बन जायेगा। इसलिये सावधान रहो और रोज़ अपने आपको उस उद्देश्य की याद दिलाओ जिसके लिये तुम यहाँ आये हो। दिन का काम ख़त्म होने पर, गंभीरतापूर्वक विचार करो और देखो कि तुम्हारे दिन में किये गये काम तुम्हें लक्ष्य के पास ले जा रहे हैं अथवा लक्ष्य से दूर।"

इस समय मुझे दो कथन याद आ रहे हैं। पहला भगवान बुद्ध का है, "अपनी इच्छाओं में थोड़ा सा लिप्त होओ और तुम्हारी इच्छायें, एक बच्चे की तरह बढ़ती जायेंगी।" दूसरा कथन मेहेरबाबा का है, "प्रत्येक क्षण, जिससे तुम्हारा सामना होता है, या तो माया की पकड़ मज़बूत करता है अथवा तुम्हें सत्य तक पहुँचाता है।"

एक दूसरे अवसर पर, आध्यात्मिक मार्ग से भटकाने वाले आकर्षणों के प्रति, तीर्थयात्रियों को सतर्क करने के लिये, एरच ने यह कहानी सुनाई।

"क्या तुमने कभी खजुराहो के मंदिर के बारे में सुना है जो मध्य भारत में स्थित है ? यह पर्यटकों का बहुत प्रसिद्ध आकर्षण है। पूरे भारत से और विदेशों से लोग इस मंदिर को देखने आते हैं। तुम जानते हो, लोग क्यों आते हैं ? इस मंदिर में ऐसी क्या ख़ास बात है ? मंदिर की बाहर की दीवारों पर संभोग में रत पुरुषों और स्त्रियों के चित्र खोदकर (Carvings) बनाये गये हैं। इन खुदाइयों में दिखाये गये दृश्य बहुत ही भद्दे और कामोत्तेजक हैं। संभोग की प्रत्येक शारीरिक स्थिति को, जिसकी तुम कल्पना कर सकते हो, बाहरी दीवारों पर दिखाया गया है। फिर भी, मंदिर के अंदर का भाग सादा है और इसमें ईश्वर की मूर्ति है। अधिकांश पर्यटक; जो वहाँ आते हैं, बाहरी दीवारों पर खोदे गये चित्रों से मुग्ध हो जाते हैं और इन्हें देखने में घंटों बिता देते हैं। अधिकांश लोग मंदिर के अन्दर गये बिना ही लौट जाते हैं। क्या तुम जानते हो कि इसे ऐसा क्यों बनाया गया है ? यह एक परीक्षा है जिससे यह पता चलता है कि क्या आत्मा इतनी शुद्ध है कि मंदिर में प्रवेश करने से पहले, जिसकी तुलना ईश्वर की देहरी से की जा सकती है, बाहर के आकर्षणों का सामना कर सके। अगर आत्मा शुद्ध है और उसमें चरित्र की दृढ़ता है तो वह बाहर के आकर्षणों में न फँसकर, ईश्वर प्राप्ति के अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगी जिसकी तुलना मंदिर के अंदर के भाग से की जा सकती है। बाबा के साथ भी ऐसा ही है। अपना ध्यान लक्ष्य पर केन्द्रित करो और सीधे लक्ष्य तक जाओ। मार्ग के आकर्षणों में फँसकर अपने लक्ष्य से न भटको।"

feF;k dh 'kfä

मुझे अक्सर आश्चर्य होता था कि बाबा के निकट रहने वाले लोग, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने बाबा के दर्शन किये थे, ऐसे कामों में लिप्त हो जाते थे जिनसे बाबा नाराज़ हों और जिनके बारे में बाबा ने स्पष्ट रूप से चेतावनी दी थी और इस प्रकार वह बाबा की रीतियों से दूर चले जाते थे। कुछ घटनाओं में, कुछ ऐसे प्रेमी, जिन्होंने बाबा के दर्शन किये थे, अपने आपको गुरु घोषित करने लगे। ऐसा ही एक व्यक्ति यह दावा करने लगा कि बाबा ने उसके हृदय में अपना मौन तोड़ा था और अब

वह अवतार था। कुछ लोग बाबा के साथ अपने सम्पर्क का प्रयोग नये प्रेमियों को आकर्षित और प्रभावित करने में करने लगे ताकि वह उनसे धन निकलवा सकें और कुछ लोग तो महिलाओं के साथ संबंध भी स्थापित करने लगे।

मेहेराबाद में रहते समय, मैंने मेहेराबाद आने वाले बाबा प्रेमियों में यही बात देखी। यद्यपि लोग बाबा के लिए आते थे, फिर भी कुछ लोगों का ध्यान बाबा के ऊपर से हट जाता था ओर वे व्यवसाय, लिंग अथवा सत्ता से संबंधित कार्य के लेन देन में लिप्त हो जाते थे। मैं मेहेराबाद में यह सब होते हुए देखकर परेशान होता था और मुझे आश्चर्य होता था कि बाबा, सर्वशक्तिमान् ईश्वर, यह सब वहाँ घटित होने से रोकने में क्यों असमर्थ थे। इसलिये, अवसर मिलते ही मैंने यह विषय एरच के सम्मुख रखते हुये पूछा, ''एरच, ऐसा क्यों है कि बाबा प्रेमी, चाहे वे बाबा के समय के हों अथवा इस समय हों, मेहेराबाद जैसे पवित्र स्थान में भ्रष्ट, ग़ैरकानूनी, नैतिक रूप से ग़लत कार्यों में लिप्त हो जाते हैं। ईश्वर होते हुए भी, बाबा यह सब होने से क्यों नहीं रोक सकते ? ऐसे लोगों को बाबा आसानी से अपनी एक झलक दिखा सकते हैं अथवा उनके मन में एक पश्चाताप से भरा विचार पैदा कर सकते हैं जो उनके व्यवहार को बदलकर, यह सब रोक सकता है। यह सब यहाँ पर क्यों होता है ?''

एरच ने कहा, ''दिव्यता (divinity) की देहरी पर मिथ्या की शक्ति अपनी चरम सीमा पर होती है। माया, जो कि अज्ञानता का स्रोत है, एक आत्मा को ईश्वरत्व का लक्ष्य प्राप्त करने से रोकने के लिये, उसे मिथ्या द्वारा लुभाती है। हमें मिथ्या के ऐसे आकर्षणों के प्रति सतर्क रहना और बाबा पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। मिथ्या का स्वभाव तुम्हें लुभाना है और इसीलिये यह तुम्हें इन्द्रियों के क्षणिक सुख जैसे कि धन, इन्द्रिय सुख अथवा सत्ता सुख से आकर्षित करता है। हालांकि इन मिथ्या चीज़ों से मिलने वाला सुख क्षणिक होता है फिर भी, अगर आत्मा का ध्यान बाबा पर केन्द्रित नहीं है, तो यह दिव्यता की देहरी पर भी इन मिथ्या चीज़ों की प्राप्ति से मिलने वाले सुख की ओर आकर्षित हो जाती है। जो आत्मा ऐसे आकर्षणों के जाल में फँस जाती है, वह दिव्यता की देहरी को पार करने पर मिलने वाले यथार्थ, स्थायी सुख से वंचित हो जाती है।

''मिथ्या भ्रम से सावधान रहें। क्योंकि यह चीज़ें बेचने वाले मनुष्य की तरह है। क्या तुमने कभी कपड़े की दुकान पर जाकर, कपड़ा बेचने वाले आदमी को देखा है कि वह किस तरह अपना सामान बेचता है। अगर तुमने अपनी ज़रूरत के बारे में पक्का निश्चय नहीं किया है तो वह इसे तुरंत समझ लेता है और तुम्हें उन चीज़ों के प्रति आकर्षित करने की कोशिश करता है जिसे तुम नहीं खरीदना चाहते। वह अलग अलग रंगों के आकर्षक कपड़े दिखाता जाता है और तुमसे उन्हें छूने अथवा पहनकर देखने के लिये कहकर तुम्हें आकर्षित करने की कोशिश करता है। जैसे ही तुम थोड़ी रुचि दिखाने लगते हो, वह तुम्हें विश्वास दिलाने लगता है कि कपड़े की कीमत बिल्कुल सही है और तुम्हें एक कपड़े का टुकड़ा और ले लेना चाहिये क्योंकि अब ऐसे केवल दो टुकड़े शेष बचे हैं। और दुकान से निकलने के बाद तुम पाते हो कि सिर्फ़ एक कमीज़ खरीदने के बजाय तुमने पोशाकों के पूरे दो सेट खरीद लिये हैं। इसी प्रकार मिथ्या भ्रम कार्य करता है। यह कपड़ा बेचने वाले की तरह, पूरे समय तुम्हें इन्द्रियों के सुखों के प्रति आकर्षित करता रहता है। यही कारण है कि यहाँ आने के बाद भी तुम लोगों को भटकते हुये देखते हो।''

तब एरच ने निम्नलिखित कहानी सुनाई, ''मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊँगा जिससे तुम इस बात को और अधिक अच्छी तरह समझ सकोगे। एक बार ईश्वर और शैतान के बीच द्वन्द्व युद्ध (दो लोगों में लड़ाई) हुआ। यह युद्ध इस बात को लेकर था कि सबसे अधिक पुरुषों और स्त्रियों की आत्माओं को कौन जीत सकता था। शैतान द्वन्द्व युद्ध के लिये तैयार हो गया लेकिन उसने ईश्वर से कुछ हथियार माँगे। इसलिये ईश्वर ने उसे कुछ हथियार देने का वादा किया जिनसे वह पुरुषों और स्त्रियों को आकर्षित कर सके। ईश्वर ने शैतान को भौतिक धन दौलत, जैसे कि जायदाद, जेवर और धन आदि दिये। शैतान इससे खुश नहीं हुआ और बोला, 'यह अच्छा है लेकिन पर्याप्त नहीं है, क्योंकि कुछ आत्मायें ऐसी हैं जो आपके प्रेम के लिए सब कुछ छोड़ देंगी।'

''इसलिये ईश्वर ने उसे नशे का हथियार दिया, जैसे कि शराब, नशे की दवायें आदि। शैतान अभी भी खुश नहीं हुआ और बोला, 'यह उसकी

तुलना में अधिक अच्छा है लेकिन अभी भी कुछ ऐसी बेवकूफ़ आत्मायें हैं जो आपके प्यार के लिये इन सुखों का भी त्याग कर देंगी। यह लड़ाई बराबर की नहीं है।'

''इसलिये ईश्वर ने उसे वासना का हथियार दिया। जैसे ही शैतान को यह हथियार मिला, वह खुशी की अधिकता से हँसते हुए ईश्वर से बोला, 'मैं इंतजार कर रहा था कि आप कोई ग़ल्ती करें और मुझे ऐसी ही कोई चीज़ दें। इन हथियारों से मैं लगभग सभी आत्माओं को जीत सकता हूँ। अपनी ग़ल्ती से आप यह लड़ाई हार गये।'

''शैतान के ऐसा कहने पर, ईश्वर ने अपनी ग़ल्ती को अनुभव किया और वह रोने लगे क्योंकि वह जानते थे कि अब मनुष्यों की आत्माओं को जीतना मुश्किल होगा। ईश्वर के यही आँसू, लोगों के हृदयों में गिरे और उनके पापों को धो दिया। ये आँसू जिनके हृदयों में गिरे, वे इनके स्रोत की ओर मुड़कर देखने लगे कि, ये कहाँ से आ रहे थे और इस क्रिया से वे ईश्वर की ओर मुड़ने लगे।''

एरच ने अन्त में कहा, ''यह ऐसे ही होता है। हर व्यक्ति के अंदर ईश्वर और शैतान के बीच निरंतर द्वन्द्व युद्ध होता रहता है। अपने अंदर जाओ और समझो कि यह सब तुम्हारे अंदर है। एक ओर, भौतिक वस्तुओं को प्राप्त करने का नशा, और वासना का आकर्षण तुम्हारे हृदय को लुभाने की कोशिश कर रहा है, और दूसरी ओर ईश्वर साक्षात्कार का शाश्वत् आनन्द तुम्हें बुला रहा है।''

एरच ने कहा, ''पीड़ित मानवता के लिये मेहेरबाबा का अवतरण, ईश्वर द्वारा बहाये गये आँसुओं की तरह है जो मानवता को जगाने के लिये लोगों के हृदयों में गिरे। इसलिये यह समय जागने का है। इस अवसर को व्यर्थ न जाने दो। इच्छाओं और अभावों का कोई अन्त नहीं है। वह तुम्हें 'वह' देने आया है जिसे पाने के बाद, तुममें कोई इच्छा या अभाव शेष नहीं रहेगा। इसलिये उन्हें पाने की इच्छा उत्पन्न करो और सदैव के लिये स्वतंत्र हो जाओ।''

dkbl vklfä er j[kk

हमें कोई इच्छा या आसक्ति न रखने के लिये उत्साहित करने के लिये, एरच हमें निम्नलिखित कहानी सुनाते थे जिससे पाठकों को अनासक्ति (detachment) का महत्त्व समझ में आयेगा।

''एक गाँव में एक गुरु आया। लोग गुरुओं की ओर अपने आप आकर्षित होते हैं। गाँव वाले उसके पास केवल आशीर्वाद लेने ही नहीं आते थे बल्कि उनमें से कुछ उसके साथ रहकर, उसकी सेवा करने लगे और उसके शिष्य हो गये। कुछ सालों के बाद, गुरु ने निर्णय लिया कि गाँव में उसका काम ख़त्म हो गया था और उसे गाँव छोड़कर जाना चाहिये। इसलिये उसने अपने शिष्यों को वापस संसार में जाने और सांसारिक जीवन व्यतीत करते हुए, उन सभी बातों का अभ्यास करने का, जो उसने उन्हें सिखायी थीं, निर्देश दिया। उसने उन्हें ईश्वर का ध्यान करने, ईश्वर का नाम जपने, अनासक्ति का अभ्यास करने, काम में ईमानदार होने, हर व्यक्ति और हर वस्तु से प्रेम करने और हर परिस्थिति में ईश्वर की मर्ज़ी के अधीन होने के लिये उत्साहित किया। हालांकि सभी शिष्यों ने गुरु की आज्ञा मानना स्वीकार कर लिया लेकिन उनमें से एक शिष्य ने गुरु की आज्ञा मानने के बजाय, गुरु के साथ जाने की ज़िद की।

''गुरु जानते थे कि शिष्य के लिये दुनियाँ में रहना और ईश्वर की खोज करना, उनके साथ जाने की अपेक्षा अधिक लाभदायक था और उन्होंने उसे यह बताया। शिष्य ने सोचा कि गुरु उसे साथ न ले जाने के लिये बहाने बना रहे थे और वह गुरु के साथ जाने की ज़िद करता रहा। अन्त में गुरु मान गये। लेकिन उन्होंने शिष्य की दृढ़ता की परीक्षा लेने के लिये, एक शर्त रखी। उन्होंने शिष्य को पास में बहने वाली नदी के किनारे एक झोपड़ी में रहने और दो साल तक उनके लौटने का इंतज़ार करने को कहा। इस दौरान शिष्य को एक भिखारी का सादा जीवन बिताना था। उसे खाने के लिये भीख माँगना और गुरु द्वारा सिखाये गये अभ्यास और ध्यान करना था।

"इसके बाद शिष्य को आशीर्वाद देकर, गुरु अपनी यात्रा पर चले गये। शिष्य ने नदी के किनारे एक झोपड़ी बना ली और निष्ठा के साथ गुरु के आदेशों का पालन करने लगा। वह सुबह जल्दी उठकर नदी के किनारे नहाने और सुबह की प्रार्थनायें करने जाता था। वह अपनी धोती उतारकर (एक पतला कपड़ा जो उसके कमर से नीचे के हिस्से को ढँके रहता था), इसे नदी के किनारे रखकर, नदी के अंदर नहाने चला जाता था।"

एरच ने आगे कहा, "भारत के गाँवों में यह रिवाज़ है कि सन्त सूरज निकलने से पहले उठकर, नदी में नहाते हैं और जैसे ही सूरज निकलता है, वे नदी में खड़े होकर, दोनों हाथों का चुल्लू (कप) बनाकर, सूरज की ओर मुँह करके, उसे जल अर्पित करते हैं और साथ ही साथ मंत्रों का उच्चारण करते जाते हैं। यह शिष्य भी ऐसा ही कर रहा था। प्रार्थनायें करने के बाद, वह प्रसन्न मन से अपनी धोती लेने के लिये, नदी के किनारे गया। जैसे ही वह इसे लेने के लिये झुका, उसने धोती में छेद देखे जैसे कि किसी जानवर ने इसे चबा डाला हो। उसे इस घटना पर आश्चर्य हुआ।

"अगले दिन, जैसे ही वह सुबह की प्रार्थनायें करके, प्रसन्न मन से अपनी धोती लेने के लिये, नदी के किनारे गया, उसने फिर से अपनी धोती में उसी तरह के छेद देखे। इससे वह बहुत परेशान हो गया, इसलिये तीसरे दिन, मंत्रों का उच्चारण करते हुए, उसने अपनी धोती पर नज़र रखी। उसका ध्यान प्रार्थनाओं की ओर कम ही था। शिष्य ने देखा कि एक चूहा उसकी धोती चबा रहा था, इसलिये वह अपनी प्रार्थनाओं को अधूरा छोड़कर नदी के किनारे की ओर भागा ओर चूहे का पीछा करके उसे भगाने लगा।

"अगले दिन, वह शिष्य चूहे को भगाने के लिये, एक बिल्ली ले आया और निगरानी करने के लिये, इसे अपनी धोती के पास बाँध दिया। उस दिन सुबह शिष्य ने अपनी प्रार्थनायें पूरा ध्यान लगाकर कीं। उसने नदी के किनारे आकर अपनी धोती को सुरक्षित पाया तो बहुत खुश हुआ। अब

जैसे जैसे दिन चढ़ने लगा, बिल्ली भूख से रोने लगी। शिष्य परेशान हो गया क्योंकि इससे उसके ध्यान में विघ्न पड़ने लगा। इसलिये जब वह शहर में अपने लिये खाना माँगने गया, वह अपनी बिल्ली के लिये थोड़ा दूध भी माँग लाया।

"जैसे जैसे दिन बीतने लगे, उसे बिल्ली के लिये पर्याप्त दूध मिलने में परेशानी होने लगी और इसीलिये उसने एक गाय रखने का निश्चय किया। इस तरह सिर्फ बिल्ली को ही रोज़ दूध नहीं मिलेगा, बल्कि थोड़ा दूध वह भी ले सकेगा। शिष्य अब अपनी सुबह की प्रार्थनायें करना ज़ारी रखता है और शेष दिन ध्यान में बिताने की कोशिश करता है। जैसे जैसे समय बीतता है, उसे अनुभव होता है कि उसका अधिकांश समय गाय को नहलाने, दूध दुहने और उसके लिये चारा जुटाने में निकल जाता है और ध्यान के लिये उसके पास बहुत कम समय बचता है।

"इसलिये वह गाय की देखभाल करने के लिये, किसी आदमी की नियुक्ति करने का निश्चय करता है। अब शिष्य को नौकर की ज़रूरतों का ध्यान रखना पड़ता है और दो लोगों के लिये खाने की भीख माँगनी पड़ती है। हालांकि, कुछ दिनों तक वह अच्छी तरह इन्तज़ाम कर लेता है, परन्तु फिर यह कठिन हो जाता है। इसलिये वह नौकर की मदद से स्वयं अनाज पैदा करने का निश्चय करता है। इस तरह उसे खाने के लिये भीख नहीं माँगनी पड़ेगी। एक बार उसके पास पर्याप्त अनाज हो जाने पर वह बिना किसी विघ्न के ध्यान कर सकेगा।"

एरच बहुत देर तक चुप रहे। "देखो, यह मन कैसा है ? यह तुम्हें यह विश्वास दिलाकर कि एक काम को ख़त्म करने के बाद तुम उनकी याद करने के लिये स्वतन्त्र हो जाओगे, एक वस्तु से दूसरी वस्तु की ओर किस प्रकार ले जाता है ? हम हर समय यही करते हैं, हैं ना ? मन हमसे कहता है, 'इस काम को ख़त्म कर लो और तुम उनकी याद करने के लिये स्वतंत्र हो जाओगे', अथवा, 'इस परेशान करने वाली स्थिति से छुटकारा पा लो और तुम शान्तिपूर्वक उनको याद कर सकोगे।' क्या तुम सबके साथ ऐसा नहीं हुआ है ?

''ऐसा ही होता है। मन तुम्हें नई नई स्थितियों में फँसाकर, बेवकूफ़ बनाता रहता है। और ऐसा ही इस बेचारे शिष्य के साथ हुआ। जैसे जैसे काम का बोझ बढ़ता गया, वह नौकरों की संख्या बढ़ाता गया। अनाज की फसल कटने के बाद, अनाज को सुरक्षित भंडार में रखने की ज़रूरत होती है, इसीलिये उसे एक शेड (Shade) बनवाना पड़ा। शेड के लिये धन का इंतजाम करने के लिये, ज़रूरत से ज़्यादा अनाज को बाजार में बेचने लगा और इसी तरह क्रम चलता रहा। दो सालों में, शिष्य के पास कई मज़दूरों के साथ एक बड़ा सा फ़ार्म और नौकरों और गाड़ियों के साथ एक शाही मकान हो गया।

''अपने वादे के अनुसार, गुरु लौटकर नदी के किनारे बनी हुई छोटी झोपड़ी में अपने शिष्य को ढूँढते हैं जिसमें वह उसे छोड़कर गये थे। अपने शिष्य या झोपड़ी को ढूँढ न पाने पर, गुरु वहाँ से गुज़रने वाले लोगों से पूँछने लगे लेकिन ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में कोई नहीं जानता था। काफ़ी लोगों से पूँछने के बाद, किसी व्यक्ति ने इस धनी व्यक्ति के बारे में गुरु को बताया जो प्रार्थना करने के लिये, नदी के किनारे बड़े तड़के (सुबह जल्दी) अपनी बिल्ली के साथ आता था। इस धनी व्यक्ति का हुलिया गुरु द्वारा बताये गये शिष्य के हुलिये से मिलता था। लेकिन यह झोपड़ी के बजाय एक शाही मकान में रहता था।

''अगले दिन गुरु नदी के किनारे गये और इस धनी व्यक्ति को अपनी बिल्ली के साथ नदी की ओर आते देखा। गुरु ने शिष्य को नहीं पहचाना, लेकिन शिष्य, अपने गुरु को देखकर, दौड़ा और उनके पैरों पर गिर पड़ा। उठने के बाद, उसने अपने गुरु को आश्चर्य में देखकर कहा, 'क्या आप मुझे नहीं पहचानते ? आप दो साल पहले मुझे इस नदी के किनारे छोड़कर गये थे।'

'हाँ, अब मैं तुम्हें पहचान गया, लेकिन तुम्हें यह क्या हुआ ? झोपड़ी कहाँ गई और तुम जो सादे कपड़े पहनते थे उनका क्या हुआ ?'

''शिष्य ने सभी घटनायें क्रम से बताईं'; किस प्रकार एक चीज़ के बाद दूसरी आई और अब उसके ऊपर मज़दूरों की ज़िम्मेदारी थी जो

उसके फ़ार्म की देखभाल करते थे जहाँ उसके और उसकी गाय के लिए अनाज पैदा होता था। बिल्ली गाय का दूध पीती थी ताकि वह चूहों से उसकी धोती की देखभाल कर सके और वह शान्तिपूर्वक प्रार्थना कर सके।

गुरु ने पूछा, 'और बाकी दिन भर तुम क्या करते हो ? क्या तुम ईश्वर का ध्यान करते हो ?'

''शिष्य ने अस्वीकार करते हुये दृढ़ता से कहा, 'मेरी इतनी सारी ज़िम्मेदारियाँ हैं अतः मैं ईश्वर का ध्यान कैसे कर सकता हूँ ?''

''इस पर, गुरु ने कहा, 'मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी कि संन्यास के बजाय सांसारिक जीवन तुम्हारे लिये सबसे अच्छा मार्ग था।'

''शिष्य समझ गया कि गुरु ठीक कह रहे थे, लेकिन उसकी समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि इन परिस्थितियों में वह और कुछ कर ही क्या सकता था। इसलिये उसने गुरु से पूछा, 'मुझे क्या करना चाहिये था? मुझसे कहाँ ग़ल्ती हुई ?'

''गुरु ने कहा, 'धोती के प्रति तुम्हारा मोह तुम्हें ईश्वर से दूर ले गया। जब चूहे ने तुम्हारी धोती कुतर डाली, तुम्हें धोती पहनना छोड़कर, ईश्वर पर अपना ध्यान केन्द्रित करना था। तुमने धोती पहनना क्यों नहीं छोड़ा? अगर तुमने ऐसा किया होता, तो मामला उसी समय, वहीं पर समाप्त हो जाता। धोती के प्रति तुम्हारे मोह के कारण, तुम्हारे अंदर धोती की सुरक्षा की इच्छा पैदा हुई और इच्छा के इस छोटे से बीज से, इच्छाओं का एक बड़ा पेड़ बन गया। ईश्वर के मार्ग पर चलने के लिये तुम्हें इच्छारहित होना चाहिये।'

''इसके साथ ही गुरु ने शिष्य को सांसारिक जीवन बिताने और ईश्वर की याद करते रहने के लिये आशीर्वाद दिया।''

एरच ने एक चेतावनी के साथ कहानी ख़त्म की; ''यदि तुम ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग पर निष्ठापूर्वक चलने का प्रयत्न कर रहे हो तो भी इस मन की चालों से सावधान रहो। यह आसान काम नहीं है। इसके लिए बहुत हिम्मत की ज़रूरत होती है जहाँ हमें उनके लिये हर वस्तु का त्याग

करने के लिये तैयार रहना चाहिये। अगर ज़रूरत पड़े तो तुम्हें उनके लिये पूरी तरह से नंगा होने और किसी भी तरह का सांसारिक मोह न रखने के लिये, तैयार रहना चाहिये।''

NkV vorj.k

बहुत से बाबा प्रेमी जानते हैं कि बाबा ने शिवाजी को अपने छोटे अवतरणों में से एक बताया था। उन लोगों के लिये, जो इस धारणा से परिचित नहीं हैं, बाबा ने कहा है कि पृथ्वी पर अवतार का अवतरण लगभग प्रत्येक ७०० और १४०० वर्षों में होता है। फिर भी, कभी कभी असाधारण परिस्थितियों के कारण, ७०० वर्ष पूरे होने के पहले ही अवतार को छोटे अवतरण के लिये विवश होना पड़ता है। दोनों अवतरणों के बीच यह अंतर है कि सामान्य अवतरण में, अवतार की चेतना पर से पर्दा उठा दिया जाता है (सद्‌गुरुओं द्वारा) और वह अनन्त ज्ञान, अनन्त शक्ति और अनन्त आनन्द की पूर्ण चेतना के साथ काम करता है। उस समय वह पूरी सृष्टि के लिए काम करता है। छोटे अवतरण के दौरान पर्दा नहीं उठाया जाता है और अवतार को अपने अवतारत्व की चेतना नहीं होती है। उसे अपने अनन्त ज्ञान, अनन्त शक्ति और अनन्त आनन्द की चेतना नहीं होती है। छोटे अवतरण के दौरान, उसका कार्य पूरी सृष्टि के लिये नहीं बल्कि बहुत ख़ास होता है।

एरच ने बताया कि बाबा ने एक अवसर पर शिवाजी के अलावा, तीन छोटे अवतरणों के बारे में बताया। पहले अवतरण में वह एक संन्यासी और दूसरे में मिठाई बेचने वाले थे तथा तीसरा छोटा अवतरण केवल एक आत्मा के लिये हुआ।

जब मैंने एरच को पहली बार यह बताते हुये सुना, विशेष रूप से यह बताते हुए कि तीसरा छोटा अवतरण केवल एक आत्मा के कारण हुआ, मैंने अपने शरीर में बिजली की तरंग का अनुभव किया। मेरा पूरा शरीर रोमांचित हो गया। मैंने अविश्वास से एरच की ओर देखा और कहा, ''उन्होंने केवल एक आत्मा के लिये अवतार लिया ? उस आत्मा के हृदय में कितनी अधिक तड़प रही होगी कि उसने अवतार को अवतरण के लिए

विवश कर दिया ? हम समझ सकते हैं कि अनन्त सत्ता (ईश्वर) मनुष्य के शरीर रूपी पिंजड़े में कैद होकर, सम्पूर्ण मानवता के लिये कष्ट सहती है, लेकिन उन्होंने यह सब केवल एक आत्मा के लिये किया ?''

इस बारे में सोचते हुये, मैं कहता गया, ''एरच, मुझे यह बात परेशान कर रही है कि अवतार बड़ी आसानी से पाँच सद्‌गुरुओं अथवा बहुत सी दूसरी ईश्वर–साक्षात्कार प्राप्त आत्माओं को, इस एक आत्मा की तड़प को शान्त करने का निर्देश दे सकता था। उन्होंने (सद्‌गुरुओं) बड़ी आसानी से ऐसा किया होता और अगर उस आत्मा की इच्छा होती तो वे उसे ईश्वर–साक्षात्कार भी करा सकते थे। अवतार को एक छोटा अवतरण लेने की क्या आवश्यकता थी ? यह विशिष्ट आत्मा कौन थी जिसके लिये अवतार ने एक छोटा अवतरण लिया ?''

एरच ने उत्तर दिया, ''मैं नहीं जानता। बाबा ने मुझे नहीं बताया और मैंने पूछा नहीं।'' थोड़ा रुकने के बाद, एरच ने कहा, ''फिर भी, बाबा ने हमें जो कुछ बताया है, उससे मैं इतना जानता हूँ कि वह प्रेम के..... अपने प्रेमियों के प्रेम के दास हैं। उस आत्मा का प्रेम और उसकी तड़प इतनी अधिक रही होगी कि इसने उसके (आत्मा) हृदय में आग लगा दी होगी। इस जलते हुए हृदय की तड़प, मरने के पहले, हर क़ीमत पर उनकी (ईश्वर की) भौतिक उपस्थिति को अनुभव करने के लिए होगी। केवल ऐसी तड़प से ही अवतार ऐसी प्रतिक्रिया कर सकता है। जब शुद्ध, गहरा प्रेम पुकारता है, अवतार एक दास की तरह प्रत्युत्तर देता है। उस समय ऐसा ही हुआ होगा।''

एरच ने आगे कहा, ''प्रेम का पागलपन। यह तुम्हें किस तरह खींचता है। अपने हृदयों में यह पागलपन पैदा करो। इसमें (हृदय में) प्रेम की आग लगा दो और विश्वास करो, वह तुम्हारे पास दौड़ते हुये आयेंगे। यथार्थ में केवल यही एक चीज़ उन्हें खींचकर तुम्हारे पास ला सकती है और उन्हें तुम्हारे सामने अपने आपको प्रकट करने के लिये विवश कर सकती है।''

इससे मुझे उर्दू की कुछ पंक्तियाँ याद आईं, ''खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक़दीर लिखने से पहले, खुद खुदा आके तुझसे पूछे कि

बता बंदे तेरी रज़ा क्या है।'' इसका अनुवाद है, ''उसकी याद में अपने आपको इतना मज़बूत बनाओ कि तुम्हारा भाग्य लिखने से पहले, ईश्वर स्वयं तुम्हारे पास आकर तुमसे पूछे कि तुम्हारी इच्छा क्या है ?''

'kq) izse

एक तीर्थयात्री ने, जो एरच के पास बैठा हुआ था, उन्हें सूचित करते हुये कहा, ''हर जगह शादी के बाद के स्त्री–पुरुष संबंध बन रहे हैं और बाबा प्रेमी इसके अपवाद नहीं हैं। कोई व्यक्ति, जो किसी से पहले से ही प्रेम संबंध रखता है, अपने जीवन में बाद में आने वाले किसी पुरुष या स्त्री के प्रति उतने ही अधिक गहरे प्रेम का अनुभव कर सकता है जो पिछले जन्मों के संबंधों के कारण हो सकता है। उसके पिछले जीवन के संस्कार इस नये व्यक्ति के प्रति गहरे प्रेम की भावनाओं को जागृत कर देते हैं और इसके साथ ही वह अपने पहले जीवन साथी से भी उतना ही प्रेम करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके संस्कार उसे एक ऐसे संबंध में ढकेल देते हैं जिस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता।'' फिर तीर्थयात्री ने पूछा, ''यह सब कर्म या भाग्य है, क्या ऐसा कहा जा सकता है ?''

एरच ने तुरंत उत्तर दिया, ''सब कुछ कर्म के कारण है। तुम इसे भाग्य या ईश्वर की इच्छा भी कह सकते हो। अपने जीवन में मिलने वाले हर व्यक्ति से, यहाँ तक कि औपचारिक रूप से मिलने वाले व्यक्ति से भी, किसी भिखारी से, जिसे तुम भीख देते हो, अपने पिछले जन्म में तुम्हारा संबंध था। इसलिये सब कुछ दैवी मर्ज़ी है। लेकिन दैवी इच्छा भी होती है. .... हम विचार करें कि बाबा किस बात से प्रसन्न होंगे और वह हमसे क्या करने की आशा करते हैं।''

एरच ने आगे कहा, ''इसे अच्छी तरह समझने के लिए मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। एक बार एक ईसाई महिला बाबा के पास आई। वह कैथोलिक थी और एक पादरी से प्रेम करती थी। एक कैथोलिक पादरी शादी नहीं कर सकता। उनका धर्म इस बात की अनुमति नहीं देता है। उस महिला ने बाबा को अपनी परेशानी बताकर, उनसे मार्गदर्शन करने के

लिए कहा। बाबा ने कहा, 'मैं इस बात से बहुत प्रसन्न हूँ कि तुम उससे प्रेम करती हो। उसके प्रति अपने प्रेम को बढ़ने दो लेकिन इस बात का ध्यान रखो कि इसमें वासना न हो। उसके प्रति अपने प्रेम को शुद्ध रखो और इससे तुम्हें एक दिन यथार्थ प्रेम, दैवी प्रेम का अनुभव होगा।' बाबा हमसे ऐसी आशा करते हैं।''

इस विषय को आगे समझाते हुये, एरच ने पूछा, ''क्या तुमने रोमियो–जूलियट, लैला–मजनूँ या शीरींन–फ़रहाद की प्रसिद्ध प्रेम कहानियाँ सुनी हैं ? वे लोग इतने प्रसिद्ध क्यों हुए ? उनमें एक बात की समानता थी। वह क्या थी ? उन्होंने अपने संबंध का अन्त शादी में नहीं किया। एक दूसरे के प्रति उनका प्रेम, विरोध के कारण शारीरिक रूप में व्यक्त नहीं हो सका। इसलिये प्रेम बढ़ता गया और अधिक गहरा होता गया और यह शरीर के दायरे को पार करके, करीब करीब आध्यात्मिक प्रेम के स्तर तक ऊपर उठ गया।

''अगर उनकी शादी हो गई होती और उनका प्रेम समाप्त हो गया होता तो क्या होता ? उन्होंने कुछ समय तक इसके शारीरिक पहलू का अनुभव किया होता और इसका आनन्द लिया होता। कुछ समय बाद उनके बच्चे हुये होते और बच्चों का पालन–पोषण करने की प्रतिदिन की कठिनाइयाँ दम्पत्ति को थका डालतीं और जल्दी ही वह प्रचंड प्रेम समाप्त हो गया होता अथवा शायद ज़्यादा से ज़्यादा एक मधुर संबंध बनकर रह गया होता। और सबसे बुरी बात यह भी हो सकती थी कि रोमियो जूलियट से लड़ना शुरू कर देता। वे आपस में गाली गलौज करने लगते और यहाँ तक कि एक दूसरे को नापसंद भी करने लगते। ऐसा ही होता है। शारीरिक मिलन प्रेम की ज्वाला को बुझा देता है जब कि वियोग (अलगाव) प्रेम की ज्वाला को और अधिक प्रज्वलित करता है।''

प्रश्न पूछने वाले तीर्थयात्री की ओर मुड़कर, एरच ने कहा, ''हमें यही करना चाहिये। अगर किसी ख़ास व्यक्ति के प्रति तुम्हारे अंदर प्रेम की भावनायें हैं तो उन भावनाओं को बढ़ने दो लेकिन अपने शारीरिक हाव भावों और कार्यों पर नियंत्रण रखो। अगर तुम ऐसा करने में सफल होते हो और इस संबंध में वासना को दूर रखते हो, तो बाबा की कृपा से, तुम यथार्थ

प्रेम के अनुभव के करीब पहुँच जाओगे। किसी व्यक्ति के लिए अनुभव किये गये प्रेम की प्रचंडता, एक प्रेमी की ईश्वर के प्रति प्रेम की तड़प के समान होती है। इसलिये, कोई भी हो, उसके प्रति अपने प्रेम को बढ़ने दो, और जब इसकी प्रचंडता अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है, यह सब बाबा को अर्पित कर दो। दोनों ही स्थितियों में भावना, प्रचंडता और तड़प समान हैं। केवल पदार्थ (object) भिन्न है। इसलिये अपने प्रेम के लक्ष्य को मनुष्य से, जो मिथ्या है, दैवी हस्ती में बदल दो जो यथार्थ प्रेम है। हमें यही करना चाहिये। इससे तुम बाबा को केवल प्रसन्न ही नहीं करोगे बल्कि तुम बाबा हो जाओगे अर्थात् ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त करोगे।''

एरच ने और आगे कहा, ''लैला के लिये मजनूँ का प्रेम इतना प्रचंड था, और फिर भी इतना अधिक शुद्ध था कि वह हर जगह लैला को देखता था। उसे लैला के अलावा और किसी भी चीज़ या व्यक्ति की परवाह नहीं थी और इसी प्रेम के कारण उसे सद्गुरु की कृपा प्राप्त हुई जिनके एक स्पर्श मात्र से उसे हर जगह ईश्वर दिखने लगा। किसी मनुष्य के प्रति हमारा शुद्ध प्रेम हमें ईश्वर तक ले जा सकता है।''

i;Ru djk

मंडली के साथ रहते हुये, मैं अक्सर देखता था कि वे हमें, हम जो भी काम करते थे, उसमें सफलता प्राप्त करने के लिये भरसक प्रयत्न करने और फिर इसका परिणाम बाबा पर छोड़ देने के लिये उत्साहित करते थे। कई बार, बाबा प्रेमी अपनी किसी समस्या को लेकर एरच के पास जाते थे और बताने के बाद, अन्त में वे कहते थे, ''मैं यह सब बाबा के ऊपर छोड़ता हूँ।'' फिर भी, अक्सर यह साफ समझ में आता था कि वह व्यक्ति अपनी समस्या हल करने के लिये कोई कोशिश नहीं कर रहा था और एरच उन्हें मज़ाक में डाँटते हुए कहते थे, ''कोशिश करने का हिस्सा बाबा पर मत छोड़ो। अधिकांश लोग यही करते हैं जब वे कहते हैं, 'मैं इसे बाबा पर छोड़ता हूँ।' कोशिश करो, भरसक प्रयत्न करो जैसे कि तुम इसे उनके लिये कर रहे हो और फिर सब कुछ बाबा पर छोड़ दो।''

एरच ने हमें निम्नलिखित कहानी सुनाई ताकि हम यह अच्छी तरह समझ सकें कि किसी समस्या को दैवी मर्ज़ी पर छोड़ने अथवा दैवी मर्ज़ी के अधीन होने के पहले, कोशिश और इरादों का होना आवश्यक है।

''एक रेस्तराँ का मालिक, एक दिन अपने दोस्त से बात कर रहा था। मालिक कैश रजिस्टर के पीछे बैठा हुआ था और उसका दोस्त उसके पास खड़ा था। वे लोग बातचीत कर रहे थे उसी समय एक भिखारी भीख माँगने आया। मालिक ने भिखारी को कुछ नहीं दिया और भिखारी खाली हाथ लौट गया। मालिक ने अपने दोस्त की ओर मुड़कर कहा, 'यह दैवी मर्ज़ी थी कि मैं भिखारी को कुछ न दूँ। दैवी मर्ज़ी ने मुझे उसको भीख देने से रोक दिया।'

"मित्र इससे सहमत नहीं था लेकिन मालिक ने हठपूर्वक कहा, 'दैवी मर्ज़ी बहुत शक्तिशाली है और उसने मेरे अंदर किसी तरह से दया अथवा उदारता के विचारों को पैदा करके, भीख देने के लिये प्रेरित किया होता। लेकिन, क्योंकि मुझे ऐसे किसी भी तरह के विचारों द्वारा प्रेरणा नहीं मिली, इसलिये मैं भिखारी को मुझसे कोई भीख न मिलना, दैवी मर्ज़ी मानता हूँ।'

"मित्र ने उत्तर दिया, 'तुम्हें प्रेरणा नहीं मिली क्योंकि तुम्हारा भीख देने का कोई इरादा नहीं था। तुमने भीख देने की कोई कोशिश भी नहीं की। तुमने भीख देने के लिये अपना रुपयों का ड्राअर खोलने की कोशिश भी नहीं की। यह दैवी मर्ज़ी नहीं बल्कि तुम्हारी कोशिश की कमी थी जिससे भिखारी को भीख नहीं मिली। अगर तुमने भीख देने के इरादे से रुपयों का ड्राअर खोलकर रुपया निकालने की कोशिश की होती, और उसी क्षण, तुम्हें लकवा होने से तुम अपने हाथ से रुपया नहीं दे पाते, तब यह दैवी मर्ज़ी होती। क्योंकि भीख देने का इरादा और कोशिश दोनों ही उस समय थे।'

एरच ने अन्त में कहा, "यह इसी तरह होता है। हमें समस्या को हल करने के इरादे से, कोशिश करनी चाहिये जैसे कि हम यह सब बाबा के लिये कर रहे हों और फिर परिणाम उनके ऊपर छोड़ देना चाहिये।" एरच ने पुनः चेतावनी दी, "कोशिश करने का हिस्सा बाबा पर मत छोड़ो। यह

अपने आपको बेवकूफ़ बनाना है क्योंकि तुम्हारा हृदय कोशिश किये बिना, बाबा से फल चाहता है। वास्तव में, यह दूसरी तरह से है। कोशिश करो और फल बाबा पर छोड़ दो।"

एक दूसरे अवसर पर, एक तीर्थयात्री ने एरच से कहा, "बाबा ने कहा है कि अगर तुम उनकी ओर एक कदम रखोगे, तो वह तुम्हारी ओर दस क़दम रखेंगे। हमारे छोटे कदमों को ध्यान में रखते हुये, बाबा के विराट क़दमों की तुलना में, वे महत्वहीन हैं। इसलिये अगर मैं क़दम नहीं भी रखता तो भी मेरी ओर रखे गये बाबा के दस क़दम मेरे जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला देंगे और मुझे उनकी उपस्थिति का अनुभव करा देंगे। लेकिन मैं देखता हूँ कि ऐसा नहीं होता। ऐसा क्यों है ?"

एरच ने तुरंत उत्तर दिया, "जब तक तुम उनकी ओर पहला क़दम नहीं रखते हो, वह तुम्हारी ओर दस क़दम नहीं चलेंगे। तुम्हारे क़दम कितने छोटे हैं, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, उनकी ओर एक क़दम रखने में तुम्हारे द्वारा किया गया प्रयास, इरादा और तड़प, उन्हें तुम्हारी ओर दस क़दम चलने के लिये मज़बूर कर देगा। उनकी ओर रखा गया तुम्हारा एक क़दम, तुम्हारे हृदय में उनके लिये तड़प का प्रतिबिम्ब होगा। वह उस तड़प का प्रत्युत्तर देते हैं। उनसे मिलने की तड़प तुम्हें कोशिश करने के लिये मज़बूर करती है और कोशिश करने से उनकी कृपा प्राप्त होती है।"

cUnj tSlk eu

एक तीर्थयात्री की तरह अपनी मेहेराबाद यात्रा के दौरान, मैं अपना अधिकांश खाली समय बाबा की समाधि के अंदर बैठकर बिताया करता था ताकि मैं इस सुनहरे अवसर का पूरा लाभ उठा सकूँ। मैं जानता था कि भविष्य में जब पूरा संसार बाबा के पास आयेगा, तब ऐसा मौक़ा फिर नहीं मिलेगा। तो भी, मेरी पूरी कोशिश के बावजूद, मैं बाबा पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता था और मेरे मन में उस समय हर तरह के विचार आते रहते थे। मैं इससे थोड़ा उत्तेजित था। एक दिन इसी विषय पर मनसारी ने बात शुरू कर दी और मुझे ऐसा लगा कि इस बारे में मदद

करने के लिये मैंने बाबा से जो प्रार्थना की थी, यह उसका प्रत्युत्तर था। मनसारी ने मुझसे पूछा, "तुम्हें समाधि में बैठना अच्छा लगता है, लेकिन मुझे बताओ, क्या तुम बाबा पर अपना ध्यान लगा पाते हो या दूसरे विचार तुम्हें परेशान करते हैं ?"

मैंने ईमानदारी से स्वीकार किया, "मुझे दूसरे विचार बहुत परेशान करते हैं और मुझे उत्तेजना का अनुभव होता है। मैं नहीं जानता कि मैं और क्या करूँ।"

मनसारी ने मुझसे एक प्रश्न पूछा जिसके लिये मैं तैयार नहीं था। "क्या तुमने कभी बंदर को देखा है ? इसे एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदना कितना अच्छा लगता है ?"

मैंने कहा, "हाँ, लेकिन आप यह क्यों पूछ रहीं हैं ?"

मनसारी ने समझाते हुये कहा, "मन एक बंदर के समान है। इसे एक विचार से दूसरे विचार पर कूदना अच्छा लगता है। क्या तुमने देखा है कि अगर बंदर को एक छोटे पिंजड़े में, जिसमें इधर उधर घूमने के लिये जगह न हो, बंद कर दिया जाये तो यह कितना बेचैन हो जाता है ? मन ऐसा ही होता है। जब तुम समाधि के अंदर बैठकर, सारे विचारों को छोड़कर, अपने मन को केवल बाबा की फ़ोटो पर केन्द्रित करने की कोशिश करते हो, उस समय तुम अपने बंदर जैसे मन को छोटे से पिंजड़े में बंद करने की कोशिश करते हो। इसलिये यह बेचैन हो जाता है और तुम उत्तेजना का अनुभव करते हो। इसलिये अपने बंदर जैसे मन को और बड़े पिंजड़े में बंद करो जिसमें इसके स्वतंत्रतापूर्वक घूमने के लिये कई कमरे हों। इससे यह बेचैन नहीं होगा और अभी भी पिंजड़े के अंदर बंद होगा।"

मेरी समझ में नहीं आया कि मनसारी की बात का क्या अर्थ है, इसलिये मैंने उनसे समझाने के लिये कहा।

उन्होंने कहा, "यह बहुत आसान है। अपने बंदर जैसे मन का ध्यान केवल मेहेरबाबा के पिंजड़े के अंदर केन्द्रित करो लेकिन अपने विचारों और ध्यान को मेहेरबाबा की एक फ़ोटो से दूसरी फ़ोटो की ओर स्वतंत्रतापूर्वक

जाने दो। बाबा के कई रूपों को अपने सामने रखो अथवा, अगर तुम कर सको तो अपने मन की आँखों से बाबा के इन रूपों को देखो। एक रूप पर अपना ध्यान लगाओ और जैसे ही तुम्हें थकान लगे, दूसरे रूप और फिर तीसरे रूप पर ध्यान लगाओ और इसी तरह करते रहो। एक समय आयेगा जब तुम्हारा बंदर जैसा मन इससे भी थक जायेगा। तब तुम अपने मन में उनके किसी गुण का ध्यान करो। तुमने कई फ़ोटो देखे हैं जिनमें वह बड़े दयालु लगते हैं। दूसरी फ़ोटो में उनका दिव्य रूप नज़र आता है। और दूसरी किसी फ़ोटो में उनके चारों ओर प्रेम बिखर रहा है। इसलिये उनके गुण और फ़ोटो पर एक साथ ध्यान लगाओ, जबकि तुम्हारे विचार में उनकी दया, प्रेम और दिव्यता की कहानियाँ आती जाती रहें। इस प्रकार तुम्हारे विचार उनके चारों ओर घूमते रहेंगे और तुम्हारे मन के लिये, दूसरे विचारों से भटकने के बजाय, बाबा पर ध्यान केन्द्रित करना आसान हो जायेगा।"

मनसारी ने आगे कहा, "तुमने मेहेरबाबा की फ़िल्में देखी होंगी। वह अपने प्रेमियों को कैसे थपथपाते और उनका आलिंगन करते थे। इसलिये अपनी आँखें बंद करके कल्पना करो कि वह तुम्हें प्यार से थपथपा और गले लगा रहे हैं। तुमने उन्हें अपने शिष्यों के साथ ऊपर पहाड़ी पर तेजी से जाते और उनके साथ रहने की कोशिश करते हुये शिष्यों को उनके पीछे दौड़ते देखा होगा। कल्पना करो कि तुम प्रेमियों की उस भीड़ में हो जिनसे वह बात कर रहे हैं। कल्पना करो कि वह तुम्हारे स्वास्थ्य और कुशलता के बारे में पूछ रहे हैं। उनके साथ संबंध बनाये रखो। ऐसा करने का भरसक प्रयत्न करो और एक समय ऐसा आयेगा जब तुम्हें इसके लिये कोई प्रयत्न नहीं करना होगा और तुम्हारे अंदर उनकी उपस्थिति सजीव हो जायेगी। तब उनकी फ़ोटो, फ़ोटो न होकर साक्षात् ईश–पुरुष हो जायेगी और तब तुम उनके साथ बातचीत कर सकोगे और प्रश्न पूछ सकोगे। तुम यहाँ तक देखोगे कि ऐसा करने पर तुम्हें अपने प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर मिलेंगे। इस तरह से वह तुम्हारे निरंतर साथी बन जायेंगे जिनके साथ तुम अपना सुख–दुख बाँट सकते हो अथवा लड़ सकते हो।"

मनसारी की इस सलाह से मुझे बहुत सहायता मिली और मैं आज तक इसका अभ्यास करता रहता हूँ। मैंने उनकी सलाह को बिल्कुल सही पाया हैं और जिस सीमा तक मैं इसका अभ्यास करता हूँ, उसी सीमा तक मैं अपने जीवन में बाबा की सजीव उपस्थिति को अनुभव करता हूँ।

o l ân;

एरच में गज़ब का संतुलन था। बड़ी से बड़ी दुर्घटना का उन पर कोई असर नहीं होता था और फिर भी किसी व्यक्ति की छोटी से छोटी समस्या के प्रति, जो उसे प्रभावित करती थी, वे चिन्तित हो जाते थे। उनका संतुलन ऐसा था जैसा संतों में होता है–लगभग ईश्वर के समान। फिर भी उनकी इसी बात से हममें से कुछ लोग कभी–कभी बहुत नाराज़ हो जाते थे। क्योंकि एरच न तो कोई प्रतिक्रिया करते थे और न ही वे बीच में दख़ल देते या डाँटते थे। वह किसी भी व्यक्ति की ग़ल्ती सुधारने अथवा उसे अनुशासन में रखने से मना कर देते थे, भले ही वह तीर्थयात्री किसी के साथ कितना ही दुर्व्यवहार करे अथवा किसी को परेशान करे।

एक अवसर पर, एक तीर्थयात्री होस्टल डी में शराब पीते हुये पकड़ा गया। जब उसे पकड़ा गया, उसके मुँह से शराब की बदबू ही नहीं आ रही थी बल्कि उसके हाथ में शराब से आधी भरी हुई बोतल भी थी। उस तीर्थयात्री से कहा गया कि वह ट्रस्ट से चला जाये और वह मान भी गया। एरच को लगा कि ऐसा करना ठीक नहीं था। उनके अनुसार, हमें उससे शराब लेकर, उसे नियमों को समझाकर, एक अवसर और देना चाहिये था।

मैंने एरच से कहा, "हर व्यक्ति को पहले ही दिन, जब वे यहाँ अपना नाम रजिस्टर में लिखाते हैं, सारे नियम समझा दिये जाते हैं।" एरच ने कड़ाई के साथ कहा, "इससे क्या होता है ? उसे फिर समझाओ। हो सकता है उसने इसे ठीक से नहीं सुना। उसे एक और अवसर मिलने का हक़ है।"

मैंने और अधिक जाँच करने के लिये, अवसर का लाभ उठाया और पूछा, "आप तीर्थयात्री को सुधारने या अनुशासित करने से इनकार क्यों

करते है ?” एरच थोड़ी देर चुप रहे। बहुत धीरे–धीरे उन्होंने उत्तर दिया, “हम क्या कर सकते हैं ? हमारे हृदय ऐसे हो गये हैं। हम हर एक में बाबा को देखते हैं। हम बाबा को चोट कैसे पहुँचा सकते हैं ?”

मैंने आग्रह किया, “एरच, जो लोग मेहेराबाद में रहकर, आपके साथ काम करते हैं, आप उनमें बाबा को चोट पहुँचा सकते हैं। उस समय ऐसा करने में आपको कोई परेशानी नहीं होती, मुझे ऐसा लगता है।”

एरच मुँह बंद करके हँसते रहे। “मेहेराबाद में रहकर मेरे साथ काम करने वाले लोगों में, मैं बाबा को चोट नहीं पहुँचाता हूँ। यह मिथ्या अहं है, जो दृढ़तापूर्वक स्वयं को प्रकट करने लगता है, जिसे मैं चोट पहुँचाता हूँ।”

एरच को बहस में हराने का, मैंने अभी भी व्यर्थ प्रयत्न किया। “आप तीर्थयात्रियों के मिथ्या अहं के बारे में क्या कहते हैं ? कम से कम एक बार, आप उन्हें चोट क्यों नहीं पहुँचाते ?”

एरच ने गहरी साँस ली और कहा, “वे इसके लिये तैयार नहीं हैं, जबकि वे लोग, जो यहाँ रहते हैं और काम करते हैं, तैयार होते हैं। जो आत्मायें तैयार हैं, उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना बाबा का काम है। यह बाबा हैं जो उस आत्मा की अपने मिथ्या अहं से छुटकारा पाने में सहायता करने के लिये, उस आत्मा पर कार्य करते हैं। हम लोग केवल उनके कार्य करने का माध्यम है।”

मुझे विश्वास है एरच यह बात अपने हृदय से कह रहे थे। यह केवल शब्द या कोई बहाना नहीं था। इससे मुझे यह समझने में मदद मिली कि वह तीर्थयात्रियों को क्यों नहीं डाँटते थे।

ân; fodfl r gkx

हमें परेशान करने वाले प्रश्नों का, हमारे हृदयों को संतोषजनक उत्तर मिल जाने के बावजूद, हमारे मन ऐसे थे कि हम जल्दी ही वही प्रश्न फिर पूछने लगते थे। इसलिये मेहेराबाद में कोई परिस्थिति ऐसी आ गई जिससे

यह प्रश्न अनिवार्य रूप से पुनः सामने आया कि मंडली कड़ाई क्यों नहीं बरतती है। एरच ने कहा, “मैं जानता हूँ कि लोग हमें कड़ाई न बरतने, अनुशासनहीनता को बढ़ावा देने और यहाँ के वातावरण को नष्ट करने का दोषी ठहराते हैं।” एरच ने ठहरकर, गैरी क्लाइनर की ओर संकेत करते हुये कहा, “मुझे गैरी को बिगाड़ने का दोष दिया जाता है।” क्योंकि मेरे अंदर यह विचार कई बार आया था, इसलिये मैंने तुरंत, उन्हें रोकते हुये कहा, “आप क्या कहते हैं ? क्या आप अनुभव करते हैं कि आपने गैरी को बिगाड़ा है ?”

जब कभी मुझे एरच को बौद्धिक रूप से हराने का मौक़ा मिलता था, मैं इसका फ़ायदा उठाता था, क्योंकि यह देखना हमेशा रोचक होता था कि एरच मेरे उस पैंतरे से स्वयं को कैसे बचाते थे। वह स्वयं को आसानी से सिर्फ़ बचा ही नहीं लेते थे, बल्कि हमें एक गहरा और प्रभावशाली संदेश भी मिल जाता था। वास्तव में हर बाहरी परिस्थिति को, चाहे वह झगड़ा हो या बिगड़ा हुआ वातावरण हो, इस्तेमाल करके एरच हमें यह दिखाते थे कि यह तुम्हारे बाहर नहीं बल्कि तुम्हारे अंदर था। फिर वह हमें अंदर जाने और सारी रूकावटों और झगड़ों को अपने अंदर से हल करने के लिये उत्साहित करते थे ताकि बाहरी परिस्थितियाँ हमें परेशान करना बंद कर दें।

गैरी क्लाइनर, जो एरच को प्रिय था, अक्सर ऐसी परिस्थियों में पड़ जाता था जहाँ दूसरे लोग उसकी अनुशासनहीनता की शिकायत एरच से करते थे। इसलिये मुझे उत्सुकता रहती थी कि एरच इस बारे में क्या कहेंगे क्योंकि मैं पहले ही जानता था कि वह डाँटने से क्यों कतराते थे। एरच बहुत देर तक चुप रहे और फिर बहुत धीरे से बोले, “मेरी बात पर तुम विश्वास नहीं करोगे, लेकिन मैं तुम्हें ईमानदारी से यह बता रहा हूँ। एक समय मैं गैरी की तरह था। वास्तव में, मैं उससे भी बुरा था। यह बिल्कुल सच है। बाबा के साथ रहने पर भी, मुझमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। समय गुज़रता गया और मेरा स्वभाव और भी बुरा हो गया। फिर, कई सालों बाद मैंने अपने में एक परिवर्तन पाया। और यह परिवर्तन क्या था ? मैंने पाया कि मेरा छोटा सा दिल विकसित होने लगा था। इस

परिवर्तन का कारण क्या था ? इसका कारण मेहेरबाबा थे। मेरे सारे प्रयत्नों के बावजूद, मुझमें यह परिवर्तन नहीं आया होता। यह सब उनकी कृपा थी।

"और एक बार तुम्हारा हृदय विकसित होने लगता है तो यह विकसित होता जाता है। बाबा के शरीर छोड़ने के बाद से कई वर्ष बीत गये हैं और मेरा हृदय अभी भी विकसित हो रहा है। यह देखने के बाद कि मुझ जैसे अनधिकारी व्यक्ति के साथ ऐसा हुआ है, मैं यह निश्चित रूप से जानता हूँ और मैं यह पूरी ईमानदारी से कहता हूँ कि एक दिन केवल गैरी ही नहीं, बल्कि तुम सब वह अनुभव करोगे जो मैंने किया। तुम्हारे छोटे से हृदय भी हमारे जैसे विशाल हो जायेंगे। मैंने कई अवसरों पर बार–बार कहा है कि मैं बाबा के साथ इस जीवन का अधिकारी नहीं था। कई लोग ऐसे थे जो अपने प्रयत्न और तड़प के कारण, जिसकी मुझमें कमी थी, इसके अधिकारी थे। मेरे लिये, यह उनकी कृपा थी जो उन्होंने मुझे अपने साथ रखा और यह अवसर दिया।

"इसलिये मैं पूरे विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि एक दिन उनकी कृपा तुम सब पर भी होगी। जब ऐसा होगा, तुम समझ जाओगे कि हम कड़ाई बरतने में क्यों असमर्थ हैं। तुम किसी व्यक्ति को कोड़े लगाकर, उसके हृदय को विकसित करने के लिये विवश नहीं कर सकते हो। तुम इसे अनुशासन द्वारा विकसित नहीं कर सकते हो। तुम्हारे सारे प्रयत्न इसे विकसित नहीं कर सकते हैं। इसलिये, इसे क्या विकसित कर सकता है? केवल उनकी कृपा। मुझे यही कहना है।"

IPph uerk

कई साल साथ रहने के बाद, जब मैं एरच को अच्छी तरह जानने लगा, मैंने देखा कि वह केवल महान ही नहीं थे बल्कि नम्र भी थे। जहाँ तक बाबा के शब्दों को आचरण में लाने का प्रश्न था, वह नम्रता के सजीव उदाहरण थे। एरच का व्यक्तित्व महान था और यद्यपि अपनी बात दृढ़तापूर्वक कहने का उन्हें अधिकार था, ट्रस्ट के दिन प्रतिदिन के मामलों

में, वह ऐसा नहीं करते थे। अगर कोई व्यक्ति उनकी बात ध्यान से नहीं सुनता था, एरच उससे केवल प्रार्थना या नम्र निवेदन करते थे और अपने अधिकार का प्रयोग करने से बचते थे।

एरच को दूसरी बात यह नहीं पसंद थी कि कोई उनकी प्रशंसा करे या किसी तरह उनका सम्मान करे। इससे वह परेशान हो जाते थे और यह उनके चेहरे से साफ़ समझ में आ जाता था। निम्नलिखित कहानी से यह बात तुम्हें स्पष्ट रूप से समझ में आ जायेगी।

खोर्शीद की मृत्यु हो गई थी और दाह संस्कार के बाद उसकी अस्थियाँ व राख, समाधि में गाड़ने के लिये, एक बर्तन में रखे थे। उसकी अस्थियों को दफ़नाने के लिये एक दिन निश्चित किया गया था। उस दिन, सारे तीर्थयात्री समाधि में इकट्ठा हो गये। इस अवसर के लिये मंडली भी आई। एरच महिला मंडली से थोड़ा पहले आये और मैं उनके थोड़ा पीछे खड़ा था। क्रैग और दवाना एरच के दोनों ओर बगल में खड़े थे और एक तीर्थयात्री, एरच के पीछे मेरी बगल में खड़ा था।

जब महिला मंडली आई, कुछ सहायकों ने ऊपर जाकर दर्शन की लाइन में लगे लोगों को दर्शन करने से रोक दिया क्योंकि यह लाइन बहुत लम्बी थी। ऐसा मंडली के दर्शन के लिये किया गया। महिला मंडली ने समाधि के अंदर जाकर दर्शन किया। एरच अपनी जगह पर खड़े रहे। बाल नातू और अलोबा ने भी आगे बढ़कर दर्शन किया। एरच अपनी जगह से नहीं हिले। हम लोग समाधि के सामने बने चबूतरे पर खड़े थे।

एक सहायक ने देखा कि एरच दर्शन के लिये आगे नहीं बढ़ रहे थे। इसलिये उसने उन्हें जोर से पुकारा, "एरच क्या आप दर्शन नहीं करेंगे ?" एरच के कुछ कहने के पहले, क्रैग ने उत्तर दिया, "ठीक है, एरच प्रायः समाधि के अंदर नहीं जाते हैं।" इससे मुझे और मेरी बगल में खड़े तीर्थयात्री को आश्चर्य हुआ। तीर्थयात्री ने क्रैग से पूछा, "एरच समाधि के अंदर क्यों नहीं जाते हैं ? क्या बाबा ने यह नहीं कहा कि उनकी समाधि भावी समय की मक्का है ? कोई व्यक्ति अंदर जाकर, मक्का पर माथा टेकना क्यों नहीं चाहेगा ?"

यह जानते हुये कि एरच कितनी महान आत्मा थे, मैंने तीर्थयात्री की ओर मुड़कर कहा, "वह मक्का नहीं जाते हैं। मक्का उनके पास आती है क्योंकि वह एरच हैं।" हालांकि मैंने यह बात बहुत धीरे से कही थी, एरच ने सुन लिया। उन्होंने अपना सर थोड़ा घुमाकर, मेरी ओर देखा और गहरी साँस लेकर, कंधे हिलाकर मुझसे कहा, "ठीक है, चलो, चलकर दर्शन करें।" फिर वह समाधि की ओर चलने लगे और हम लोग उनके साथ गये।

ऐसी एरच की नम्रता और महानता थी। इससे मुझे बाबा का एक संदेश याद आता है, "केवल वही व्यक्ति, जो सचमुच महान है, यथार्थ में नम्र हो सकता है।"

बहुत बाद में, जब मैंने क्रैग से एरच के समाधि के अंदर न जाने का कारण पूछा, क्रैग ने बताया कि एरच उसी समय समाधि के अंदर जाने से बचते थे, जब दर्शन के लिये लाइन लगी होती थी क्योंकि वह तीर्थयात्रियों का ध्यान न तो किसी तरह से बँटाना चाहते थे और न ही उन्हें किसी तरह की बाधा पहुँचाना चाहते थे। मेरे हिसाब से, यह एरच की महानता और नम्रता का दूसरा संकेत है।

एरच में एक और गुण था। वह चाहे कुछ भी कर रहे हों या किसी भी हालत में हों, अगर उनके पास कोई तीर्थयात्री आता था, वह सब कुछ छोड़कर, उसके पास जाते थे और उसका आलिंगन करते थे। कभी–कभी एरच मेहेराज़ाद में मंडली हाल में फर्श पर बैठे होते थे और कोई तीर्थयात्री, जो नियमित रूप से वहाँ आता है, मंडली हाल में आता था। लेकिन अपनी उम्र और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के बावजूद, एरच उस तीर्थयात्री का स्वागत करने के लिये, खड़े होने की कोशिश करते थे।

अक्सर तीर्थयात्री उनसे आग्रह करता था, "एरच, ठीक है, कृपया उठिये नहीं।" बदले में एरच आग्रह करते थे, "लेकिन तुम मुझे अपने अंदर के बाबा को गले लगाने का अवसर क्यों नहीं देना चाहते ?"

एक बार, एरच के इस कथन के उत्तर में, तीर्थयात्री ने पूछा, "जब आप हमारा आलिंगन करते हैं तब क्या आप वास्तव में यह अनुभव करते

हैं कि आप बाबा का आलिंगन कर रहे हैं ?" एरच ने तुरंत उत्तर दिया, "अगर मुझे बाबा का आलिंगन करने को नहीं मिलता, तो मैं तुम सबका आलिंगन करने के लिये अपने आपको परेशान क्यों करता ?"

ckck dh bPNk

समय के साथ–साथ, तीर्थयात्रियों की संख्या बढ़ने पर, मेहेराबाद में भी विकास की ज़रूरत पड़ी। मेहेराबाद के विकास के कारण, वहाँ रहने वाले प्रेमियों में (Residents) अक्सर झगड़े हो जाते थे। इन झगड़ों का मूल कारण वह प्रेम था, जो हर प्रेमी, केवल बाबा के लिये ही नहीं बल्कि उस पवित्र भूमि के लिये भी, जहाँ हर जगह उनकी उपस्थिति थी, अनुभव करता था। हर प्रेमी के मन में एक धारणा थी कि बाबा ऐसे प्रसन्न होंगे। विशेष रूप से मेहेराबाद के पवित्र वातावरण को बनाये रखने के लिये, हर व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार, उस स्थान की देखभाल करने का भरसक प्रयत्न करता था।

वहाँ रहकर काम करने वाले कुछ ऐसे प्रेमी थे जिनका मत था कि बाबा के समय जो वातावरण था, उसे बनाये रखना चाहिये। इसलिये वे हर विकास कार्य को संदेह की नज़र से देखते थे। दूसरी ओर कुछ ऐसे प्रेमी थे जिनके विचार से विकास ज़रूरी था क्योंकि तीर्थयात्रियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। बाबा ने भविष्यवाणी की थी कि एक दिन पूरा संसार तीर्थयात्रा के लिये मेहेराबाद आयेगा। इससे अक्सर आपस में झड़प हो जाती थी और कभी–कभी मामला इतना गंभीर हो जाता था कि मंडली का हस्तक्षेप अनिवार्य हो जाता था।

ऐसे ही एक अवसर पर, जब दोनों पक्ष अपने–अपने मतों पर अडिग थे और झगड़ा कुछ समय से खिंचता आ रहा था, इसे सुलझाने के लिये मंडली के सामने रखा गया। मुझे दोनों पक्षों के तर्क सही और विचार संगत लगते थे। किसी भी पक्ष में निर्णय देना कठिन था।

प्रायः एरच ऐसे झगड़ों या मामलों में भाग नहीं लेते थे और दोनों पक्षों की बात धैर्यपूर्वक सुनने के बाद, उन्हें किसी और मंडली जन के पास

सलाह लेने के लिये भेज देते थे। एक विशेष अवसर पर, संयोग से मैं उनके साथ था और जब दोनों पक्ष चले गये, मैंने एरच को उस विषय में अपने विचार बताये। मैंने कहा, "इस विशेष मामले में, मुझे दोनों पक्ष सही लगते हैं। ख़ासतौर से दोनों पक्षों के तर्कों और कारणों को सुनने के बाद, मुझे दोनों पक्ष सही लगते हैं। एरच, मैं जानता हूँ कि आप इन मामलों में भाग लेना पसंद नहीं करते हैं, लेकिन मेरी भलाई के लिये, मुझे बताइये ताकि यह समझने में मेरी मदद हो कि आपके अनुसार इन दोनों में से कौन सा निर्णय बाबा चाहेंगे।"

एरच ने गहरी साँस लेकर कहा, "कोई भी नहीं। बाबा चाहते हैं कि तुम इन दोनों परिस्थितियों के परे जाओ। यह सब वे चीजें हैं जो तुम चाहते हो। बाबा ये चीज़े नहीं चाहते हैं। उन्हें इन सबकी क्या ज़रूरत है? वह सृष्टि के स्वामी हैं। बाबा वास्तव में तुम्हें ईश्वर देना चाहते हैं और उसके लिये तुम्हें सही और ग़लत के परे, यह और वह के परे और सभी परिस्थितियों के परे जाना होगा। केवल तभी तुम उन्हें पा सकोगे। बाबा यही चाहते हैं।"

lgh vkj xyr d ij tkvk

एरच मुझे यह याद दिलाने के लिये, कि अगर मैं बाबा को पाना चाहता था, तो मुझे सही और ग़लत के परे जाना होगा, कभी भी, एक भी अवसर नहीं खोते थे। हालांकि वह जो कुछ कहते थे, मुझे बौद्धिक रूप से समझ में आता था फिर भी, मेरे जैसे व्यक्ति के लिये, सही और ग़लत का कोई निर्णय न लेना और उसका साथ न देना, यह बहुत ही कठिन था। मैं स्वभाव से गुस्सैल था और अन्याय को सह नहीं सकता था। थोड़ी सी ग़ल्ती, मुझे उस व्यक्ति के खिलाफ कार्य करने के लिये उत्तेजित कर देती थी और, अगर ग़ल्ती सुधारी नहीं जाती थी, तो मैं अक्सर, बड़ी आसानी से क्रोधित हो जाता था।

ऐसे मौकों पर एरच मुझे बड़े प्यार से याद दिलाते थे कि मैं ऐसी स्थितियों को सुधारने के लिये प्रेमपूर्ण और मीठे शब्दों का प्रयोग करूँ और

मैं मज़ाक करते हुये उत्तर देता था, "एरच मीठे शब्द और एक बन्दूक (कड़वा शब्द), अकेले मीठे शब्दों की तुलना में, काम को ज़ल्दी करा सकते हैं।" मेरा पालन पोषण इसी तरह हुआ था और मैं दुनियाँ को इसी दृष्टिकोण से देखता था। फिर भी, एरच हमेशा मेरे प्रति सहनशील और प्रेमपूर्ण थे।

एक अवसर पर, जब मैं किसी व्यक्ति से नाराज़ हो गया था, एरच हमारे पास आये और प्यार के साथ झगड़ा सुलझाने की कोशिश की। एरच ने यह ऐसी व्यवहार कुशलता के साथ किया कि मामला तुरंत हल हो गया। मैं बहुत प्रभावित हुआ क्योंकि मुझे मामले के सुलझने की आशा नहीं थी और इसीलिये मैं नाराज़ हो गया था। मैं एरच के पास चुपचाप बैठा था और मेरे मन में एरच से यह पूछने का विचार आया, "एरच, मुझे अफ़सोस है कि मैं नाराज़ हो गया, लेकिन मुझे बताइये, अन्याय के खिलाफ़ खड़े होना, ग़लत बात के खिलाफ़ खड़े होना, क्या बाबा हमसे यह नहीं चाहते हैं ? क्या बाबा नहीं चाहते हैं कि हम सदाचार का साथ दें ?"

एरच ने उत्तर दिया, "नहीं, वह चाहते हैं कि तुम सत्य का साथ दो, सदाचार का नहीं।"

मैंने पूछा, "दोनों में क्या अंतर है ?"

एरच ने कहा, "जब तुम सदाचार का साथ देते हो, तुम्हारा अहं अपने आपको दृढ़तापूर्वक स्थापित करता है और तुम भ्रम के मिथ्यापन में फँस जाते हो। लेकिन जब तुम सत्य का साथ देते हो, तुम्हें किसी भी तरह की कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त किये बिना, हर तरह के अपमान को सहने के लिये तैयार रहना चाहिये। अगर तुम ऐसा कर लेते हो तो अहं नष्ट हो जायेगा और धीरे–धीरे मर जायेगा। जब अहं पूरी तरह मर जाता है, तुम सत्य का अनुभव करते हो।"

एरच प्रेमपूर्ण दया के साथ मुझे जो कुछ बता रहे थे, उस प्रभावशाली संदेश को पूरी तरह से ग्रहण करने की मैं पूरी कोशिश कर रहा था, फिर भी मेरे अंदर इसे ग्रहण करने में कोई रूकावट आ रही थी। मैंने कहा, "आप अन्याय से कैसे निबटेंगे ?"

एरच ने कहा, "अन्याय को बाबा द्वारा दिये गये एक अवसर के रूप में लो ताकि तुम बाबा के ऊपर अपनी निर्भरता को बढ़ाने के लिये, अपमान सह सको।"

मैंने कहा, "अगर सभी व्यक्तियों ने आपकी सलाह मानकर, अन्याय से लड़ना छोड़ दिया तो संसार का क्या होगा ?"

एरच ने व्याख्या की, "सत्य का साथ देना यह सबके लिये नहीं है। यह केवल उन कुछ लोगों के लिये है जो पूर्णतया नष्ट होने के लिये तैयार हैं। उन लोगों के लिये है, जो बाबा से प्रेम करने और उन्हें चाहने का साहस रखते हैं।"

एरच के संदेश ने मुझे एक कथन की याद दिलाई जो मनी मंडली हाल में अक्सर बताया करतीं थीं। "एक प्रेमी अपने प्रियतम से प्रार्थना करता है, 'लोग कहते हैं कि आपके चेहरे की एक झलक से, व्यक्ति जलकर राख हो जाता है। लेकिन इससे क्या होता है ? मुझे अपना चेहरा दिखाओ।'"

[kku d: vkl

मेहेराबाद में रहकर काम करने वाले बाबा प्रेमियों को उनके आध्यात्मिक प्रशिक्षण के एक हिस्से के रूप में मंडली उनको डाँटती थी और अगर वह प्रेमी किसी मंडली जन का सहायक होता था तो उसे इस डाँट की अधिकांश चोट सहनी पड़ती थी। दवाना, जो एरच की सहायक थी और हमेशा उनके साथ रहती थी, अक्सर रोती हुई मिलती थी। एरच उसे मंडली हाल में या तीर्थयात्रियों के सामने सार्वजनिक रूप से नहीं डाँटते थे। फिर भी, वह ट्रस्ट के कार्य के दौरान और दूसरे एकान्त मौकों पर ऐसा करते थे।

एक बार हम लोग ट्रस्ट आफ़िस में ३ बजे, जो कि चाय का समय था, एरच के साथ बैठे थे। एरच दवाना को अपने शब्दों की सुइयाँ चुभाने के मूड में थे। वह कुछ छोटी–छोटी ग़ल्तियों को लेकर हंगामा कर रहे

थे। वास्तव में, ग़ल्तियाँ थीं हीं नहीं। केवल एरच अपने नाटकीय अंदाज़ से ऐसे दिखा रहे थे जैसे कि वास्तव में ग़ल्तियाँ थीं। अन्त में, दवाना इसे सह नहीं सकी और एरच से बोली, "क्या कारण है कि आज मेरा हर एक कार्य ग़लत है ? क्या ऐसा कोई भी काम नहीं है जिसे मैंने आज ठीक से किया हो ?"

एरच ने टिप्पणी की, "नहीं, यहाँ तक कि तुम्हारा साँस लेने का ढँग भी ग़लत है।" फिर उन्होंने बताया कि एक बार उपासनी महाराज ने कहा था, "यहाँ तक कि तुम्हारा साँस लेना भी ग़लत है।" महाराज यह समझा रहे थे कि किस तरह मिथ्या 'मैं' का हर कार्य बंधन पैदा करता है। जिस समय एरच यह समझा रहे थे, दवाना, जिसे शायद पूरे दिन शब्दों की सुइयाँ चुभाई गईं थीं, रोने लगी। बहुत समय से मेहेराबाद में रहने वाली बाबा प्रेमी, पैट, भी वहाँ पर थी। वह साहसी और बातचीत में चतुर थी और अपने विचारों को प्रकट करने में ज़रा भी संकोच नहीं करती थी। उसने मज़ाक करते हुये एरच को डाँटा, "अरे, तुम शैतान लड़के। देखो, तुमने इस बेचारी लड़की के साथ क्या किया है ? तुमने इसे रुला दिया है।"

एरच ने आश्चर्यचकित होने का दिखावा किया और बोले, "सचमुच? क्या वह रो रही है ? मुझे नहीं दिख रहा।" पैट ने एरच का हाथ पकड़कर, दवाना के गाल से आँसू पोंछ दिये और बोली, "आपके विचार से यह क्या है?"

अभी भी आश्चर्य प्रकट करते हुये एरच ने कहा, "ये आँसू नहीं हैं। जब आँसुओं का रंग लाल होता है, जब आँखों से खून बहने लगता है, वे आँसू कहलाते हैं।" उन्होंने कहना ज़ारी रखा, "इस मार्ग पर ईश्वर के प्रेम और तड़प में, खून के आँसू बहाने की तुमसे आशा की जाती है।" फिर उन्होंने बसरा की संत, राबिया की कहानी सुनाई।

"तुम बसरा की संत राबिया की कहानी जानते हो ? वह अपना सारा समय ईश्वर की याद और प्रार्थना में बिताती थी। पूरे दिन और रात के अधिकांश समय में, वह यही करती थी। तो भी, क्योंकि उसका शरीर दुर्बल था इसलिए उसे दो तीन घंटे के लिये नींद आ जाती थी। जब वह जागती

थी, वह गहरे पश्चाताप और उदासी से भर जाती थी। वह रोती थी और खून के आँसू बहने लगते थे। वह अपने प्रभु से उन कुछ घंटों की नींद भी ले लेने की प्रार्थना करती थी क्योंकि यह (नींद) प्रभु की याद में ही रुकावट नहीं डालती थी, बल्कि उन घंटों में उसे उसके प्रभु से अलग भी कर देती थी जिसे उसका हृदय सह नहीं पाता था। जब तुम प्रेम करते हो, तब ऐसा होता है, लेकिन फिर भी, अपनी गहरी पीड़ा के बावजूद, राबिया को उस जीवन में पूर्णता नहीं मिली। उसे पूर्णता प्राप्त करने के लिये, बाबाजान के रूप में एक जन्म और लेना पड़ा।" एरच ने आगे कहा, "अगर तुम उन्हें (बाबा को) चाहते हो तो खून के आँसू बहाने के लिये तैयार रहो।"

इस कहानी से मुझे कुछ पंक्तियाँ याद आ रहीं हैं जो वास्तव में प्रार्थना है जो बसरा की राबिया अपने प्रभु से करती थी।

"मेरे अंदर ईश्वर प्रेम की बाढ़, मेरे जीवन में आने वाली विपत्तियों की धारा पर शासन करती है। हे अनन्त सौंदर्य, तुम मेरे प्रेम की दृढ़ता की परीक्षा लेने के लिये, मेरे जीवन में तूफ़ान भी उठा सकते हो।"

केवल राबिया की तरह उन्नत आत्मा ही, इस तरह ईश्वर से प्रार्थना कर सकती थी।

fIQ! mudh vkKk dk ikyu djk

मैं अक्सर मेहेराबाद में रहने वाले प्रेमियों की और कभी–कभी मंडली की भी नकल उतारा करता था। एक बार जब भाऊजी खाली थे, उन्होंने कुछ लोगों की नकल उतारने के लिये मुझसे कहा। मैंने भाऊजी से पूछा कि क्या मैं उनकी नकल उतार सकता था और जब उन्होंने अनुमति दे दी तो मैंने अपने सहायकों को डाँटते हुये भाऊजी की नकल उतारी। इसके ख़त्म होने पर भाऊजी खूब हँसे और कहा, "तुम बहुत अच्छी नकल उतारते हो। तुम ऐसा करके बहुत धन कमा सकते हो।"

क्योंकि भाऊजी बहुत प्रसन्न थे इसलिये मैंने मौके का फ़ायदा उठाते

हुये उनसे पूछा, "भाऊजी, हम जानते हैं कि बाबा मंडली जनों को डाँटते थे, लेकिन मुझे बताइये, क्या कोई ऐसा मंडली जन था जो बाबा के अधिक निकट होने के कारण आपको अथवा दूसरे किसी मंडली जन को डाँटता था ?"

भाऊजी ने तुरंत उत्तर दिया, "हाँ, एरच। उनसे सब भयभीत थे। मैं उनसे बहुत डरता था। वह किसी भी मंडली जन को डाँटते थे। वह उस समय बिल्कुल भिन्न थे। अब तुम उन्हें जैसा देखते हो, उस समय वह ऐसे नहीं थे। निःसंदेह, उन्हें किसी को भी डाँटने का अधिकार था। वास्तव में, वह बाबा का कार्य कर रहे थे और दूसरों को डाँटते हुये, बाबा को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहे थे।'' भाऊजी ने फिर निम्नलिखित कहानी सुनाई।

"जब बाबा मंडली के साथ मेहेराज़ाद में रहते थे, उस समय कुछ मंडली जनों के साथ पादरी मेहेराबाद में रहते थे। वह मेहेराबाद की देखभाल करते थे। एक बार बहुत भीषण अकाल पड़ा और पादरी ने बाबा के पास संदेश भेजा। बाबा ने उत्तर में पादरी को संदेश भेजा कि वह इस बात का ध्यान रखे कि वहाँ रहने वाले मंडली जनों के अलावा, कोई व्यक्ति वहाँ पानी का इस्तेमाल न करे। बाबा ने पादरी से इस बात का ध्यान रखने के लिये कहा कि मेहेराबाद में काम करने वाले लोगों को भी पानी ख़र्च करने की अनुमति न दी जाये।

"पेन्डू ने, जो वहाँ बैठे थे, एक बहुत पुराने समय से काम करने वाले व्यक्ति की ओर बाबा का ध्यान आकर्षित करते हुये आग्रहपूर्वक कहा कि कम से कम उस व्यक्ति को पानी लेने की अनुमति दी जाये। उन्होंने यह भी कहा कि अगर बाबा उस व्यक्ति को पानी का इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं देंगे तो उसे (पेन्डू को) बहुत दुख होगा। जैसे ही पेन्डू ने यह बात कही, एरच ने उनसे कहा, 'तुम ऐसा बोझ अपने ऊपर क्यों लेते हो? बाबा जानते हैं कि वह क्या कर रहे हैं। वह उस काम करने वाले को जानते हैं और उन्होंने उसे पानी न देने का निर्णय लिया है। तुम बाबा के काम में हस्तक्षेप क्यों करते हो ? उस व्यक्ति के हित में बाबा ने यह निर्णय

लिया है। तुम इसे दूसरी तरह से करने के लिये बाबा पर दबाव क्यों डाल रहे हो ? बाबा से उनके निर्णयों को बदलने के लिये कहकर, तुम अपना संस्कारों का बोझ क्यों बढ़ा रहे हो ? तुम सब कुछ उनके ऊपर छोड़कर, सिर्फ उनकी आज्ञा का पालन क्यों नहीं करते हो ?"

भाऊजी ने कहा, "एरच का ऐसा प्रभुत्व था कि वह किसी को भी डाँटकर, उसकी ग़ल्ती को सुधार सकते थे और पेन्डू शान्तिपूर्वक सुनते रहे। एरच को जवाब देने का साहस किसी में नहीं था।"

feF;k d c/ku dk rkMdj Lor= gk tkvk

मंसारी ने मुझे निम्नलिखित कहानी सुनाई।

"हम, महिला मंडली, बाबा के साथ पहाड़ी पर रह रहीं थीं। बाबा टिन शेड के नीचे रखी हुई अपनी गद्दी पर बैठे होते थे और हम उनके चारों ओर बैठे होते थे। एक अवसर पर बाबा उदास थे और उन्होंने भविष्य में आने वाली विश्व की पीड़ा पर टिप्पणी की। पश्चिमी महिलाओं में से एक महिला, मारग्रेट, ने कहा, 'बाबा, यह सब आपकी ग़ल्ती है। आपने माया की सृष्टि की और हम सब इस माया के कारण पीड़ा सह रहे हैं। आप हमें इस माया से मुक्त क्यों नहीं कर देते ? यह सब आपके हाथ में हैं।'

"बाबा ने बहुत गंभीरता से कहा, 'हाँ, मैं यह कर सकता हूँ। मैं जिसे चाहूँ उसे ईश्वर–साक्षात्कार करा सकता हूँ, लेकिन मैं यह (ईश्वर–साक्षात्कार) तुम सबको क्यों दूँ और पत्थर को क्यों न दूँ ? मेरे लिये तुम दोनों (पत्थर और तुम) समान हो। मैं तुम दोनों में समान रूप से मौज़ूद हूँ। इसलिये मैं पत्थर को ईश्वर–साक्षात्कार क्यों न दूँ ?' फिर बाबा ने आगे कहा, 'अगर तुम ईश्वर–साक्षात्कार पाना चाहते हो तो तुम्हें मुझे प्रसन्न करके, मेरी कृपा प्राप्त करनी होगी। यह आसान नहीं है। प्रेम, मेरी हर इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता और समर्पण से मैं प्रसन्न होता हूँ और मेरी कृपा प्राप्त होती है। लेकिन इसका एक आसान रास्ता भी है। अगर तुम अपनी मृत्यु

के क्षणों में मेरी याद करोगे तो तुम मुक्त हो जाओगे। यह बहुत सरल है। लेकिन अगर तुम अभी से मेरी याद करने का अभ्यास नहीं करते हो तो तुम मुझे अपनी मृत्यु के क्षणों में याद नहीं कर पाओगे। मृत्यु के समय तुम्हारा मन अपने परिवार, आर्थिक और दूसरे विषयों के विचारों से घिरा रहेगा। इसलिये अभी से अभ्यास करना शुरू कर दो।'

"बाबा ने और आगे कहा, 'क्या तुमने कभी सुना है कि जब कुत्तों को जंजीर के द्वारा एक खंभे से बाँध दिया जाता है, वह किस तरह रोते और बेचैन हो जाते हैं और जोर–जोर से भोंकने लगते हैं ? क्या तुम जानते हो, वे ऐसा क्यों करते हैं ? क्योंकि वे जंजीरों के बँधन से मुक्त होने के लिये बेचैन होते हैं। एक कुत्ता भी जंजीरों से बँधने पर बेचैन हो जाता है, लेकिन यहाँ बैठे हुये तुम सब लोग, जो अज्ञान की जंजीरों से माया (मिथ्या) के बँधन में जकड़े हो, वास्तव में इसका मज़ा ले रहे हो। तुममें से कोई भी इन जंजीरों को तोड़कर स्वतंत्र नहीं होना चाहता है। तुम उन कीड़ों की तरह हो जो गंदे तालाब में पैदा होते हैं। मैं तुम्हें इससे खींचकर बाहर निकालता हूँ, लेकिन जैसे ही मैं तुम्हें छोड़ता हूँ, तुम रेंगकर फिर से गंदे तालाब में चले जाते हो। मैं तुम सबकी मिथ्या की जंजीरों को तोड़कर स्वतंत्र होने में मदद करने के लिये, तुम्हारे बीच आया हूँ और इसका सबसे आसान उपाय निरंतर, पूरे हृदय से मुझे याद करना है।"

कहानी ख़त्म करने के बाद, बाबा का नाम याद करने के लिये तीर्थयात्रियों को उत्साहित करने के लिये मंसारी ने आगे कहा, "क्योंकि हमारा मन दिन में किये जाने वाले कामों में पहले ही लगा रहता है, इसलिये पूरे दिन बाबा की याद करना बहुत कठिन है। फिर भी, पूरे दिन में कई अवसर ऐसे होते हैं जब थोड़ी सी कोशिश करके बाबा की याद आसानी से की जा सकती है। लोग नाश्ता, दिन और रात का खाना खाना हमेशा याद रखते हैं। यह ऐसी बात है जिसे तुम कभी नहीं भूल सकते। इसलिये खाना शुरू करने से पहले एक नियमित संख्या में बाबा का नाम लो।

"लोग रात में सोना और सुबह जागना भी नहीं भूलते हैं। इन दोनों समयों पर बाबा की याद करने और उनका नाम लेने की कोशिश करो।

जैसे–जैसे समय बीतता जाता है, तुम्हें दिन में कुछ और खाली समय मिलेगा जैसे कि जब तुम यात्रा कर रहे हो या नहा रहे हो अथवा ट्रेन या बस का इन्तज़ार कर रहे हो। ये मौक़े भी उन्हें याद करने के अवसर हो सकते हैं। उनकी याद अधिक से अधिक करो, जितनी तुम कर सकते हो क्योंकि उनका नाम ही–छोटा, बड़ा और अन्तिम खेल खेलता है।"

nloh mUeÙkrk

एक बार एक तीर्थयात्री ने भाऊजी से पूछा, "क्या कारण था कि बाबा के साथ रहते हुए इतना अधिक परेशान होने पर भी, आप लोगों में से किसी ने भी उनको नहीं छोड़ा, बल्कि उनके साथ रहते रहे ?"

भाऊजी ने उत्तर दिया, "हम लोगों को उनसे (बाबा से) प्रवाहित होने वाले प्रेम की दैवी शराब की लत लग गई थी, और इसीलिये हम इस बात की परवाह नहीं करते थे कि हम किन हालात में रहते थे।" अपनी बात को ठीक से समझाने के लिये, भाऊजी ने निम्नलिखित कहानी सुनाई।

"एक शराबी आदमी था। उसके माता–पिता बहुत दुखी थे और हमेशा उसे समझाते रहते थे कि वह शराब पीना छोड़ दे। एक दिन पिता ने अपने पुत्र से दिल खोलकर बात करने का निश्चय किया। जब वे दोनों अकेले थे, पिता ने पुत्र से पूछा, 'तुम इतनी ज़्यादा शराब क्यों पीते हो ? क्या तुम्हारे हृदय में किसी तरह का दुख है ? क्या तुम जीवन में कोई चीज़ चाहते हो और न मिलने पर निराश हो ? क्या इसीलिये तुम इतनी अधिक शराब पीते हो ?'

"पुत्र ने कहा ऐसी कोई बात नहीं है। पिता ने आग्रहपूर्वक पूछा, 'तब तुम क्यों पीते हो ? क्या तुम जानते हो कि तुम्हें इस हालत में देखकर, हमें कितना अधिक कष्ट होता है ? हमें यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि यह तुम्हारे स्वास्थ्य को भी नष्ट कर देगी। तुम इतनी अधिक शराब क्यों पीते हो ?'

"लड़का असहाय होकर, पिता से बोला, 'मुझे इसकी लत है। मैंने कई बार इसे छोड़ने की कोशिश की है लेकिन असफल रहा। मैं शराब पीने की इच्छा को नियंत्रण में नहीं रख सकता।'

"पिता ने इस बारे में सोचा और फिर उसके मन में, अपने पुत्र की मदद करने के लिये एक विचार आया। उसने पुत्र से कहा, 'मैं शराब छोड़ने में तुम्हारी मदद करूँगा।'

"पुत्र ने आश्चर्य से पूछा, 'आप मेरी सहायता कैसे करेंगे ?'

"पिता ने कहा, 'मैं तुम्हारे साथ रोज़ बैठकर, उतनी ही मात्रा में शराब पिऊँगा जितनी तुम पियोगे। हम एक महीने तक ऐसा करेंगे। एक महीने के अन्त में, मैं शराब पीना बिल्कुल बंद कर दूँगा और इससे तुम्हें भी मेरे साथ शराब छोड़ने की प्रेरणा मिलेगी। हम इसे साथ–साथ करेंगे।'

"पुत्र ने पिता का प्रस्ताव मान लिया। इसलिये अगले दिन से, वे दोनों साथ–साथ शराब पीने लगे। शुरू में, पिता उतनी ही शराब पीता था जितनी पुत्र पीता था, लेकिन जैसे–जैसे दिन बीतते गये, पुत्र ने देखा कि पिता उससे ज़्यादा शराब पी रहा था और उसका आनंद लेता हुआ प्रतीत होता था। जब तीस दिन हो गये, पुत्र ने सोचा कि पिता शराब पीना बंद कर देंगे, लेकिन वह शराब पीते रहे। जब कई दिन बीत गये तो पुत्र ने सोचा कि उसके पिता को समय का ध्यान नहीं रहा, इसलिये उसने कहा, 'पिताजी, आपको याद है जब हमने शराब पीना शुरू किया था, हमने एक वादा किया था ?'

"पिता ने उत्तर दिया, 'हाँ बेटा, मुझे याद है।'

"पुत्र ने कहा, 'क्या आप जानते हैं कि तीस दिन से ज़्यादा समय बीत गया है और शराब पीना छोड़ने में, मेरी मदद करने के लिये, आपको तीस दिन बाद शराब पीना छोड़ देना चाहिये था ?'

"पिता ने उत्तर दिया, 'हाँ बेटा, मुझे वह सब याद है। लेकिन जिस समय मैंने वे वादे किये थे, मुझे नहीं मालूम था कि शराब इतनी उन्मत्त करने वाली, इतना आनंद देने वाली हो सकती है। अब क्योंकि मैं जानता हूँ कि इसके नशे की लत क्या होती है, मैंने इसे न छोड़ने का निश्चय

किया है। अगर तुम शराब पीना छोड़ना चाहते हो, तो छोड़ सकते हो लेकिन मैं इसे नहीं छोडूँगा।''

भाऊजी ने अन्त में कहा, "ऐसा ही बाबा के साथ था। हमें उनकी उपस्थिति की लत पड़ गई थी और हम इसके बिना रह नहीं सकते थे।"

tc ckck ckyr! g!

अलोबा, बाबा की निकट मंडली जनों में से एक थे। बचपन में वह मेहेरबाबा के स्कूल, प्रेम आश्रम, में रहकर पढ़ते थे। बाद में, जब वह वयस्क होकर बाबा के पास आये, वह अधिकांश यात्राओं में बाबा के साथ गये और बाबा के कार्य की कई अवधियों में उनके साथ रहे। फिर भी, अलोबा के साथ बात करने पर, उनके बच्चे जैसे स्वभाव पर अक्सर आश्चर्य होता था। बाबा में अलोबा का विश्वास बच्चे जैसा था और वह बच्चे की तरह व्यवहार करते थे।

बाबा के शरीर छोड़ने के बाद, अलोबा अहमदनगर के सभी छोटे–छोटे रेस्टोरेंट में जाने लगे। चाय नाश्ता लेने के बाद, वह बैरे से मैनेजर को बुलवाते थे। बैरा हमेशा चिन्ता के साथ अलोबा से पूछता था कि खाने में या परोसने में क्या कोई ग़ल्ती हो गई थी। अलोबा बैरे से कहते थे, ''मैनेजर को बुलाओ। मुझे जो कुछ कहना है, मैं उसी से कहूँगा।''

तब बैरा और अधिक परेशान हो जाता था लेकिन मैनेजर को बुला लाता था। मैनेजर आकर अलोबा से पूछता था कि क्या खाने में या परोसने में कोई ग़ल्ती हुई थी। अलोबा उत्तर देते, "खाना और परोसना दोनों ही बहुत अच्छे थे लेकिन मुझे होटल में एक बात अच्छी नहीं लग रही है और उससे मैं अप्रसन्न हूँ।"

बिल्कुल स्वाभाविक ढँग से मैनेजर पूछता था, "श्रीमान्, यह क्या बात है ? हमें बताइये और हम अपनी ग़ल्ती सुधारने की कोशिश करेंगे।"

अलोबा तब मैनेजर से कहते थे, "तुम्हारे होटल में मेहेरबाबा की एक भी फ़ोटो नहीं है और मुझे यह अच्छा नहीं लगता।" इससे थोड़ी सी बहस

होती और फिर मैनेजर, अलोबा को आश्वासन देते हुये, बहस को ख़त्म करते हुये, कहता कि वह अगले कुछ दिनों में एक फ़ोटो मँगाकर वहाँ पर लगा देगा।

अलोबा कहते, "लेकिन कुछ दिन इंतज़ार क्यों करें ? मेरे पास मेहेरबाबा की फ्रेम की हुई एक फ़ोटो यहाँ पर है और मैं अपने हाथों से इसे दीवार पर लगा दूँगा।"

उसकी चाल पकड़ में आ जाने पर, मैनेजर बहाना बनाता, "लेकिन हम इसे अभी नहीं लगा सकते हैं क्योंकि हमारे पास कील या हथौड़ा नहीं है।"

अलोबा उसे आश्वासन देते, "चिन्ता न करो, मेरे पास कील और हथौड़ा भी है।" और इसके साथ ही, अलोबा रेस्टोरेंट में एक उपयुक्त स्थान चुनकर, जहाँ से फ़ोटो अच्छी तरह दिखे, कील गाड़कर मेहेरबाबा की फ़ोटो लटका देते थे।

यह सब करने के बाद, वह मैनेजर से कहते, "फ्रेम की क़ीमत ३० रु. है जो तुम मुझे दोगे।" अलोबा के अजीब व्यवहार से चकित और परेशान मैनेजर, चुपचाप ३० रु. दे देता था। १९७० में आसपास जितने भी रेस्टोरेन्ट थे उनमें से अधिकांश में अलोबा द्वारा लगाई गई बाबा की फ़ोटो अभी भी है।

अलोबा तीर्थयात्रियों को भी, बाबा की फ्रेम की हुई फ़ोटो दिखाकर पूछते थे, "क्या तुम्हें बाबा की यह फ़ोटो पसंद है ?" अधिकांश तीर्थयात्री उत्तर देते थे, "हाँ, यह बहुत सुंदर है।" अलोबा फिर पूछते थे, "क्या तुम इसे लेना चाहते हो ?" तीर्थयात्री, थोड़ा चकित होकर कहते, "निःसंदेह, इसे लेकर मुझे खुशी होगी।" अलोबा तीर्थयात्री को फ़ोटो दे देते थे जो उन्हें इस अप्रत्याशित भेंट के लिये धन्यवाद देता था। लेकिन इससे भी अधिक अप्रत्याशित अलोबा की अगली बात होती थी, "लेकिन तुम मुझे फ्रेम की क़ीमत ३० रु. दो।" आश्चर्यचकित तीर्थयात्री अलोबा को रुपये दे देता था और अलोबा उसे समझाते थे, "कभी भी मुफ़्त में कोई चीज़ न दो, क्योंकि इससे लोग चीज़ की कद्र नहीं करते हैं।"

दूसरा काम अलोबा यह करते थे कि वह तीर्थयात्रियों को पकड़कर, उनके भूतकाल के बारे में ही नहीं बताते थे बल्कि उनके भविष्य की भी घोषणा कर देते थे। वह अक्सर बड़ी सफलता के साथ किसी व्यक्ति की समस्या का अंदाज़ लगा लेते थे और फिर उसके समाधान का रास्ता भी सुझा देते थे। इनमें अक्सर बाबा का नाम जपना अथवा कुछ ख़ास दिनों तक, किसी ख़ास समय पर, बाबा की कोई एक प्रार्थना करना होता था। अलोबा के सुझावों से अक्सर बहुत सफलता मिलती थी और इस सबका यह परिणाम था कि बहुत से, विशेष रूप से भारतीय तीर्थयात्री अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के लिये, उनकी सलाह लेने के लिये उनके चारों ओर झुंड लगाने लगे।

फिर भी, हर व्यक्ति को अलोबा की सलाह से लाभ नहीं होता था। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने अलोबा की सलाह के अनुसार कार्य किया लेकिन उन्हें कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। भाऊजी ने एक बार मुझसे कहा कि मैं जाकर इस बारे में अलोबा को चिढ़ाऊँ। भाऊजी ने कहा, “रुस्तम, जाकर अलोबा से पूछो कि बहुत से तीर्थयात्रियों के बारे में उसकी भविष्यवाणियाँ ग़लत क्यों हो रही हैं ? निःसंदेह, कुछ लोगों को लाभ होता है, लेकिन हर एक को फ़ायदा क्यों नहीं होता ?”

इसलिये मैंने अलोबा के पास जाकर, मज़ाक करते हुये उनसे पूछा, “अलोबा, आपकी भविष्यवाणियाँ हमेशा सच क्यों नहीं होतीं हैं ? कभी–कभी आप असफल क्यों हो जाते हैं ?”

अपने बच्चों जैसे ढँग से, अलोबा ने तुरंत उत्तर दिया, “मैं तुम्हें बताऊँगा कि ऐसा क्यों होता है। ध्यान से सुनो ताकि मैं जो बता रहा हूँ उसे तुम समझ सको। जब बाबा अलोबा के माध्यम से बोलते हैं तब भविष्यवाणियाँ हमेशा सच होती हैं। लेकिन जब केवल अलोबा भविष्यवाणी करता है, तब यह हमेशा ग़लत होती है। यह बहुत सरल बात है।” इससे मेरे ह्वदय पर बहुत गहरा असर हुआ। अलोबा के इस कथन के पीछे जो सच्चाई है, वह बाबा के इस कथन को प्रतिबिम्बित करती है, “तुम जो भी काम करते हो, अगर उसमें तुम्हारा अहं मौजूद है तो मैं वहाँ नहीं हूँ। जब तुम्हारा अहं वहाँ नहीं होता और तुम्हारी सेवा निःस्वार्थ होती है, तब मैं उपस्थित होता हूँ।''

ikFkuk djus dk <x

कई बार लोग किसी व्यक्ति या कुछ लोगों द्वारा समाधि में शोर करने की शिकायत मंडली से करते हैं। हालांकि समाधि में कुछ सदस्यों का एक दल है जो लोगों को मौन रहने का निर्देश देता है, फिर भी, इस नियम का उल्लंघन एक आम बात है। अगर कोई व्यक्ति बराबर शोर करता था, तो मंडली उसको सुधारने की कोशिश करती थी।

एक बार, जब ऐसी ही एक शिकायत एरच के पास आई, उन्होंने कहा, “मुझे केवल शिकायतों पर ही नहीं बल्कि शिकायत करने वाले लोगों पर भी आश्चर्य हो रहा है।” एरच के कथन से हम सबको आश्चर्य हुआ। अक्सर एरच ऐसी ही कोई असामान्य बात कहकर, उनकी बातों की ओर हमारी उत्सुकता को जाग्रत कर देते थे। मैंने उनसे पूछा, “शिकायत करने वाले लोगों के बारे में आपको आश्चर्य क्यों हो रहा है ? उनका ध्यान दूसरी ओर भटक जाता है और इसीलिये वे शिकायत कर रहे है।”

एरच ने गहरी साँस लेकर कहा, “जब तुम समाधि में होते हो, तुम्हारा ध्यान बाबा पर केन्द्रित होना चाहिये। अगर तुम इसमें सचमुच डूब गये हो तो तुम्हें और कुछ नज़र नहीं आयेगा। इसी बात पर मुझे आश्चर्य हो रहा है। ये लोग, जो बाबा के ध्यान में डूब गये हैं, शोरगुल पर कैसे ध्यान देते हैं?” फिर उन्होंने कहा, “क्या तुमने किसान की पत्नी की कहानी सुनी है जिसने राजा को प्रार्थना करना सिखाया?

“एक किसान था जो अपने खेतों में दिन भर काम करता था और शाम के समय, सूर्यास्त के काफ़ी पहले, वह जलाने के लिये लकड़ियाँ इकट्ठा करने के लिये जंगल में जाया करता था। वह सूर्यास्त से पहले लकड़ियाँ लेकर लौट आता था और शाम का बचा हुआ समय अपनी पत्नी के साथ बिताया करता था। उनकी हाल ही में शादी हुई थी और दोनों एक दूसरे से बहुत अधिक प्रेम करते थे।

"एक दिन, अपने रोज़ के समय पर किसान नहीं लौटा। थोड़ी देर इन्तज़ार करने के बाद, पत्नी बेचैन हो गई क्योंकि सूरज डूबने वाला था और उसके पति के लौटने के आसार नज़र नहीं आ रहे थे। वह चिन्तित थी और इसलिये वह अपने पति को खोजने के लिये जंगल में जाने को तैयार हो गई। उस देश का राजा भी, जो मुसलमान था, संयोगवश उस समय जंगल में था। क्योंकि सूरज डूबने वाला था, इसलिये वह अपनी शाम की प्रार्थनायें अथवा नमाज़ पढ़ रहा था। किसान की पत्नी अपने पति को पुकार रही थी और अपने पति को ढूँढ़ने में इतनी अधिक लीन थी कि उसने नमाज़ के लिये झुके हुये राजा को नहीं देखा।

"वह राजा से टकराकर गिर गई और उठने के बाद, उसने यह देखने की कोशिश भी नहीं की कि वह किससे टकराई थी। उसकी एकाग्रता इतनी अधिक थी कि वह अपने पति की खोज में और अधिक घने जंगल में अंदर चली गई। इससे राजा को बहुत गुस्सा आया लेकिन वह और उसके आदमी नमाज़ पढ़ रहे थे और नमाज़ ख़त्म होने से पहले कुछ नहीं कर सकते थे। जैसे ही नमाज़ ख़त्म हुई, राजा ने अपने आदमियों को उस औरत को गिरफ़्तार करके, उसके सामने लाने की आज्ञा दी।

"इस समय तक, औरत को उसका पति मिल गया था और जब उसे राजा के आदमी मिले, वह उसके साथ खुशी—खुशी लौट रही थी। राजा के आदमी उसे गिरफ़्तार करके, राजा के पास लाये जिसने उससे गुस्से के साथ कहा, 'मैं तुम्हारी बदतमीज़ी की सज़ा में तुम्हारा सर कटा दूँगा।' उस औरत को आश्चर्य हुआ और उसने राजा से कहा, 'श्रीमान्, मैं नहीं जानती, आप क्या कह रहे हैं ? कृपया मुझे बताइये कि मेरी ग़ल्ती क्या है ? मैंने ऐसी क्या ग़ल्ती की है जिससे आप जैसा दयालु राजा इतना अधिक नाराज़ हो गया है कि सज़ा में मेरा सर कटाना चाहता है ?'

"इससे राजा और अधिक नाराज़ हो गया और वह गुस्से से चिल्लाया, 'तुमने मेरी नमाज़ में बाधा डाली। तुम मुझसे टकराकर मेरे ऊपर गिर गई और मुझसे क्षमा माँगने के लिये रूकी भी नहीं। अब तुम मुझसे कहती हो कि तुम इस घटना के बारे में कुछ जानती ही नहीं और तुमने कुछ नहीं

देखा। तुमने एक राजा के साथ ऐसी बदतमीज़ी करने की हिम्मत कैसे की? मैं तुम्हें अभी, यहाँ, इसी समय मौत की सज़ा क्यों न दूँ ?'

"औरत ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया, 'हे दयालु राजा, जब आप कह रहे हैं कि मैंने यह सब किया है तो मैं आपकी बात पर विश्वास कर लेती हूँ और आप मुझे मृत्यु की सज़ा देंगे तो यह उचित होगा लेकिन मैं आपको ईमानदारी से यह बता रही हूँ कि मैं अपने पति की खोज में, जिसे मैं बहुत अधिक प्यार करती हूँ, इतनी अधिक लीन थी कि मैंने किसी भी चीज़ पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। हे राजा, मुझे इसके लिये अफ़सोस है। लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। अगर आप वास्तव में ईश्वर की प्रार्थना में लीन थे, तो आपने यह सब चीज़ें कैसे देखीं ?'"

एरच ने थोड़ी देर रूककर, आगे कहा, "तुम्हें पता है राजा ने क्या किया ? उसने उस औरत को सिर्फ़ क्षमा ही नहीं किया, बल्कि अपने मंत्री से उसे इनाम देने को कहा। जब मंत्री ने राजा से पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहे थे तो राजा ने उत्तर दिया, 'आज उसने मुझे सिखाया है कि वास्तव में प्रार्थना किस ढँग से की जाये।' एरच ने अन्त में कहा, "यह इसी तरह होना चाहिये। अगर तुम बाबा के ध्यान में लीन हो, तुम्हें किसी भी बात से बाधा नहीं पहुँचेगी। इसलिये जब तुम समाधि में होते हो, किसान की पत्नी की तरह, बाबा की याद में लीन होने की कोशिश करो।"

rM+i iSnk djks

तीर्थयात्रियों के मेहेराज़ाद से जाने के बाद, एरच कपड़े बदलकर, नीली बस के पास आराम कुर्सी में बैठ जाते थे। यह उनकी बैठने की जगह थी और मेहेराबाद के निवासी, जो एरच के साथ रहना चाहते थे, उनके चारों ओर बैठ जाते थे। एक बार, जब मैं वहाँ बैठा हुआ था, मैंने एरच से पूछा, "एरच, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर—साक्षात्कार प्राप्त करने से पहले, सद्गुरुओं में एक प्रकार की बेचैनी पैदा हो जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे उस अंतिम मिलन की खोज में, एक जगह से दूसरी जगह खिंचे चले जाते हैं। ऐसा लगता है कि उनका अपने कार्यों पर कोई

नियंत्रण नहीं होता है। उन्हें घूमने की लत पड़ जाती है जिससे वे जगह–जगह भटकते रहते हैं और असहाय होकर इसके वश में हो जाते हैं। सदगुरु रामकृष्ण, उपासनी महाराज और दूसरे सद्गुरुओं में भी यह बेचैनी पैदा हुई जिससे वे उस अन्तिम मिलन की खोज में, एक जगह से दूसरी जगह भटकते रहे। पूर्णता प्राप्त करने से पहले, इस दौर से गुज़रना क्या ज़रूरी है ? क्या सभी सद्गुरु ऐसा अनुभव करते हैं ?"

एरच ने सीधा उत्तर दिया, "हाँ।" फिर उन्होंने थोड़ी देर सोचकर आगे कहा, "तुम नहीं जानते हो कि यह बेचैनी कैसी होती है। मैं तुम्हें बताता हूँ, यह पागलपन होता है। उस व्यक्ति पर एक प्रकार का पागलपन सवार हो जाता है और वह पानी के बाहर मछली की तरह बेचैन हो जाता है। यह क्या होती है, तुम इसका अंदाज़ भी नहीं लगा सकते हो।"

एरच ने जिस उत्तेजना के साथ यह कहा, मुझे आश्चर्य हुआ। ऐसा लगता था जैसे कि उन्होंने उस बेचैनी को अनुभव किया था। वास्तव में, जब उन्होंने मुझसे कहा, "यह बेचैनी क्या होती है, तुम इसका अंदाज़ भी नहीं लगा सकते हो," मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या एरच को इसका अंदाज़ था कि यह कैसी होती थी। इसलिये मैंने उनसे स्पष्ट रूप से पूछा, "एरच, आप इस तरह बात कर रहे हैं जैसे कि आपने उस बेचैनी को अनुभव किया है। मैंने आपको कभी भी, इस ढँग से, उत्तेजनापूर्वक बात करते हुये नहीं देखा। मुझे ईमानदारी से बताइये, क्या आपने उस पागलपन और बेचैनी को अनुभव किया है ?"

एरच ने कहा, "नहीं, मैंने इसको अनुभव नहीं किया।"

मैंने पूछा, "फिर इसके बारे में जाने बिना, आप पागलपन और बेचैनी के बारे में बात कैसे कर सकते हैं ?"

एरच ने धीरे–धीरे उत्तर दिया, "मैंने फ़िल्में देखीं हैं और तुकाराम, एकनाथ और दूसरे सद्गुरुओं की जीवनियाँ पढ़ी हैं। उससे मैं अंदाज़ लगा सकता हूँ कि यह कैसी होती है।"

इससे मैं संतुष्ट नहीं हुआ और ज़ोर देकर एरच से पूछता रहा, "मुझे ऐसा लगता है कि आप मुझे सब कुछ नहीं बता रहे हैं। मुझे एक समय की याद है जब एक तीर्थयात्री ने आपकी एक फ़ोटो दिखाई थी जिसमें आप एक संन्यासी की तरह कपड़े पहने थे और आपके बाल घुटे हुये थे। उस समय आपने कहा था कि यह एक आध्यात्मिक तड़प नहीं बल्कि एक सनक थी, उस समय का एक फैशन था जिससे आपने ऐसा किया। क्या आपको याद है ?" एरच ने स्वीकार किया कि उन्हें याद है। और मैं कहता गया, "उस समय आपने पूरा सच नहीं बताया था, है न ? आपको निश्चित रूप से कुछ बेचैनी और पागलपन का अनुभव हुआ था। मुझे विश्वास है कि आपको अनुभव हुआ था।"

एरच ने यह कहते हुये विषय बदल दिया, "अरे आओ, इसे भूल जाओ। किसी दूसरे विषय पर बात करते हैं।" क्योंकि वह इसके बारे में और बात नहीं करना चाहते थे, इसलिये मैं भी चुप रहा। उन पर और दबाव डालने से कोई फायदा नहीं था। हम दूसरे विषयों पर बात करते रहे और, कुछ समय बाद, जब बात करने के लिये कुछ नहीं रहा, हम चुप हो गये। चिड़ियों की चहचहाहट के साथ मिलकर, हवा से हिलती हुई चाइम (chime) घंटियाँ एक सुरीली ध्वनि पैदा कर रहीं थीं और मैं मेहेराज़ाद की शान्ति और बाबा की उपस्थिति को अनुभव कर रहा था। मैं नहीं जानता कि मैं कितने समय तक शान्ति में डूबा रहा जब, अचानक, एरच ने कहा, "हाँ, मैंने अनुभव किया था।"

मन की उस शान्ति से बाहर आकर, पहले मेरी समझ में कुछ नहीं आया कि एरच किस बारे में बात कर रहे थे। ''आपने क्या अनुभव किया है ?'' मैंने पूछा।

एरच ने बहुत धीरे से कहा, "बेचैनी, पागलपन जिसके बारे में हम लोग पहले बात कर रहे थे।"

मैं अचानक सीधा होकर बैठ गया जैसे कि बिजली का तार छू गया हो। "क्या यह उस समय की बात है जब आप संन्यासी के वेश में रहते थे और आपने अपना सर मुड़ा रखा था ?"

एरच ने उत्तर दिया, “हाँ, यह उसी समय की बात है। मेरे अंदर अत्यंत बेचैनी और पागलपन था। जब स्कूल में लोग ईसामसीह के जीवन की घटनाओं का वर्णन करते थे, मेरी आँखों से आँसू बहते थे। मैं अक्सर राम कृष्ण मिशन में जाकर, स्वामियों के उपदेश सुना करता था। उस समय मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा था। वह सब मेरे बाबा से मिलने के पहले की बात है।”

मैंने पूछा, “बाबा से आपके मिलने के बाद क्या हुआ ? तब आपको क्या अनुभव हुआ ? बाबा के साथ बिताये गये अपने जीवन में क्या वही बेचैनी आप अभी भी महसूस करते हैं ?”

एरच ने मुँह बंद करके हँसते हुये कहा, “बाबा के साथ अपने जीवन में मैंने केवल दुख सहा और कुछ नहीं। यह मैं ईमानदारी के साथ कह सकता हूँ।”

क्योंकि एरच अब बात करने के मूड में लग रहे थे, इसलिये मैं उनसे प्रश्न पूछता रहा।

मैंने पूछा, “जब तीर्थयात्री ने इस बारे में आपसे मंडली हाल में पूछा, आपने इस बात से इन्कार क्यों कर दिया ?”

एरच ने तुरंत उत्तर दिया, “तुम जानते हो तीर्थयात्री कैसे होते हैं ? तुम उन्हें अपना अनुभव बताओ तो वे इसे बिल्कुल अलग ढँग से समझते हैं। मुझे डर था कि बहुत से तीर्थयात्री इस अनुभव की नकल करने की कोशिश करेंगे और संन्यासियों के कपड़े पहनकर, सिर मुड़ाकर इधर–उधर घूमने चले जायेगें। ऐसा करना उचित नहीं है क्योंकि यह बेचैनी के यथार्थ अनुभव की केवल नकल है। तुम जहाँ हो, वहीं रहो, तुम जो कुछ कर रहे हो, करते रहो लेकिन बाबा के लिये तड़पते रहो। जब तड़प अपनी चरम सीमा पर पहुँच जायेगी, बेचैनी और पागलपन अपने आप स्वाभाविक ढँग से आयेगा। यह यथार्थ अनुभव है। जब ऐसा होगा तुम इससे खिंचे चले जाओगे। यह नकल के झूठे अनुभव से, जो तुम चारों ओर होता हुआ देख रहे हो, बिल्कुल अलग होता है।”

एरच ने अन्त में कहा, “अपने ह्रदय में केवल वह तड़प पैदा करो, और सब कुछ स्वाभाविक ढँग से होगा।”

muds uke dh 'kfDr

एक बार मैंने एरच से पूछा, “बाबा पर मन के केन्द्रित न होने पर भी, अगर हम यांत्रिक रूप से बाबा का नाम जपें, तो क्या कुछ फ़ायदा होता है ?” उन्होंने स्वयं प्रश्न करते हुये उत्तर दिया, “क्या तुमने वाल्मीकि की कहानी सुनी है ? उन्होंने भगवान राम की जीवनी, रामायण, राम के जन्म के पहले ही लिख दी थी। वह एक सद्‌गुरु थे। क्या तुमने यह कहानी सुनी है कि वह पूर्ण कैसे हुये ?”

मैंने कहा, “मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में इसे सुना था, लेकिन मुझे इसकी केवल थोड़ी सी धुँधली–धुँधली याद है।”

एरच ने कहा, “मैं तुम्हें बताता हूँ। वाल्मीकि एक डाकू थे। वह लोगों को लूटने के बाद, उन्हें मार डालते थे और इस प्रकार अपने परिवार का भरण पोषण करते थे। यह उनका व्यवसाय था और वह ऐसा क्यों करते थे ? क्योंकि उनका परिवार था जिसके भरण पोषण की ज़िम्मेदारी उनकी थी और उन्हें केवल यही काम आता था। उन्होंने इस तरह कई सौ व्यक्ति मार डाले थे। एक दिन, एक सद्‌गुरु उस रास्ते से जा रहे थे। वाल्मीकि ने मारने के इरादे से उन्हें पकड़ लिया। सद्‌गुरु ने पूछा, ‘तुम यह सब क्यों करते हो ? इसका क्या कारण है ?’

“वाल्मीकि ने उत्तर दिया, ‘मेरा एक परिवार है जिसका मुझे भरण पोषण करना है और इस काम से मुझे जो धन मिलता है, उससे मैं उनकी देखभाल करता हूँ। मुझे केवल यही काम आता है।’

“सद्‌गुरु ने कहा, ‘किसी व्यक्ति को लूटना और मारना पाप है। क्या तुम्हारे परिवार के लोग तुम्हारे पापों के बोझ में हिस्सा बँटायेंगे ?’

“वाल्मीकि ने कहा, ‘निःसंदेह, वे लोग इसमें हिस्सा बँटायेंगे। आखिरकार, मैं यह सब उन्हीं के लिये तो कर रहा हूँ।’

"सद्गुरु ने पूछा, 'क्या तुमने उनसे पूछा है ?'

"वाल्मीकि ने कहा, 'नहीं, लेकिन मुझे विश्वास है कि वे लोग मेरा साथ देंगे। वे मेरे परिवार के जन हैं।'

"सद्गुरु ने आग्रहपूर्वक कहा, 'जाओ और उनसे पूछो।'

"वाल्मीकि ने कहा, 'मैं जानता हूँ। जब मैं उनसे पूछने जाऊँगा, तुम भाग जाओगे। तुम मुझे अपनी चाल में फँसाने की कोशिश कर रहे हो।'

"सद्गुरु ने उसे शान्तिपूर्वक आश्वस्त किया, 'मैं नहीं भागूँगा, लेकिन अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है तो तुम मुझे बाँध दो।'

"वाल्मीकि को यह बात ठीक लगी। उसने सद्गुरु को बाँध दिया और अपने घर गया। उसने अपनी पत्नी और बच्चों को अपने व्यवसाय के बारे में बताया और यह भी बताया कि जो धन वह उन्हें देता था, वह किस तरह कमाता था। अन्त में, उसने उनसे पूछा कि क्या वे उसके इस पाप में हिस्सा लेंगे। जब उसके परिवार के सभी लोगों ने उसके पाप में हिस्सा बँटाने से इनकार कर दिया तो उसे गहरा धक्का लगा और वह अपने पापों के बोझ से व्याकुल हो गया। उसने सद्गुरु के पास वापस जाकर, उनसे क्षमा माँगी। उसने सद्गुरु से प्रार्थना की कि वह उसे मुक्ति का मार्ग दिखायें क्योंकि वह अपने पापों के लिये किसी भी तरह की तपस्या करने के लिये तैयार था।

"सद्गुरु ने उसे एक स्थान पर बिना हिले डुले बैठकर, ईश्वर का नाम, 'राम, राम' जपने के लिये कहा।"

एरच ने अपनी कहानी को बीच में रोककर कहा, "ध्यान दो, यह बात राम के जन्म के पहले की है। शास्त्रों में ईश्वर के नामों में से एक नाम, राम था और गुरु ने उससे ईश्वर का नाम, राम, जपने को कहा। वाल्मीकि ने कहा, 'मैं ईश्वर का नाम नहीं जपूँगा।' इस पर गुरु ने कहा, 'ठीक है, तब तुम 'मरा, मरा' कहो।' एरच ने बताया कि हिन्दी में मरा का अर्थ मर गया होता है।

"वाल्मीकि ने यह बात मान ली। डाकू होने के कारण, उसने इतने अधिक लोगों को मारा था कि 'मरा, मरा' दोहराने में उसे कोई परेशानी नहीं थी। इसलिये वह एक ही स्थान पर, सालों बैठकर 'मरा, मरा, मरा' जपता रहा। तुम जानते हो कि जब किसी चीज़ को बार–बार दोहराते हैं तो कैसा होता है? समय के साथ, 'मरा' 'राम' हो गया और, अनजाने में वाल्मीकि 'राम राम' कह रहे थे।

"वह एक जगह पर बैठकर, सालों ईश्वर का नाम जपते रहे और उन्हें ईश्वर–साक्षात्कार प्राप्त हो गया। यह उनके नाम की शक्ति है–भले ही तुम इसे यांत्रिक रूप से जपो। तुम लक्ष्य तक पहुँच जाओगे लेकिन प्रयास और तड़प ईमानदारी से होना चाहिये। वाल्मीकि ने जो किया, अगर तुम वह कर सको तो फिर तुम्हें और अधिक कुछ भी नहीं करना है। तुम्हें लक्ष्य तक पहुँचने की चिन्ता नहीं करना है, लक्ष्य तुम तक पहुँचेगा। अपने हृदय में तड़प पैदा करो।

"हमारे हृदय बहुत सी चाहतों और इच्छाओं से भरे हुये हैं इसलिये हमारे हृदयों में बाबा के लिये जगह नहीं बची है। इन सब बेकार की इच्छाओं का त्याग कर दो। जब तुम इच्छाओं का त्याग करके अपने हृदय में बाबा के लिये और अधिक स्थान बनाते हो तब तुम उनकी उपस्थिति को अधिक और अधिक अनुभव करने लगते हो। जब तुम हर चीज़ का त्याग करने में सफल हो जाते हो और तुम्हारे हृदय में केवल ईश्वर से मिलन के लिये तड़प रह जाती है, विश्वास रखो, वह (ईश्वर) तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आयेगा। इसमें बिल्कुल संदेह न करो। वह तुमसे मिलने के लिये अधिक बेचैन है। यह हम लोग हैं जो तैयार नहीं है। तड़प ही केवल ऐसी चीज़ है जो उन्हें तुम्हारे पास खींचकर ला सकती है।"

mldk uke :ikUrfjr dj nrk g!

कभी–कभी, संतों अथवा सद्गुरुओं के बारे में एरच द्वारा सुनाई गई कहानियों का मैं, व्यक्तिगत रूप से प्रासंगिक न होने के रूप में, कम मूल्यांकन करता था। वाल्मीकि ने निरंतर "मरा" जप कर ईश्वर साक्षात्कार

प्राप्त कर लिया था तो इससे क्या फ़र्क पड़ता है। ईश्वर का नाम जपकर मेरे पूर्ण होने की संभावनायें सोचने में भी बहुत दूर लगती थीं। उनकी बात को गंभीरता से न लेने के हमारे स्वभाव को समझते हुये, एरच रिक चैपमैन से अक्सर निम्नलिखित कहानी सुनाने के लिये कहते थे ताकि हम ईश्वर के नाम के पीछे की शक्ति को कुछ–कुछ समझ सकें।

एक सद्‌गुरु अपने प्रवचनों में एक ही बात पर ज़ोर देते थे, "ईश्वर का नाम जपो और तुम ईश्वर बन जाओगे।" वह जहाँ कहीं गये, जब कभी उन्होंने प्रवचन दिया, हमेशा यही बात कही, "ईश्वर का नाम जपो और तुम ईश्वर बन जाओगे।"

एक दिन एक बड़ी सार्वजनिक सभा में संत अपना यही संदेश दे रहे थे। उसी समय भीड़ में से एक आदमी ने खड़े होकर कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि आप ऐसा कैसे कह सकते हैं। इसमें कोई बुद्धिमानी नहीं लगती। ईश्वर का नाम जपो और तुम ईश्वर बन जाओगे ? क्या आपके कहने का यह अर्थ है कि अगर मैं बार–बार 'रोटी, रोटी' कहूँगा तो मैं रोटी बन जाऊँगा ? यह तो बिल्कुल बेवकूफ़ी की बात है।"

उस व्यक्ति के बीच में बोलने से गुरु बिल्कुल भी उद्विग्न नहीं हुये और वहाँ पर मौजूद लोगों को उपदेश देते रहे कि वे लगातार ईश्वर का नाम जपें और ईश्वर बन जायें। यथार्थ में, उन्होंने उस व्यक्ति की बात पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया। इससे वह व्यक्ति उत्तेजित हो गया और चिल्लाकर बोला, "अगर आप अपने आपको गुरु कहते हैं तो आप मेरे प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं देते हैं ?"

गुरु ने उस व्यक्ति की ओर मुड़कर, उसे ज़ोर से डाँटते हुये कहा, "बैठ जाओ, हरामज़ादे ?" और फिर वह उपदेश देने लगे। उस व्यक्ति को इससे ऐसा मानसिक आघात लगा कि वह स्तंभित रह गया और कुर्सी पर गिरकर थोड़ी देर शान्त रहा। कुछ समय बाद, जब मानसिक आघात ख़त्म हुआ, वह व्यक्ति गुस्से से आगबबूला हो गया। इसके पहले, गुरु ने उसके प्रश्न की उपेक्षा की थी, लेकिन अब उसकी सार्वजनिक रूप से बेइज्ज़ती की गई थी; और जितना अधिक वह इस बारे में सोचता था, उतना अधिक

उसका गुस्सा बढ़ता जाता था। उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया, साँस जल्दी–जल्दी चलने लगी और अनजाने में उसके हाथों की मुट्ठियाँ बंद होकर घूँसे के रूप में परिवर्तित हो गई और वह वहाँ अपने गुस्से के कारण काँपता हुआ खड़ा हो गया।

गुरु ने अब उसकी ओर मुड़कर कहा, "हाँ, क्या कुछ गड़बड़ है ? क्या तुम किसी बात से परेशान हो ?"

वह मनुष्य चिल्लाते हुये बोला, "परेशान ? आपकी यह कहने की हिम्मत कैसे हुई ? आपने जो कुछ किया, उसके लिये आपको मुझसे क्षमा माँगनी होगी।"

गुरु ने भोलेपन के साथ पूछा, "मैंने क्या किया है ?"

उस व्यक्ति ने कहा, "आपने मुझे एक गंदी गाली दी हैं।"

गुरु ने कहा, "अच्छा, तो यह बात है ? ज़रा इस बारे में सोचो। मैंने तुम्हें एक नाम से पुकारा, और उस शब्द की शक्ति इतनी अधिक थी कि इसे केवल एक बार सुनकर, कुछ ही क्षणों में इसने तुम्हें पूरी तरह से बदल दिया है। अगर तुम्हारे बारे में एक साधारण गाली को एक बार कहने का इतना गहरा असर होता है तो ज़रा सोचो, तुम्हारे द्वारा ईश्वर का नाम बार–बार लम्बे समय तक जपने का क्या असर होगा? क्या अब तुम्हारी समझ में आया कि मैं हमेशा बार–बार यह क्यों दोहराता हूँ, 'ईश्वर का नाम जपो और ईश्वर बन जाओ।'"

mi lgkj

पिछले दशक में मैंने जो भी दर्द और कष्ट सहा, उससे मेरे जीवन में जो भी मोड़ आया है, मुझे इसका ज़रा सा भी पछतावा नहीं है। इस कष्ट ने एक कुंजी का काम किया है जिसने ईश्वर की याद के एक धनी आन्तरिक जीवन के, जो हमेशा ताज़ा और स्पन्दनशील है, ताले को खोल दिया है। जब मंडली जन हमसे उनका (बाबा का) बनने की अथवा हर समय उनकी याद में रहने की, बात करते थे अथवा उनका नाम जपने के

लिये हमारे ऊपर दबाव डालते थे, हम अक्सर यह सोचते थे कि वे, जैसा कि एरच कहते थे, "सिर्फ शब्दों को हमारे ऊपर फेंक रहे थे।" लेकिन मैं यहाँ एक बार फिर से यह बात स्पष्ट रूप से बता देना चाहता हूँ कि यह सच नहीं है। वे लोग मात्र एक तुच्छ अथवा अर्थहीन आध्यात्मिक सलाह, जो हमारे विचार से साधारण थी और उससे हमें कोई मदद नहीं मिलने वाली थी, ही नहीं दे रहे थे बल्कि वास्तव में वे हमें अपने स्वयं के अनुभव से, ईश्वर की ओर जाने वाला सबसे अधिक सीधा मार्ग दिखा रहे थे। यह इतना अधिक साधारण प्रतीत होता है कि हमें इसके सच होने पर विश्वास नहीं होता। और, यह सरल है फिर भी इतना आसान नहीं है, क्योंकि कोई व्यक्ति उसी सीमा तक ईश्वर की याद कर पाता है जहाँ तक वह अपने आपको भूल पाता है। मैं किसी भी तरह की आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त करने का दावा नहीं करता हूँ। और मंडली जनों की तुलना में, मेरे द्वारा की गई बाबा की याद; कल्पना के दायरे में आने वाली सबसे कम मात्रा में होनी चाहिये, और फिर भी उस सबसे कम मात्रा ने मेरे जीवन को एक ऐसी खुशी से भर दिया है जिसका अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया। उनकी याद से होने वाली इस खुशी में कोई बाधा पड़े बिना, सबसे अधिक कष्टदायक क्षणों के अलावा मैं और सब कुछ सह सकता हूँ और मुझे आशा है कि अन्ततः कोई भी चीज़ मेरे इस आनन्द में बाधा नहीं पहुँचा सकेगी।

"अगर प्रियतम बाबा, मुझे अपनी जीवन गाथा, अपनी इच्छा के अनुसार लिखने की छूट दें तो मैं इसे उसी तरह लिखूँगा जैसी उन्होंने लिखी। मैं पूरी की पूरी जीवन गाथा, एक बार फिर से, ठीक उसी तरह से, जिस तरह सारी घटनायें हुईं, लिखूँगा। प्रियतम बाबा ने जो कुछ लिखा, वह मेरे लिये केवल सबसे अच्छा ही नहीं था बल्कि उन्होंने मुझे जो कुछ दिया–यथार्थ में सबसे अच्छा–असली खज़ाना–दिया।

• • •

"यह सच है कि मैं अपने प्रेमियों को मुक्त करने के लिये, प्रतिदिन के जीवन की परिस्थितियों का इस्तेमाल करता हूँ, लेकिन मैं उनका इस्तेमाल इस ढँग से करता हूँ जो बुद्धि की समझ के परे है। इसलिये मैं अपनी व्यक्तिगत अथवा विश्वव्यापी योजनाओं की रूपरेखायें तुम्हें बताऊँ, मुझसे तुम्हें ऐसी आशा नहीं करना चाहिये। मुझमें विश्वास रखो, अटल विश्वास रखो। मैं तुम्हारे साथ हमेशा हूँ और तुम्हें, मेरी अपनी गाड़ी, मेरे अपने पुत्र की तरह रास्ता दिखाता हूँ।

वह सबकुछ, जो तुम करते हो अथवा नहीं करते हो, हमेशा मेरी मर्ज़ी से होता है। तुम मेरे दैवी आर्केस्ट्रा (वाद्ययंत्र बजाने वालों का एक समूह) के एक यन्त्र हो, एक ऐसा यंत्र, जिसकी मुझे जरूरत है लेकिन जिसे सुधारना, पूर्ण बनाना ज़रूरी है। मैं तुम्हें कभी भी धोखा नहीं दूँगा, न ही तुम मुझे निराश करोगे। हमेशा की तरह तुम्हें साहसी बने रहना है।"

अवतार मेहेर बाबा

(संदर्भ–लॉर्ड मेहेर, भाग ६, पृष्ठ २१२०, दी टर्निंग ऑफ दी की, पृष्ठ ३१५, लार्ड मेहेर, भाग ६, ७, पृष्ठ २१४१)

रुस्तम फ़लाहाटी ने, जो व्यवसाय से समुद्रीय अभियन्ता **(Marine Engineer)** थे, अवतार मेहेरबाबा की मंडली के साथ रहने और उनके साथ काम करने का अवसर मिलने के कारण, अपनी नौकरी छोड़ दी। वह उनके साथ १९८६ से २००० तक रहे।

इस पुस्तक में लेखक ने अपने इस अनुभव का वर्णन किया है कि उन्होंने मंडली के संदेशों का अपने जीवन में किस प्रकार प्रयोग किया और इससे उन्हें बाबा की याद को अपने दैनिक जीवन का एक सम्पूर्ण और महत्वपूर्ण हिस्सा बनाने में किस प्रकार सहायता मिली।

Message from the Mandali

Rustom Falahati, who has suffered physically in his short lifetime, has written this account of his life and experience of living with Avatar Meher Baba's Mandali. The stories, he tells of his love and faith in Beloved Meher Baba are an inspiration to all who read it. It is heartwarming and touching book which, I hope, will bring many closer to Meher Baba.

10th September 2008 — **Katie R. Irani**
Meherazad

***

eMyh dk lns'k

रुस्तम फ़लाहाटी ने, जिन्होंने अपने थोड़े से जीवन काल में भयंकर शारीरिक कष्ट सहा है, इस पुस्तक में अवतार मेहेरबाबा की मंडली के साथ अपने जीवन और अनुभवों का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने प्रियतम मेहेरबाबा के प्रति अपने प्रेम और विश्वास की जिन कहानियों का वर्णन किया है, वे उन लोगों को प्रेरणा देने वाली हैं जो इन्हें पढ़ते हैं। यह एक हृदय को छूने वाली, मार्मिक पुस्तक है और मुझे आशा है कि यह बहुत से लोगों को मेहेरबाबा के और अधिक पास लायेगी।

१० सितम्बर, २००८ — **केटी आर. ईरानी**
मेहेराज़ाद

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें :
रुस्तम बी० फ़लाहाटी
सी/२०१, किशान्त बिल्डिंग,
गन पाउडर रोड, मझगाँव **Mazagoan**
मुंबई–४०००१०
फ़ोन (०२२)–२३७७६३१३, (०२२) २३७५५६०६
ई–मेल : **yougoicome@rediffmail.com**